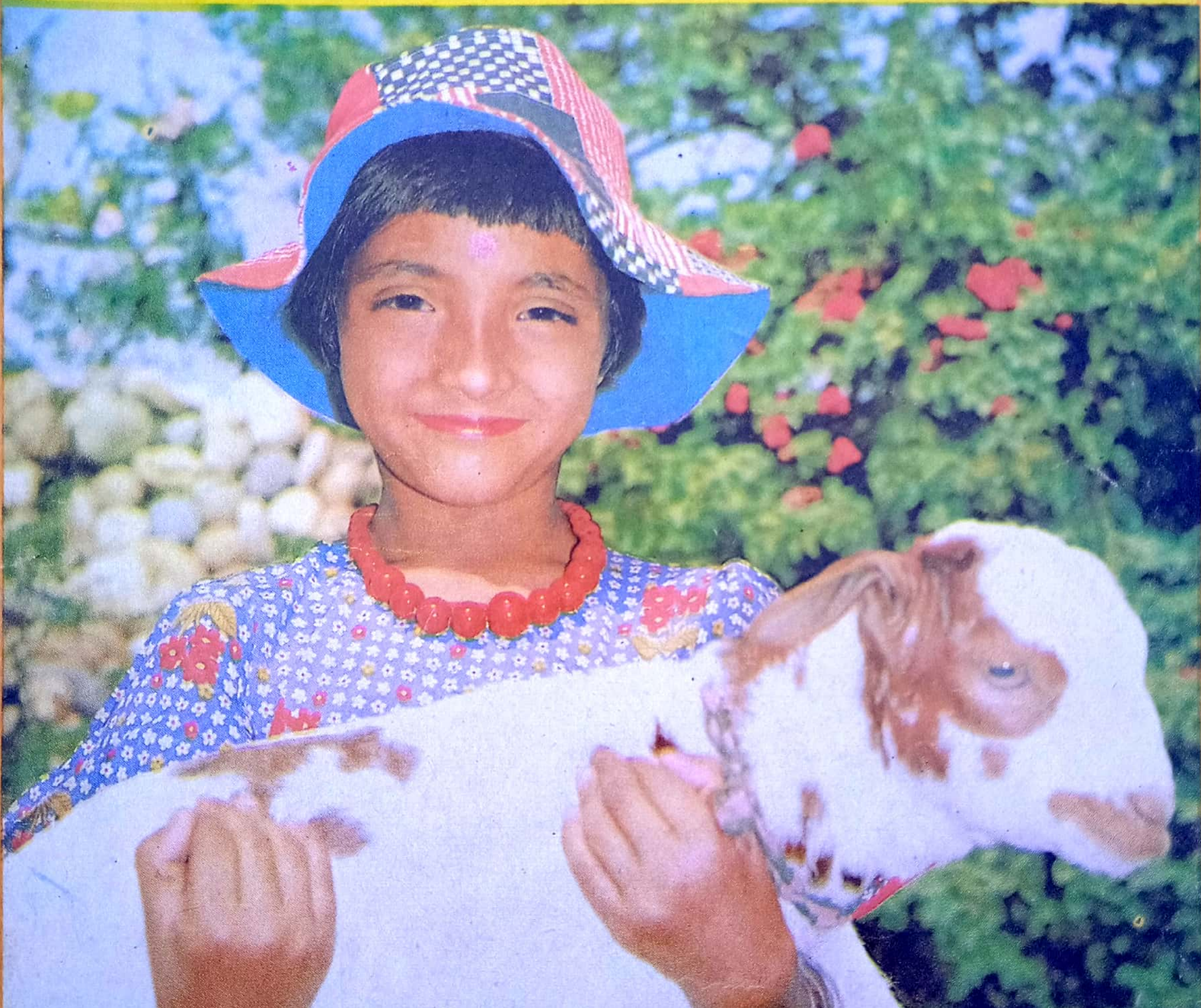
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



४ रुपए

अक्तूबर '८९



नये डायमंड कॉमिक्स में
पेश करते हैं
कार्टूनिस्ट प्राण का
प्राण।
चाचा चौधरी और हाईवे के लुटेरे
मामा भांजा और चतुर बनिया
डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट
ताऊ जी
डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट में
महाबली शाका और नशे के गुलाम
प्राण।
पलटू और बंटू नीरो
चाचा भतीजा और सिंह मानव
लम्बू-मोटू और गुप्त मिशन
अंकुर और चालाक चौकीदार
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :-
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित–यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।
नाम
पिता का नाम
जिला
पता
डाकखाना
डायमंड कॉमिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

पत्र मिला

☐ अगस्त अंक में पहले 'नंदन बाल समाचार' पढ़ा । सबसे अच्छा स्तम्भ मुझे 'पत्र-मित्र' लगता है । इसके द्वारा नए-नए दोस्त बनाने का मौका मिलता है । खिलाड़ियों के बारे में भी चित्र-कथा छापें । **—विमानकुमार, नारायणगढ़, नेपाल**

☐ 'सिर पर धरती' अद्भुत कथा थी । 'विश्व की महान कृतियों' के अंतर्गत हमेशा ही उत्तम रचनाएं छपतीं हैं । चित्र-कथा 'वंदे मातरम्' और 'चीटू-नीटू' बहुत पसंद आए । रंगीन छवि 'सौ मीनारों के नगर में' देखकर मन झूम उठा ।

—पुष्येंद्र कौशिक, जबलपुर

☐ अगस्त का मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगा । पत्रिका हमें मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान की रोचक जानकारी भी प्रदान करती है ।

—विनय, डूंगरपुर (राज.)

☐ जैसे धूप के साथ छांव, दिन के साथ रात, वैसे ही मेरा साथ 'नंदन' के साथ है ।

—मंजुलकुमार श्रीवास्तव, सतना

☐ कविता प्रतियोगिता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । 'वंदे मातरम्' चित्र-कथा पढ़कर हमें देश के लिए बलिदान करने की शक्ति मिली ।

—प्राणशंकर देवता, रामपुर कोलिअरी (उड़ीसा)

☐ 'चीटू-नीटू' ने हमेशा की तरह खूब हंसाया । 'आओ बात करें', हमें अच्छे काम करने की प्रेरणा देता है । पत्रिका का हर अंक संग्रह के योग्य होता है ।

—सुरेंद्र पटेल, दलीपपुर

☐ 'नए कपड़े', 'नहीं खाऊंगा', 'सागर की बेटी' तथा 'राजा का बाग' कहानियां अच्छी लगीं । 'आओ बात करें' भी रोचक था । 'चित्र-कथा' पढ़कर मन मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर करनेवाले वीरों के प्रति गौरव से भर उठा । मुझे रोज 'नंदन' पढ़ने की आदत हो गई है ।

—नारायणदास मेघवानी, उज्जैन

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : मुन्ना, डेहरी आन सोन, जगत सिंह, हलद्वानी, जितेंद्रकुमार मौर्य, पलवल ।

खेल-खेल में सीखो जादू, खेल साइंस के खेलो
ज्ञान बढ़ाओ, रोब जमाओ, मित्रों में यश ले लो



101 मैजिक ट्रिक्स

लेखक: आइवर यूशिएल

इस सचित्र पुस्तक में दी गई हैं—ऐसी 101 शानदार व ज़ानदार ट्रिक्स, जिनका समझना जितना सरल है, उनका प्रदर्शन उससे भी आसान! बस! जरूरत है तो थोड़े से अभ्यास के साथ चन्द ऐसी चीजों की, जो तुम्हें आसानी से उपलब्ध हो जाएंगी। जैसे: *ताश, रूमाल, गिलास, सिक्के, पेपर-स्ट्रॉ आदि....*

ट्रिक्स की एक झलक: ■ *टूटी माला फिर तैयार* ■ *गिलास का पानी गायब करना* ■ *रूमाल आग से न जले* ■ *सर पर रखा हैट स्वयं उछले आदि....*

101 साइंस गेम्स

विज्ञान के 101 खेलों की यह पुस्तक खेल-खेल में कुछ ऐसे उपकरण बनाना सिखा देती है, जो बनेंगे तो खिलौने ही लेकिन असली उपकरण का-सा आनंद देंगे। जैसे—**बैरोमीटर, विद्युत-चुम्बक, हैक्टोग्राफ, स्टीम टरबाइन, इलेक्ट्रोस्कोप, पेरिस्कोप आदि....**

इनके अलावा बहुत से रोचक प्रयोग जैसे—***कागज के बर्तन में पानी उबालना, भाप से नाव चलाना आदि....***

101 साइंस एक्सपेरिमेंट्स

नन्हे वैज्ञानिकों के लिए लिखी गई एक ऐसी पुस्तक—जो सरल व रोचक प्रयोगों द्वारा विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को समझने में निश्चित रूप से मदद देगी।

प्रयोगों की एक झलक:—

- ★ ***कैसे चल पाते हैं जल-सतह पर कीट?***
- ★ ***नहाने के बाद क्यों लगती है ठंड?***
- ★ ***कमरे में बैठ नापो सितारों की दूरी!***
- ★ ***कैसे खींचता है कैमरा तस्वीर?***

इसके साथ ही वर्षामापी, सूक्ष्मदर्शी, डायनेमो आदि अनेक उपकरण बनाने की सचित्र विधियां।

मूल्य: 18/- प्रत्येक डाकखर्च: 4/- प्रत्येक *English editions also available.*

---

101 दिमागी कसरतें

—हरीश चंद्र संसी

सिर को खुजलाने के लिए विवश कर देने वाली ऐसी पहेलीनुमा चुनौतियां, जिनको हल करने की कोशिश में जहां एक ओर आपका मनोरंजन होगा वहीं दूसरी ओर आपका दिमाग भी तेज होगा। बच्चों, जवानों तथा बूढ़ों—सभी के लिए एक से एक मजेदार 101 रोचक दिमागी कसरतें।

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/-



चिल्ड्रन्स ट्रिक्स एण्ड स्टंट्स

—शीला एन् बेरी

इस सचित्र पुस्तक में तुम पाओगे......

- **ऐसी कुर्सी**, तुम नहीं उठा सकोगे!
- **ऐसा गुब्बारा**, तुम नहीं फोड़ सकोगे!
- **अदृश्य मानव**, जो तुम्हारी आंखों के सामने से गायब हो जाएगा!
- **अंगुली**, जो हवा में तैरेगी!

तुम्हारे दोस्तों को चकरा देने वाली—रहस्यमय, आश्चर्यजनक—लेकिन करने में आसान 70 ऐसी ही अन्य ट्रिक्स।

मूल्य: 12/- डाकखर्च: 3/- *Also available in English.*

अपने निकट के या रेलवे तथा बस-अड्डों पर स्थित बुक-स्टॉलों पर मांग करें। न मिलने पर वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते:—

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

शोरूम: 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

VAN/PM/77/89

आओ बात करें

नौशेरवां बड़े प्रसिद्ध बादशाह हुए हैं। वह प्रजा से बहुत प्यार करते थे। सदा सही न्याय करते, पर उनके कर्मचारी अच्छे न थे। वे गुप-चुप रिश्वत लेते। हर तरह की बुराइयां उनमें थीं।

धीरे-धीरे सारे राज्य में बेईमानी और भ्रष्टाचार बढ़ता गया। नौशेरवां को आए दिन राज कर्मचारियों की करतूतों के बारे में सूचनाएं मिलतीं।

एक दिन नौशेरवां अपने गुरु के पास गए। अकेले में उनसे मिले। राज्य के हालात की जानकारी गुरु जी को दी। अंत में बोले— ''गुरु महाराज, मुझे बताइए, राज्य से भ्रष्टाचार कैसे मिटे ? कोई उपाय सुझाइए !''

गुरु ने कहा— ''उपाय तो है और आसान भी है। पर पहले मन पक्का कर लो कि तुम ईमानदारी से भ्रष्टाचार मिटाना चाहते हो।''

नौशेरवां तो वहां इसीलिए आए थे। बोले— ''मैं हर उपाय करने को तैयार हूं। आप आज्ञा दीजिए। राज्य से भ्रष्टाचार मिट जाए, तो जो आप कहें, खुशी-खुशी करने को तैयार हूं।''

गुरु ने कहा— ''बस, आप एक दिन के लिए सिंहासन और राजदंड मुझे दे दो— केवल एक दिन के लिए ही। मैं भ्रष्टाचार खत्म कर दूंगा।''

नौशेरवां बिना किसी ना-नुच के बोले— ''मैं ऐसा करने को बिलकुल तैयार हूं।''

गुरु जी ने बात पक्की करते हुए कहा— ''लेकिन उस दिन आप मेरे किसी काम में दखल नहीं देंगे। मैं जो चाहूंगा, वही करूंगा।''

नौशेरवां ने सोचा— 'चलो, गुरु जी की बात की परीक्षा हो जाए। एक ही दिन के लिए तो गद्दी सौंपनी है।' उन्होंने गुरु जी की बात मान ली।

अगले दिन गुरु जी सिंहासन पर विराज गए। उन्होंने तुरंत हुक्म दिया— ''सारे राज्य में मुनादी की जाए कि जिस-जिस को जो भी शिकायत हो, वह उसे लिख ले। महल के द्वार पर रखे ड्रम में अत्याचार, भ्रष्टाचार की शिकायतें आज शाम तक डाल दी जाएं।''

हुक्म बादशाह का–सारे राज्य में मुनादी हो गई। इधर मुनादी होनी थी, उधर शिकायतों का तांता लग गया। शाम तक पूरा ड्रम ऊपर तक भर गया।

समय समाप्त हो गया। गुरु जी राजदंड सम्हाले हुए वहां आए। ड्रम में जो शिकायत सबसे ऊपर थी, उसे उठाया। सिपाहियों को आदेश दिया— 'जिसके विरुद्ध यह शिकायत है, उसे तुरंत पकड़कर लाओ। गधे पर बैठाकर शहर में घुमाओ। कल सवेरे उसे सूली पर लटका देना।'

इसके बाद गुरु जी ने राजा से कहा— ''यह सम्हालो राजदंड। मेरा काम पूरा हो गया। मैं अपनी कुटिया में चला।''

बादशाह नौशेरवां कुछ समझे, कुछ नहीं समझे। बोले— ''गुरु जी, यह तो एक शिकायत का निपटारा हुआ। और भी तो हजारों शिकायतें आई हैं। एक शिकायत दूर करने से पूरे राज्य की बुराई कैसे मिट जाएगी ?''

गुरु जी ने कहा— ''इस एक ही अपराधी को दंड देने से भ्रष्टाचार मिट जाएगा। दूसरे अपराधी को दंड देने की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

वह कौन था, जिसे गुरु जी ने सजा देने का हुक्म दिया था। वह था शहजादा, नौशेरवां का अपना बेटा।

कानून सबके लिए एक-सा हो, न्याय तभी होता है। तभी सब सुखी रह सकते हैं।

अगला अंक वार्षिक विशेषांक होगा। उसमें अधिक पृष्ठ और तरह-तरह की रोचक सामग्री रहेगी। अंक मिल सके, अभी से सुरक्षित करा लें।

तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

कहां क्या

नंदन अक्तूबर'८९

वर्ष:२५ अंक:१२

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहानियां

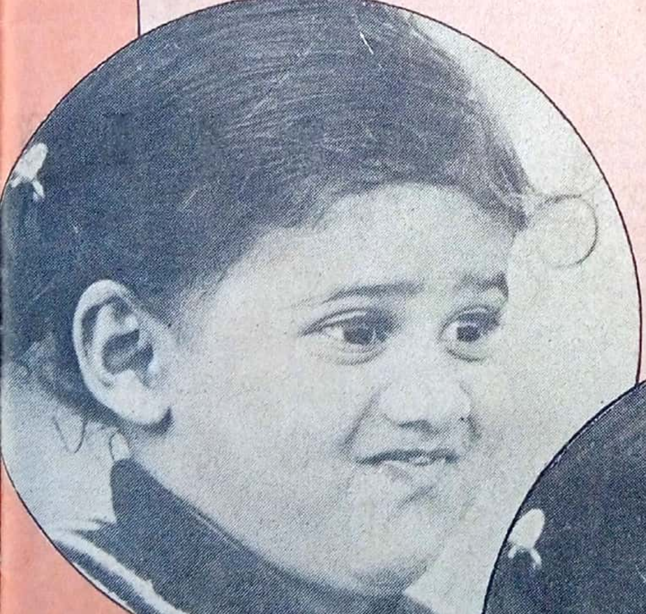
कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : मंजुला **एलबम : विजय शर्मा**

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्र कुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन









राजकुमारी का तीर

—उपासना टिक्कू

पुरानी बात है। पुरुषोत्तम राय नामक एक राजा थे। उनका न्याय दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। उनकी मान-प्रतिष्ठा पड़ोसी राज्यों में भी थी। प्रजा इन्हीं गुणों के कारण अपने राजा को बहुत चाहती थी।

राजा पुरुषोत्तम राय की रानी सुलोचना भी बड़ी धार्मिक थी। रानी होते हुए भी सुलोचना बड़े सीधे-सादे ढंग से रहती थी। प्रजा के बीच जाती। नगर की महिलाओं से मिलती-जुलती, उनका दुःख दर्द बांटती।करीब एक वर्ष बाद रानी ने एक पुत्री को जन्म दिया। आश्चर्य था— पुत्री पैदा हुई, तो चारों ओर एक अनोखा प्रकाश फैल गया, जैसे उस प्रकाश से चारों दिशाएं जगमगा उठीं। उसे देखकर राजा-रानी चकित रह गए। राजकुमारी थी भी बहुत सुंदर। स्वर्ग की अप्सरा जैसा रूप था उसका। ज्योतिषियों ने उसकी भाग्य रेखा को देखकर उसका नाम रूपमति रखा। राजकुमारी शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की तरह बढ़ने लगी। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसका सौंदर्य और भी खिलता जा रहा था। रानी की तरह रूपमति भी धार्मिक विचारों वाली तथा स्वभाव से बड़ी विनम्र थी।

राजा पुरुषोत्तम राय ने अपनी पुत्री की शिक्षा के लिए एक गुरु को नियुक्त किया। गुरु ने राजकुमारी को हर विद्या में पारंगत बना दिया। धनुर्विद्या में तो उसका कोई मुकाबला ही नहीं था। राजकुमारी भी अपने गुरु का बड़ा आदर करती थी। राजकुमारी रूपमति को शिकार का बड़ा शौक था। एक दिन राजकुमारी शिकार के लिए जंगल में गई, तो शाम तक उसे कोई शिकार न मिला। शिकार की खोज करती-करती वह जंगल में दूर तक चली गई। वह अपनी सखियों से काफी आगे निकल गई। शाम ढल चुकी थी, जब राजकुमारी लौटने लगी, तो उसे किसी का स्वर सुनाई दिया। उसने आवाज की दिशा में बाण चला दिया।

तभी उसने किसी मनुष्य का कराहता हुआ स्वर सुना— 'मैं मर गया।' राजकुमारी ने अपना घोड़ा उसी दिशा में मोड़ा, तो वहां उसने एक भील को मरा हुआ पाया। अब तक वहां कई भील इकट्ठे हो गए थे। भील की पत्नी भी मृतक पति को देखकर दहाड़ मार-मारकर रो रही थी।

दूसरे दिन उस भील की हत्या की खबर राजा को दी गई। भील की पत्नी ने राजा के पास जाकर कहा— "महाराज, आपका न्याय सारे जगत में विख्यात है। क्या आज आप मुझे न्याय देंगे ?" इतना कहकर वह विलाप करने लगी।

राजा यह सुनकर बड़े हैरान हुए। उन्होंने कहा— "हां, हां, तुम्हें न्याय मिलेगा। बोलो, किसने मारा है इस निरपराध प्राणी को ? उसे इसकी सजा अवश्य मिलेगी।"

भील की पत्नी ने रोते हुए कहा— "क्या आप सच कह रहे हैं, महाराज ! क्या उसे इस अपराध का दंड मिलेगा ?"

राजा ने कहा— "हां, अवश्य मिलेगा। तुम बिना किसी डर के उस अपराधी का नाम बताओ।"

भील की पत्नी ने कहा— "महाराज, अपराधी राजकुमारी है। उसी ने मेरे पति को मारा है।"

यह सुनना था कि राजा के पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था, उनकी इकलौती पुत्री किसी की अकारण हत्या करेगी। फिर भी वह बोले— "क्या, तुम सच कह रही हो ? क्या राजकुमारी ने ही इसकी हत्या की है ?"

उस स्त्री ने कहा— "हां, महाराज ! राजकुमारी के तीर ने मेरे पति को मारा है। मेरे साथ आए इन लोगों ने यह कांड अपनी आंखों से देखा है।" राजा ने जब उन सबकी ओर देखा, तो उन्होंने हां में सिर नीचे झुका लिए। राजा ने आज्ञा दी —"राजकुमारी को यहां उपस्थित किया जाए।" दासियों ने आकर कहा— "महाराज, राजकुमारी जी कल की गई, अभी



तक वापस नहीं आई हैं।" राजा ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि राजकुमारी को ढूंढ़कर दरबार में उपस्थित किया जाए।

दो दिन हो गए, लेकिन राजकुमारी नहीं मिली। तीसरे दिन राजकुमारी स्वयं दरबार में आई। राजा ने पूछा— "क्या तुमने इस भील की हत्या की है ?"

राजकुमारी ने हां में सिर हिला दिया। राजा ने फिर प्रश्न किया— "तुमने इस निरपराध व्यक्ति की जान क्यों ली ?"

राजकुमारी ने कहा— "महाराज, मैंने इसे जानबूझकर नहीं मारा। जब मैं शाम को शिकार से वापस आने लगी, तो मुझे किसी का स्वर सुनाई दिया। मैंने सोचा, शायद कोई जंगली जानवर पानी पीने आया है। बस, मैंने उस दिशा में बाण चला दिया।"

राजा ने कहा— "चाहे तुमने जान-बूझकर इसे नहीं मारा है, लेकिन फिर भी तुमने हत्या की है। किसी की हत्या का दंड मृत्युदंड है। तुम्हें भी मृत्युदंड ही मिलेगा।"

राजकुमारी ने कहा— "महाराज, यह आप क्या कह रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि मैं आपकी इकलौती पुत्री हूं।"

राजा ने कहा— "मैं जानता हूं कि मैं तुम्हारा पिता हूं। और यह भी जानता हूं कि तुम मेरी इकलौती पुत्री हो, लेकिन पिता होते हुए, मैं राजा भी हूं। राजा का न तो कोई मित्र होता है और न ही शत्रु। इस न्याय सिंहासन पर बैठकर मैं राजा के रूप में तुम्हें मृत्युदंड देता हूं। कल प्रातः तुम्हें फांसी दी जाएगी।"

अगली सुबह जब राजकुमारी को फांसी मिलनी थी, तो वहां हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। राजा-रानी भी वहां आए थे। जैसे ही राजा ने राजकुमारी को फांसी देने का इशारा किया, तो राजकुमारी उड़कर आकाश में चली गई। वहां उपस्थित जन यह देखकर बहुत हैरान हुए। राजा-रानी भी हैरत में पड़ गए। राजा ने पूछा— "कौन हो तुम ?"

तब रूपमति ने उत्तर दिया— "राजन, मैं स्वर्ग की देवी हूं। तुम्हारे न्याय की चर्चा सुनकर ही मैंने तुम्हारी परीक्षा हेतु, तुम्हारे घर पुत्री के रूप में जन्म लिया। मैं प्रसन्न हूं कि तुम अपनी परीक्षा में सफल हुए। मांगो, कोई भी मनचाहा वर मांग लो।"

राजा ने कहा— "देवी, आप मुझ पर प्रसन्न हैं, इससे बढ़कर मुझे क्या चाहिए। फिर भी यदि आप कुछ देना चाहती हैं, तो भील को जीवित कर दीजिए। पति के शोक में उसकी पत्नी की क्या दशा हो गई है। इस पर कृपा करें देवी !"

देवी ने कहा— "राजन, तुम न्यायकारी तो हो ही, साथ ही साथ दयालु भी। तुमने अपने लिए कुछ न मांगकर जनहित की बात ही सोची। मैं भील को अवश्य जीवित करूंगी। साथ ही तुम्हें एक पुत्र का वरदान भी देती हूं। वह पुत्र तुम्हारी तरह न्यायकारी और दयालु होगा।" इतना कहकर स्वर्ग की वह देवी अंतर्धान हो गई। देवी की कृपा से भील भी जीवित हो गया। यह देखकर सभी प्रसन्न हो उठे। ●



इस अंक में पृष्ठ २३ पर प्रकाशित चित्र मंदिर के गीता भवन में स्थित भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति का है— भगवान विष्णु का नहीं।



न एलबम : ६९

विजयादशमी के अवसर पर

श्रीराम-सीता और लक्ष्मण



ताटका गरजी

चन्द्रदत्त 'इन्दु'

महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ में राक्षस बाधाएं डालते थे। राक्षसों के आतंक से पूरा जनपद डरा हुआ था। गांव के गांव उजाड़ हो गए थे। विश्वामित्र ने लोगों का दुःख देखा था। राक्षसों द्वारा की गई जान-माल की हानि से परेशान थे। आखिर कुछ सोचकर वह अयोध्या के प्रतापी राजा दशरथ के पास आए। राक्षसों के उत्पात की बात बताई और सहायता के लिए राम-लक्ष्मण को मांगा। राजा दशरथ भी चकित थे। महर्षि ने सेना की सहायता लेने से इंकार कर दिया। राजा ने राक्षसों का वध करने के लिए स्वयं कहा, तो भी महर्षि चुप रह गए।

दशरथ समझ गए—'महर्षि त्रिकालदर्शी हैं। कुछ सोच-समझकर ही इन्होंने युवा राम-लक्ष्मण की सहायता चाही है।' दशरथ ने समझा-बुझाकर अपने पुत्रों को महर्षि के साथ भेज दिया। राम-लक्ष्मण धनुष-बाण से सज्जित होकर चल पड़े महर्षि के साथ।

पैदल यात्रा थी। चलते-चलते काफी मार्ग तय कर लिया। अब गंगा के दक्षिण तट से वे तीनों आगे बढ़ने लगे। चारों ओर घोर वन। वृक्षों की घनी छाया में दिन का उजाला भी धुंधला रहा था। अपनी ध्वनि में बोलता जंगल डरावनी गूंज पैदा कर रहा था। अचानक मौन तोड़ते हुए राम ने विश्वामित्र से पूछा—"मुनि पुंगव, इस दुर्गम वन का क्या नाम है? यहां तो दूर-दूर तक प्राणी का नाम-निशान तक नहीं। हिंसक जानवरों से भरा यह वन बड़ा भयानक लग रहा है। कंटीली झाड़ियों में रास्ता भी खो गया है। लगता है, इस रास्ते से कोई आता-जाता नहीं। इसका विस्तार भी बहुत है।"

सुनकर महर्षि विश्वामित्र मुसकराए। बोले—"वीरवर राम, तुमने ठीक कहा। बड़ा भयानक है यह वन, मगर पहले ऐसा नहीं था। पूर्वकाल में इस स्थान पर दो सम्पन्न जनपद थे। उनके नाम थे—मलद और कारूष।"

"तब किस राजा के अधीन थे ये जनपद ?"—राम ने पूछा ।

"इन जनपदों का निर्माण देवताओं ने किया था । देवताओं के राजा इंद्र यहां आकर रहे थे ।"—विश्वामित्र ने कहा ।

सुनकर राम-लक्ष्मण आश्चर्य में डूब गए । उन्हें चुप देख, विश्वामित्र बोले—"मैं समझ गया । तुम सोच रहे हो—भला, इंद्र को स्वर्ग लोक छोड़, यहां आकर रहने की क्या जरूरत पड़ी ?"

"आपने ठीक कहा । मैं तो कम से कम यही सोच रहा हूं ।"—इस बार लक्ष्मण बोल पड़े ।

विश्वामित्र अपनी बात कहने के लिए रुके नहीं । वह चलते-चलते ही बताने लगे—"राम, एक बात जान लो । मनुष्य की कहानी दिनों की होती है और नगरों की वर्षों की, मगर जनपदों या राष्ट्रों की कहानियां शताब्दियों तक चलती हैं । इस तरह यह कहानी भी बहुत पुरानी है । तब इंद्र ने वृत्रासुर राक्षस का वध किया था । हत्या का पाप इंद्र को लगा । इस पाप के कारण इंद्र की कांति मलिन हो गई । वह देवता होकर भी भूख-प्यास से पीड़ित रहने लगे । इंद्र का दुःख दूर करने के लिए ऋषि-महर्षि उन्हें यहां लाए । यज्ञ कराया । फिर पवित्र नदियों के जल से इंद्र को नहलाया गया । इस तरह यहां आकर उनका पाप नष्ट हो गया । इंद्र ने इसी खुशी में यहां दो जनपद बसाए थे । यहां के निवासी इंद्र के कृपापात्र थे । खूब जल बरसता था । फसल अच्छी होती थी, धन-धान्य से भरे थे दोनों जनपद ।"

"महर्षि, फिर इन फलते-फूलते जनपदों का विनाश कैसे हुआ ?"—राम ने जिज्ञासा की ।

विश्वामित्र बताने लगे—"समय कभी एक गति से नहीं चलता । परिवर्तन होता ही है । यही यहां हुआ । यहां की खुशहाली से आकर्षित होकर कामरूपिणी नाम की एक यक्षिणी यहां रहने आ गई । उसमें हजार हाथियों का बल है । उसका दूसरा नाम ताटका भी है ।"

"उसका पति कौन है ?"—राम ने पूछा ।

"ताटका सुंद की पत्नी है । उसके पराक्रमी पुत्र का नाम मारीच है । मारीच की भुजाएं लम्बी, मस्तक विशाल और मुंह बड़ा है । इन दोनों ने ही इन जनपदों को नष्ट किया है । जनपदों को वन में बदलकर वे दोनों यहीं रहते हैं ।"—विश्वामित्र ने बताया ।

तभी सिंह जैसा घोर गरजन सुनाई दिया । राम बोले—"लगता है, कोई सिंह इधर ही आ रहा है ।" लक्ष्मण धनुष पर तीर चढ़ाने लगे, तो महर्षि बोले—"यह सिंह का गरजना नहीं है । यहां से कुछ दूर ताटका रास्ता रोके बैठी है । शायद उसने हमारी गंध पा ली है । हमें चुनौती देने के लिए, वह इस तरह गरज रही है ।"

"हम क्या करें ?"—राम ने महर्षि की ओर देखा ।

"उसकी चुनौती स्वीकार कर, उसका वध करो ।"—महर्षि बोले ।

राम कुछ सोचने लगे । फिर बोले—"महर्षि, क्षमा करें । मैंने सुना है, यक्ष मायावी होते हैं, बलवान नहीं । यह यक्षिणी होकर बलवती कैसे हो गई ? एक बात और—ताटका यक्षिणी होकर राक्षसी कैसे बन गई ? यह मनुष्यों को क्यों सताने लगी ? यक्ष तो ऐसे नहीं होते ?"

विश्वामित्र ठहर गए । बताने लगे—"राम, इसका वध करने से पहले यह सब जानना भी जरूरी है ।





असल में ताटका यक्षिणी ब्रह्माजी के वरदान से बलवती बनी। उसके पिता ने तप करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया था। ब्रह्माजी ने वरदान देते हुए कहा— 'जाओ, तुम्हारे घर एक अति सुंदर कन्या पैदा होगी। वह बहुत बलशाली भी होगी।' ताटका बड़ी हुई, तो इसके पिता सुकेतु यक्ष ने जम्बु के पुत्र सुंद से इसका विवाह कर दिया। विवाह के बाद इसके महा बलवान पुत्र मारीच पैदा हुआ। पहले ये मां-बेटा ऐसे नहीं थे। किंतु राक्षस बनने के बाद इनका रूप भी विकराल हो गया और ये आततायी भी बन गए।''

महर्षि की बात से राम की जिज्ञासा बढ़ी। अब राम का यह पूछना स्वाभाविक ही था कि ये राक्षस कैसे बन गए ?

महर्षि ने कमंडल से जल लेकर मंत्र पढ़ा। फिर जल को इधर-उधर छिड़का। इसके बाद थकान मिटाने के लिए वह भूमि पर बैठ गए। राम-लक्ष्मण से भी बैठने को कहा। विश्वामित्र कहने लगे—''सुनो, मैं बताता हूं, ये दोनों राक्षस कैसे बने। असल में कुछ वर्ष पहले अगस्त्य मुनि का आश्रम यहीं था। ताटका के पति ने घमंड में आकर अगस्त्य मुनि का अपमान कर दिया। क्रोध में आ मुनि ने अपने शाप से उसे भस्म कर दिया। पति की मृत्यु से ताटका आपा खो बैठी। बदले की भावना से पीड़ित हो वह और उसका बेटा अगस्त्य को कष्ट पहुंचाने लगे। एक दिन ताटका और मारीच अगस्त्य को मारने दौड़े। अगस्त्य ने अपनी मंत्र की शक्ति से उन्हें रोक दिया। उन्होंने मारीच को शाप दिया— 'जाओ, राक्षस बन जाओ।''

''और ताटका से क्या कहा महर्षि ?''—लक्ष्मण ने पूछा।

''मुनि अगस्त्य ने ताटका से कहा— 'आज से तुम्हारा रूप कुरूप हो जाएगा। तुम भूख मिटाने के लिए वन-वन भटकती रहोगी।' इस तरह ताटका और मारीच दोनों राक्षस योनि को प्राप्त हो गए। शाप मिलने के बाद उनका रूप भयानक बन गया। दोनों बलवान तो थे ही, राक्षस बनते ही चारों ओर उपद्रव मचाने लगे। उन्होंने अगस्त्य के पवित्र आश्रम को उजाड़ दिया। फिर धीरे-धीरे दोनों जनपद उनके अत्याचारों की चपेट में आ, उजड़ गए।''

''तब तो ये अत्याचारी क्षमा करने योग्य नहीं। आज तक किसी राजा ने इनका वध क्यों नहीं किया ?''—राम पूछने लगे।

''हे रघुनंदन, अगस्त्य मुनि के शाप से राक्षसी बनी इस बलवान यक्षिणी का संहार तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। उठो, सिंह की तरह गरजती ताटका का वधकर इस उजड़े जनपद को फिर से बसाओ।''

राम उठे। उन्होंने महर्षि को प्रणाम किया। फिर धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा को कान तक खींचा। उसकी टंकार की आवाज से पूरा वन गूंज उठा। ताटका ने उसे सुना, तो दहाड़ती हुई आवाज की दिशा में दौड़ी।

क्रोध में भरी ताटका राम-लक्ष्मण के सम्मुख पहुंची। उसे देखकर एक बार तो दोनों भाई आश्चर्य में पड़ गए। इतनी विशालकाय राक्षसी उन्होंने पहली बार देखी थी।

''कौन हो तुम ? यहां क्यों आए ?''—कहती हुई ताटका उन्हें पकड़ने लपकी। राम ने एक तीक्ष्ण तीर उसके माथे पर चलाया। खून की धार बह निकली। अब ताटका क्रोध से पागल हो गई। वह गरजती हुई

शिला खंड उठा-उठाकर फेंकने लगी । उसका उत्पात देख, राम भी क्रोध में भर गए । उन्होंने अपने बाणों से उसके दोनों हाथ काट दिए। भुजाए कट जाने से ताटका चीखती-चिल्लाती मुंह फाड़े इधर-उधर घूमने-दौड़ने लगी ।

''राम, अब इसका अंत करो । यह अपनी माया से शीघ्र कोई और रूप धारण कर, फिर आक्रमण करेगी । सांझ होने वाली है । यह उसी की प्रतीक्षा कर रही है । सांझ होने पर मायावी राक्षसों की शक्ति बढ़ जाती है। फिर इसको मारना कठिन हो जाएगा ।''—विश्वामित्र बोले ।

राम ने जरा भी देर नहीं की । उन्होंने धुंधलके में शब्दवेधी बाण चलाकर ताटका को घेर लिया । वह बाणों को झेलती हुई राम-लक्ष्मण की ओर दौड़ी । उसकी लपलपाती जीभ अग्नि की ज्वाला के समान लग रही थी । राम ने एक साथ ग्यारह बाण चलाकर उसका वध कर दिया । वह पृथ्वी पर गिरी, तो सारा वन दहल उठा ।

''महर्षि, मारीच कहां है ?''—राम ने पूछा ।

—''राम, ताटका को मारना ही मुख्य लक्ष्य था । मारीच से भेंट कल होगी । उसे अभी मारना नहीं है । किंतु इस जनपद को राक्षसों से शून्य बनाना है ।''

राम मुसकराए । वह बोले—''जैसी आप की आज्ञा !''

तभी देवता आकाश से फूल बरसाने लगे । इंद्र ने राम को प्रणाम कर, विश्वामित्र से कहा—''महर्षि, आप ताटका के विनाश के लिए राम को यहां लाए । राम ने मेरे द्वारा बसाए जनपद को राक्षसी से मुक्ति दिलाई । मैं राम का स्वागत करता हूं । आपने भी तपस्या कर, शक्ति प्राप्त की है । आप के पास अमोघ अस्त्र-शस्त्र हैं । उन्हें राम को दें ।वह इनके पात्र हैं । इनसे राक्षसों का वधकर, जनता का कल्याण करेंगे ।''

विश्वामित्र बोले—''राम मेरे प्रिय हैं । मैं ऐसा ही करूंगा ।'' इसके बाद विश्वामित्र ने स्नेह से राम-लक्ष्मण का माथा सूंघा । फिर कहा—''आज रात्रि में हमें यहीं विश्राम करना होगा ।'' ●

भगवान का बगीचा

—अरुणकुमार हालदार

राजकुमार आनंदवर्धन के विवाह की जोर-शोर से तैयारियां चल रही थीं । अनूपगढ़ के महल और इमारतें खूब सजाई गईं । प्रजा में भी अनोखा उत्साह था । सभी अपने घरों की रंगाई-पुताई और सजावट में लगे थे ।

अचानक एक दिन राजा जयरथ ने मंत्री को बुलाकर कहा—''सब कुछ ठीक है, लेकिन यह पुराना महल ! ... नहीं, नहीं, इस पुराने महल में राजकुमार की शादी नहीं होगी । नया महल बनवाओ ।''

सुनकर मंत्री घबराया । बोला—''विवाह की तैयारियों में वैसे ही बहुत खर्च हो रहा है । नया महल बनवाने में तो शाही खजाना एकदम खाली हो जाएगा । फिर अब तो ज्यादा समय भी नहीं । कुल पंद्रह दिन बचे हैं ...''

राजा जयरथ बूढ़े हो चुके थे । इस उम्र में खजाना बढ़ाने के लिए प्रजा पर और ज्यादा कर लगाने को उनका जी नहीं चाहता था । फिर पड़ोसी राजाओं से मांगकर वह अपनी मर्यादा भी नहीं खोना चाहते थे । जब कोई उपाय समझ में नहीं आया, तो मंत्री से बोले—''कुछ ऐसा करो, जिससे शादी के दिन महल चमक उठे ।''

मंत्री ने देश-विदेश के कुशल राज-मिस्त्रियों को बुलवाया । सभी ने महल का निरीक्षण किया । फिर सिर हिलाते हुए राय दी—''इस पुराने महल की थोड़ी-सी मरम्मत और रंगाई-पुताई ही ठीक है । और कुछ करने से इसकी खूबियां नष्ट हो जाएंगी ।''

निराश होकर राजा ने फिर नया महल बनवाने के लिए कहा । मंत्री परेशान ! वैसे ही राजकोष में धन की कमी थी, ऊपर से राजा की यह जिद ! फिर अब तो राजकुमार के विवाह में समय भी ज्यादा नहीं रह गया था ।

मंत्री इस ऊहापोह में था कि अचानक गेरुए वस्त्र पहने एक भिक्षु वहां आया । वह राजधानी से दूर एक

तालाब के निकट कुटिया बनाकर रहता था। उसने मंत्री से कहा—"आप चिंता न करें। राजा की समस्या का समाधान मैं करूंगा।"

मंत्री ने भिक्षु को राजा से मिलवाया। राजा ने पूछा—"भला, कैसे आप इस पुराने महल की सुंदरता में चार चांद लगा पाएंगे!"

भिक्षु बोला—"यह मुझ पर छोड़ दीजिए। बस, मुझे सौ मजदूर और दस राज-मिस्त्री दिला दीजिए।"

अगले दिन से काम शुरू हो गया। महल के सामने खाली जगह थी। मजदूर मिलकर वहां खुदाई करने लगे। मिट्टी हटवाई गई। एक बहुत बड़ा तालाब बन गया। तालाब के चारों तरफ संगमरमर की खूबसूरत सीढ़ियां बनवाई गईं। तीसरे दिन उसमें पानी भर गया। संगमरमर के तालाब में स्वच्छ पानी बिलकुल शीशे की तरह चमक रहा था।

उसी शाम भिक्षु ने राजा को महल के पीछे तालाब देखने के लिए बुलाया। उस समय धूप ढल रही थी। महल के ऊपर सूरज की लाल-लाल किरणें जगमगा रही थी। तालाब के पानी पर महल की हिलती-डुलती परछाईं ऐसे लगती, जैसे कोई सपना देख रहे हों।

काफी देर तक राजा टकटकी बांधे देखते रहे। उनकी प्रसन्नता और अचरज का ठिकाना न रहा। देखते-देखते सूरज और नीचे उतर गया। अब तो आसमान एकदम सुनहरा दिखाई पड़ने लगा। तालाब का पानी भी लाल-लाल, जैसे सोने का तालाब हो। तालाब में महल की छाया और भी अनूठी दिखाई पड़ने लगी।

भिक्षु बोला—"महाराज, सूर्य अस्त होगा, तो चांद की दूधिया रोशनी में सफेद संगमरमर का महल और तालाब फिर चमक उठेंगे। जैसे सचमुच चांदी के हों।"

राजा को भिक्षु की बात में सचाई नजर आई। बोले—"आपको यह बात कैसे सूझ गई? हमारे दरबार के तो बड़े-बड़े विद्वान और मंत्री भी हार गए थे।"

भिक्षु बोला—"यह सब भगवान की देन है महाराज! तालाब के पास रहता हूं। आसमान, सूर्य, चांद-तारे, पेड़, चिड़िया अपनी-अपनी छाया डालती हैं इस पर। तालाब नित नया नजर आता है। आश्चर्य से देखता हूं, यह भगवान का कैसा सुंदर बगीचा है! ...लगा, तालाब के पानी में महल का नया ही रूप दिखाई पड़ेगा..."

सुनकर राजा के चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी।

राजा के आदेश से महल के चारों ओर एक बड़ा तालाब खुदवाया गया। बीच-बीच में महल में आने-जाने के लिए संगमरमर के रास्ते बनवाए गए। रंगाई-पुताई करके महल को चमकाया गया। महल की दीवारों पर रंगीन रोशनी की गई।

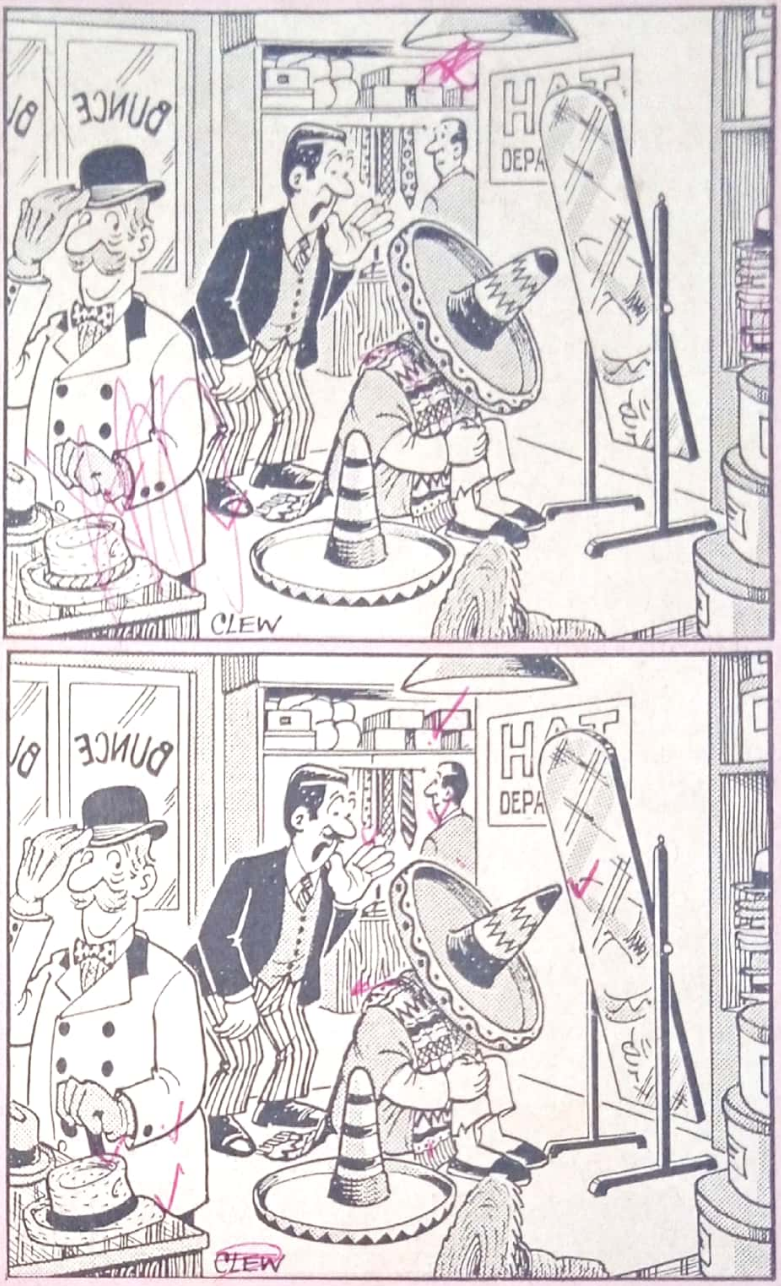
जिस दिन राजकुमार का विवाह था, सारी प्रजा अचरज से महल का यह नया रूप देख रही थी। लोग तालाब के पास खड़े हो, उसमें पड़ती महल की परछाईं देख-देखकर आनंदित हो रहे थे। ●



आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज़ है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**;६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला :**बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय : १५ मिनट।**





कहानी लिखो : ७१

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० अक्तूबर '८९ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी। **परिणाम : दिसम्बर '८९ अंक**

चित्र पहेली : ७१

'रामायण की एक घटना' पर चित्र बनाइए। उसे १० अक्तूबर '८९ तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**के पते पर भेज दीजिए। चुना गया चित्र 'नंदन' में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

घोड़े नहीं दूंगा

—गंगाप्रसाद श्रीवास्तव

इक्ष्वाकु वंश में एक राजा थे शल। उनके दल और बल नाम के दो भाई थे। इक्ष्वाकु राजा अपने पराक्रम के लिए विख्यात थे।

एक दिन राजा शल शिकार के लिए वन में गए। वहीं उनको एक हिंसक पशु दिख गया। उन्होंने उसके पीछे रथ लगा दिया। सारथि से जल्दी से जल्दी उसके पास पहुंचने के लिए कहा। कुछ दूर चलने के बाद सारथि ने राजा से कहा— "महाराज, आप इस पशु को पकड़ने की जिद्द न करें। यह आपकी पकड़ में नहीं आ सकता। हां, अगर इस रथ में इन घोड़ों की बजाए,वाम्य घोड़े जुते होते, तो आप इसे अवश्य पकड़ सकते थे।"

राजा को मालूम ही नहीं था— वाम्य घोड़े कैसे होते हैं, कहां हैं ?

उसने सारथि से कहा— "शीघ्र बताओ, ये वाम्य घोड़े कहां मिलेंगे ?"

सुनकर सारथि मन ही मन कांप उठा। सोचने लगा— 'यदि मैं बताऊं कि ये घोड़े ऋषि वामदेव के हैं, तो राजा उनसे जोर जबरदस्ती करके छीनेगा। इससे ऋषि के शाप से बहुत अनिष्ट हो सकता है।' थोड़ी देर सारथि चुप रहा। पर राजा तो उतावला हो रहा था। उसने कहा— "बताता है कि नहीं। मैं अभी तेरा वध करता हूं।"

राजा के भय से उसे बताना पड़ा— "महाराज, मुनि वामदेव के पास दो घोड़े हैं, जो मन की गति के समान वेगशाली हैं। वामदेव के पास होने के कारण, वे घोड़े वाम्य कहलाते हैं।"

अब राजा वामदेव के आश्रम पर आ गया। आश्रम पर पहुंचकर राजा ने महर्षि से निवेदन किया— "भगवान, एक हिंसक पशु मेरे बाणों से घायल होकर भागा जा रहा है। यदि आप अपने वाम्य घोड़े दे दें, तो मैं उस शिकार को पकड़ सकता हूं।"

घोड़े देते हुए महर्षि ने कहा—"मैं आपको वाम्य घोड़े दिए देता हूं, परंतु जब आपका काम हो जाए, तो ये घोड़े मुझे लौटा देना।" राजा ने घोड़े ले लिए और ऋषि से विदा लेकर फिर हिंसक पशु का पीछा करने चल पड़े।

पीछा करते हुए राजा ने सारथि से कहा— "सूत ! इतने बढ़िया घोड़े ब्राह्मणों के लिए तो बेकार ही हैं। अतः इनको लौटाने की जरूरत नहीं है।"

उसके बाद हिंसक पशु को मार गिराया। फिर अपनी राजधानी लौट आए। अपनी अश्व शाला में घोड़ों को बंधवा दिया।

इधर मुनि वामदेव विचार करने लगे कि इतना समय हो गया, राजा ने घोड़े नहीं लौटाए।

एक महीने बाद मुनि स्वयं ही घोड़े लेने के लिए राजा के पास आए। दरबार में पहुंचकर घोड़े लौटाने के लिए कहा। लेकिन राजा ने घोड़े लौटाने से मना कर दिया। वामदेव ने फिर कहा—"महाराज, इन घोड़ों की मदद से तुम्हारा काम पूरा हो चुका है। इस समय तुम एक तपस्वी ब्राह्मण के सामने हो और अपने वचनों से मुकर रहे हो। कहीं ऐसा न हो, इस असत्य के कारण तुम्हें परेशानी का सामना करना पड़े।"

राजा बोले — "वामदेव जी, मेरे पास सीखे सिखाए दो हृष्ट-पुष्ट बहुत बढ़िया बैल हैं। ये गाड़ी खींच सकते हैं। ब्राह्मणों के लिए बहुत ठीक रहेंगे। आप उन्हीं को गाड़ी में जोतकर ले जाएं। आपका पूरा काम निकालेंगे। फिर आप जैसे महात्मा तो मंत्रों से ही वाहन का काम भी ले सकते हैं।"

वामदेव क्रुद्ध होकर बोले— "राजन ! तुम



ब्राह्मणों की वस्तु हड़पकर अपने काम में लाना चाहते हो। यह दुष्कर्म है। यदि मेरे घोड़े वापस नहीं करोगे, तो मेरी आज्ञा पाकर चार भयंकर राक्षस त्रिशूलों से तुम पर आक्रमण कर, तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।"

अब राजा भी अकड़ गया। बोले— "अगर मेरे सेवकों को पता चल गया कि आप मेरी हत्या करना चाहते हैं, तो वे आपको पहले ही तलवार के घाट उतार देंगे। आपके शिष्यों को भी मार डालेंगे।"

राजा की बात खत्म होते ही चार विकराल राक्षस प्रकट हो गए। उनके हाथों में त्रिशूल थे। जब वे राजा पर आक्रमण करने को बढ़े, तो राजा ने चिल्लाकर सैनिकों से कहा— "पकड़ लो इन्हें और मार डालो इस ऋषि को। मैं घोड़े नहीं दूंगा।" राक्षस अट्टहास कर आगे बढ़े। सेना उन्हें रोक नहीं सकी। वे राक्षस राजा शाल पर टूट पड़े और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

इसके बाद दूसरे भाई दल को राजा बनाया गया। एक दिन वामदेव राजा दल के पास पहुंचे। कहा— "महाराज! ब्राह्मणों की वस्तु उन्हें लौटा दी जानी चाहिए। यह बात सभी धर्मों में कही गई है। इसलिए तुम मेरे वाम्य घोड़े तुरंत लौटा दो।"

राजा को अपने भाई की हत्या के कारण रोष तो था। उसने उसी तरह क्रोध में भरकर सेनापति से कहा— "विष में बुझा हुआ एक तीखा बाण ले आओ, जिससे घायल होकर यह ब्राह्मण अभी जमीन पर लोट जाए।" सेनापति बाण ले आया। राजा ने जैसे ही बाण धनुष पर चढ़ाया, वामदेव बोले —"राजन, मुझे मालूम है, तुम्हारा श्येनजित नामक



एक पुत्र है। यह बाण उसी को मूर्च्छित करेगा। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी, तो उसकी मूर्च्छा कभी नहीं टूटेगी।" हुआ ऐसा ही। धनुष से छूटकर बाण राजकुमार के शरीर में घुस गया। राजकुमार मूर्च्छित हो गया। राजा को जैसे ही यह पता चला, वह बौखला उठा— "मैं इस ब्राह्मण को अभी मारता हूं। अब इसे जीवित नहीं रहने दूंगा। सेनापति, दूसरा बाण दो।"

सेनापति ने दूसरा वैसा ही विष से बुझा बाण लाकर दे दिया।

राजा के हाथ में दूसरा बाण देखकर वामदेव ने फिर कहा— "राजन! तुम इस विकराल बाण को मुझे मारने के लिए धनुष पर चढ़ाने तो जा रहे हो, पर मेरी भी तपस्या का बल देखो। इस बाण को तुम न तो धनुष पर रख सकोगे, न छोड़ ही सकोगे।" फिर ऐसा ही हुआ। राजा का हाथ बाण और धनुष से चिपक गया। अब तो राजा घबराया। उसने पुकारकर सेनापति से कहा— "देखो, अब मैं फंस गया। मैं यह बाण चला नहीं सकता। ऐसी दशा में पराजय स्वीकार करता हूं।"

वामदेव इतने से ही प्रसन्न हो उठे। बोले— "राजन, यदि तुम इस बाण से अपनी रानी का शरीर स्पर्श कर लो, तो इससे मुक्त हो जाओगे।" राजा ने वैसा ही किया। उसी अवस्था में रानी के पास पहुंचा। बाण उसके शरीर से छुआ दिया। राजा के हाथ बाण से अलग हो गए। साथ ही पुत्र की मूर्च्छा भी दूर हो गई। रानी ने वामदेव को नमन किया। उनकी स्तुति करते हुए बोली— "ब्रह्मर्षि! मैं शुरू से ही अपने पतिदेव को ऋषियों, मुनियों का सत्कार करने और मीठे वचन बोलने के लिए कहती आई हूं। आप हमारे अपराध को क्षमा करें।"

वामदेव ने आशीर्वाद देते हुए कहा— "रानी, तुमने राजकुल को ऋषि के कोप से बचा लिया। जाओ, अब तुम सुख से रहो।"

राजा शर्मिंदा तो हुआ ही। उसने महर्षि को वे दोनों वाम्य घोड़े भी लौटा दिए। ●



गहरी नींव

—देवेन्द्रकुमार

बड़े बाजार में एक शानदार हवेली बनाने की तैयारियां हो रही थीं। खबर थी, यहां एक सेठ जी संगमरमर का सतखंडा महल बनवाएंगे। लाखों रुपए खर्च होंगे। पूरी होने पर उस जैसी शानदार हवेली शहर में दूसरी कोई नहीं होगी।

मुर्हूत निकला, भूमि पूजा हुई और फिर नींव भरने के लिए खुदाई होने लगी। मजदूर तेजी से काम में लगे हुए थे। तभी एक चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से कीमती रेशमी वस्त्रों से सजे सेठ जी उतरे। उनकी अंगुलियों में हीरे-मोती की अंगूठियां थीं, गले में सोने की चेन पहने हुए थे।

मजूरों का मुखिया हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। सेठजी हंसकर बोले—"देखो, गांव में हमारी पुश्तैनी हवेली पिछले दो सौ सालों से खड़ी है। वह आज भी उतनी ही मजबूत है। इस हवेली को भी वैसा ही बनना चाहिए। इसकी नींव जरा गहरी खुदवाओ।"

—"जी, बिल्कुल ऐसा ही होगा। मैंने अब तक सैकड़ों हवेलियां बनाई हैं। कहीं से कोई शिकायत नहीं मिली। आप बेफिक्र रहिए।"

—"सो तो है। फिर भी, जरा ध्यान रखना।"

वहीं एक बूढ़ा मजदूर काम कर रहा था। सेठजी की बात सुनकर वह मुंह फेरकर हंसने लगा। सेठ जी ने उसे हंसते देख लिया। उन्हें लगा, जैसे वह उन्हीं पर हंस रहा था। बड़े आदमी ठहरे, उनका पारा चढ़ गया। तुरंत मुंशी से कहा—"इस बदतमीज का हिसाब कर दो। मैं ऐसे आदमियों को नहीं रखना चाहता।"

उनके हुक्म का पालन हुआ। उस बूढ़े मजदूर का हिसाब कर दिया गया। निर्माण कार्य चलता रहा। सेठ जी कुछ देर तक खड़े-खड़े काम की रफ़्तार देखते रहे। फिर कार में बैठकर चले गए।

सेठ जी घर तो चले गए—पर बूढ़े की हंसी उनके मन में कांटे की तरह कसकती रही। पता नहीं क्यों, रात में कई बार नींद में एक विचित्र हंसी कानों में गूंजी। बूढ़े का लम्बी-लम्बी मूंछों वाला झुर्रीदार चेहरा दिखाई दिया— मजाक उड़ाता हुआ। सेठ ने बूढ़े मजदूर को अपनी ओर से दंड दे दिया था, पर फिर भी यह नहीं समझ पाए कि बूढ़ा उनकी बात सुनकर हंसा क्यों था। जब कई दिन तक बात उनके मन में गड़ी रही, तो उन्होंने हवेली के काम पर लगे राज-मजूरों के मुखिया से पूछा उस बूढ़े के बारे में।

लेकिन वह इतना ही बता सका कि बूढ़े मजदूर का पता-ठिकाना कुछ मालूम नहीं। वह हैरान था कि सेठ जी एक साधारण मजदूर को लेकर क्यों इतने परेशान हैं। उसे क्या पता था कि सेठ जी के मन में तूफान उठ रहा है।

सेठ जी कार में बैठकर लौट आए। इस बात को कई महीने बीत गए। उन्हें भी उतनी मानसिक परेशानी नहीं रही, लेकिन जब कभी बूढ़े मजदूर की हंसी याद आ जाती, तो कुछ परेशान जरूर हो जाते।

एक रोज सेठ जी कार में कहीं जा रहे थे, तो एकएक उन्होंने उसी बूढ़े को एक तसले में मिट्टी ढोते हुए देखा। उनको एकदम पूरी घटना याद आ गई। मन चंचल हो उठा। झट ड्राइवर को कार रोकने का आदेश दिया। उतरकर बूढ़े के पास गए। पूछा—"मुझे पहचानते हो?"

बूढ़ा पलकें झपकाता खड़ा रहा, जैसे याद करने की कोशिश कर रहा हो। फिर बोला—"आप सेठ जी हैं। शायद मैंने आपके पास कुछ दिन काम किया था... बताओ, क्या बात है। कुछ गलती हो गई क्या?" सेठ जी समझ गए कि इसे कुछ याद नहीं

है।

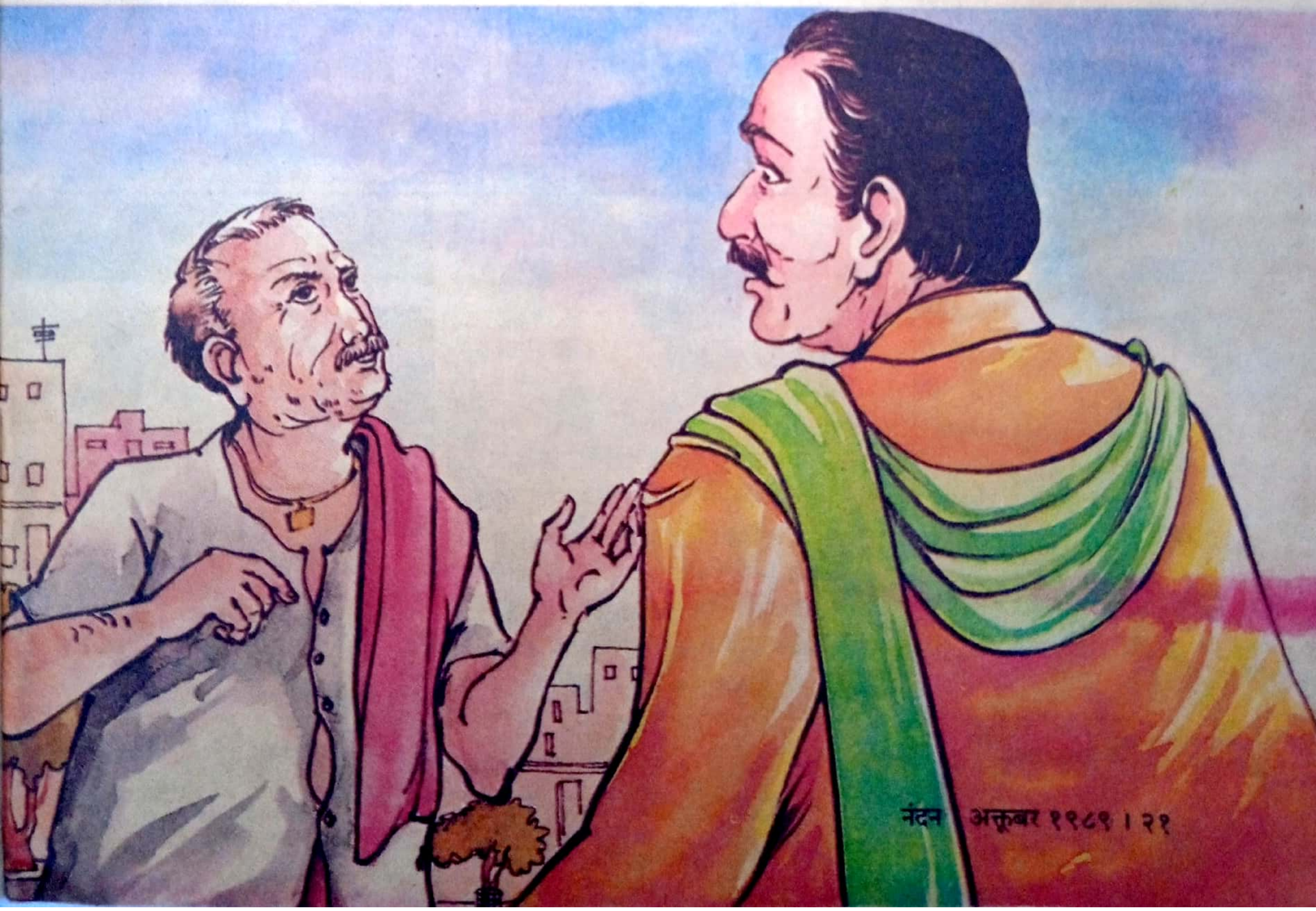
उन्होंने बूढ़े को उस दिन की घटना याद दिलानी चाही। उसे बताया कि कैसे क्या हुआ था। उसे क्यों काम से हटा दिया गया था। बूढ़ा कुछ देर सोचता रहा, फिर उसके होंठों पर हंसी झलकने लगी। बोला— "वाह सेठ जी, आपने खूब याद रखी वह बात। लेकिन मैंने तो कुछ नहीं कहा था।"

"फिर भी..."– सेठ जी ने जानना चाहा कि वह क्यों हंसा था।

बूढ़े ने गारे का तसला एक तरफ रख दिया। सिर पर बंधा कपड़ा फटकारता हुआ बोला— "सेठ जी, आपने कहा था न कि आपकी गांव वाली हवेली पिछले दो सौ सालों से खड़ी है। आपने नई हवेली की नींव खूब गहरी खोदने को कहा, इसी पर हंसी आ गई थी। मैं इतना बूढ़ा हो गया। न जाने किसी हवेलियां खड़ी करवा दीं, कैसे-कैसे बड़े सेठों को देखा। आज हवेलियां तो खड़ी हैं, पर उन्हें मजबूत बनवाने वाले सेठों का कहीं पता नहीं। हर आदमी इमारत की पुख्ता नींव की बात करता है, लेकिन आज तक किसी को अपने बारे में बात करते नहीं देखा। इमारतें खड़ी हैं, पर उन्हें बनवाने वाले आदमी चले गए। आप भी जब वैसी बात करने लगे, तो मुझे हंसी आ गई। आपको बुरी लगी मेरी हंसी, क्षमा करना।" कहकर बूढ़े ने हाथ जोड़ दिए।

सेठ जी ने बूढ़े मजदूर के हाथ थाम लिए। बोले— "नहीं बाबा, मुझे और शर्मिंदा मत करो। सचमुच मैं भी कितना पागल हूं, ईंट-पत्थर की इमारतों की नींव मजबूत करने की चिंता कर रहा हूं, लेकिन आज पहली बार पता चला कि मैं खुद अधर में झूल रहा हूं। मेरी अपनी नींव कहां है— इसका कुछ पता ही नहीं।"

सेठ जी को अपनी बात का जवाब नहीं मिला। बूढ़ा मजदूर फिर गारे का तसला सिर पर रखकर जा चुका था— लेकिन सेठ जी को नई रोशनी दिख गई थी। वह संतुष्ट थे। मन की बेचैनी शांत हो गई थी।



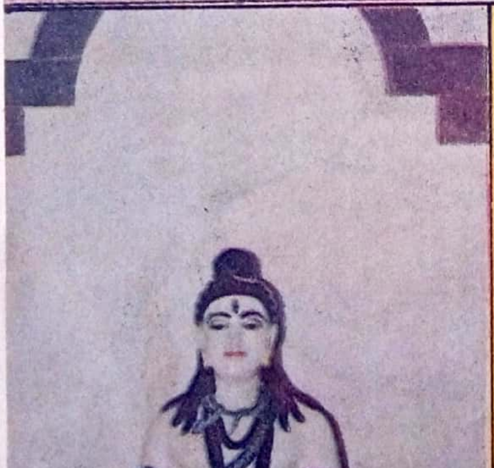


छवि अनोखी इस मंदिर की

राजधानी के विशिष्ट दर्शनीय स्थलों में श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर (बिड़ला मंदिर) प्रमुख है। इसे देखने प्रति दिन हजारों की संख्या में देश-विदेश के लोग आते हैं। यह मंदिर भारतीय धर्म, कला और संस्कृति का अनूठा संगम है। इसका निर्माण सन् १९३८ में राजा बलदेव दास बिड़ला ने कराया था।

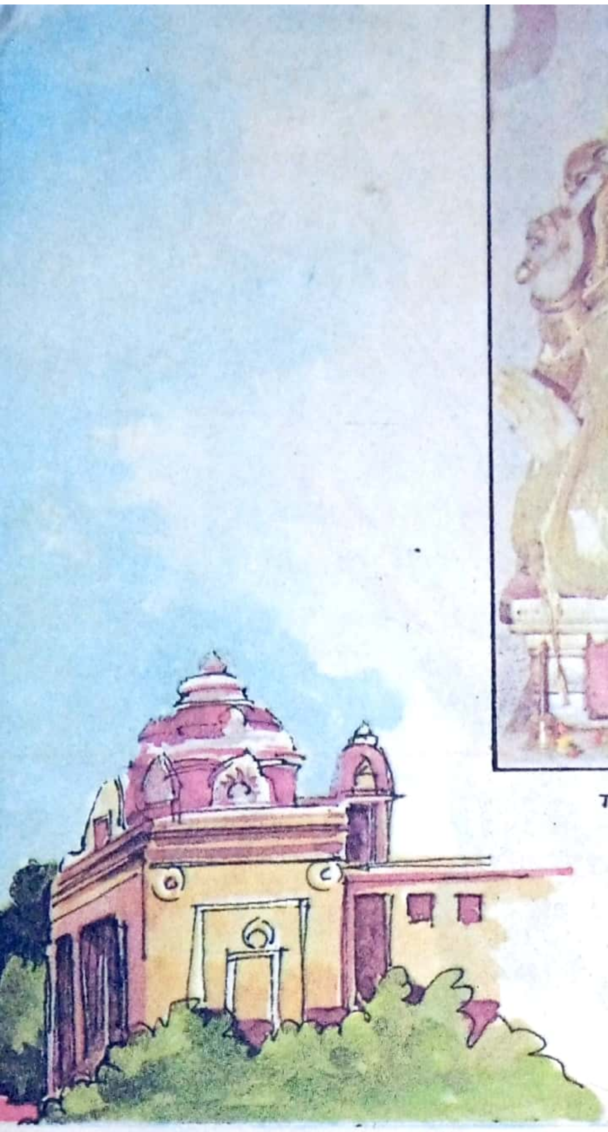


लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा →



भगवान शंकर ←

चित्र : एम. एस. अग्रवाल





गणपति गणेश ↑



भगवान विष्णु →

सिंहवाहिनी देवी दुर्गा ↓

बुद्ध मंदिर के अंदर का दृश्य ↓







मैं अकेला

—ए. डी. किन्से

वह इस दुनिया में अकेला रह गया था। वह था एक ड्रेगन अजेक्स। उसकी उम्र थी एक सौ बत्तीस वर्ष। ड्रेगन हजारों वर्ष तक जीवित रहते थे। इस लिहाज से अजेक्स को बच्चा माना जा सकता था।

बेचारा! इतनी बड़ी दुनिया—इतने सारे लोग और वह अकेला। हां, कुछ ऐसा हुआ कि उसे छोड़कर बाकी सारे ड्रेगन मर गए। और अजेक्स को यह बात पता चल गई थी कि उसके साथ क्या हो गया है। कुछ दिन तक वह भूखा-प्यासा जंगल में छिपा रहा। लेकिन आखिर कब तक?

अजेक्स ने निश्चय किया—'अब तो मुझे मनुष्यों से दोस्ती करनी पड़ेगी। मैं यों अकेला कैसे रहूंगा!'

यह सोचकर अजेक्स पास के नगर की ओर चल दिया। कभी वह चारों पैरों पर उछलता हुआ भागता, तो कभी हवा में उड़ने लगता। फिर रुककर मुंह से आग की लपटें और धुआं छोड़ने लगता। और भी कई जादुई विशेषताएं थीं अजेक्स में। लेकिन इस समय तो बहुत घबराया हुआ था वह।

अजेक्स नगर में पहुंचा, तो हैरान! सब मकानों के दरवाजे बंद, कहीं कोई नहीं। कोई होता भी कैसे। आग उगलने वाले ड्रेगन को देखते ही सब सिर पर पैर रखकर भाग गए थे। सारे नगर में घबराहट फैल गई। किसी को क्या पता था कि यह ड्रेगन खतरनाक नहीं था, वह तो मनुष्यों से दोस्ती करने आया था।

अजेक्स जहां-जहां भी गया, उसे बंद दरवाजे और सूनी सड़कें ही दिखाई दीं। उसकी समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों है? निराश होकर, वह फिर से घने जंगल की ओर लौट चला। उसका मन बहुत दुखी था।

थोड़ी देर बाद उसे घोड़ों की टापों की आवाज सुनाई दी। उसने एक कवचधारी सैनिक को देखा। वह हाथ में भाला लिए, अजेक्स की ओर चला आ रहा था। अजेक्स ने पुकारा—"संभल कर!"

उसकी गरजदार आवाज सुन, सैनिक घबरा उठा। घोड़ा भड़ककर पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। तब तक अजेक्स उसके पास जा पहुंचा। उसने सैनिक से कहा—"मैं तुम से दोस्ती करना चाहता हूं। तुम्हीं पहले आदमी हो, जो मुझे देखकर भागे नहीं।"

अजेक्स को मनुष्य की बोली में बोलते सुन, सैनिक का डर कुछ कम हुआ। उसने भी अपना परिचय दिया। वह एक सामंत था। उसका नाम था जार्ज।

वह ड्रेगन की खबर सुनकर उसे मारने के इरादे से निकला था। इस पर अजेक्स ने कहा—"क्यों भाई! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो तुम ऐसा सोच रहे हो?"

"ड्रेगन डरावने, मायावी और खतरनाक होते हैं।"—सामंत ने कहा।

"तुम्हारी पहली दो बातें तो सही हो सकती हैं, पर तीसरी एकदम गलत है। मैं तो शाकाहारी हूं। आज तक मैंने किसी को भी हानि नहीं पहुंचाई है। मैं तो वैसे ही मुसीबत में फंसा हुआ हूं। क्या तुम मेरी सहायता नहीं करोगे?" —अजेक्स ने कहा।

अब सामंत की घबराहट कुछ कम हुई। दोनों में दोस्ती हो गई। वे साथ-साथ चल दिए। आगे एक सराय थी। सामंत ने कहा—"अजेक्स, मैं रात सराय में बिताऊंगा। तुम जंगल में रह लेना।"

अजेक्स ने उसकी बात मान ली।

लेकिन तभी जार्ज ने घबराकर कहा—"अजेक्स, अब क्या होगा? मेरे पास एक थैली में सोना था। न जाने थैली कहां गिर गई?"

"बस, इतनी-सी बात! मैं अभी प्रबंध करता हूं।"—कहकर अजेक्स जमीन सूंघने लगा। फिर एक जगह अपने पंजों से खोदने लगा। वहां एक संदूक मिला। उसमें सोना था। यह देख, जार्ज चकित रह गया। इस पर अजेक्स बोला—"मैं सूंघकर सोने का पता लगा लेता हूं।" उस संदूक में, सफेद रंग की एक छोटी-सी छड़ी भी थी। सोना निकालते समय छड़ी टूट गई।

उस समय उन्हें यह पता नहीं था कि उन्होंने क्या गजब कर डाला है?

असल में वह संदूक एक दुष्ट परी फ्राउनीफेस का था। और वह छड़ी जादू की थी। फ्राउनीफेस को क्या पता था कि इस तरह छिपाकर रखे गए सोने को भी ड्रेगन खोज निकालेगा। बाद में फ्राउनीफेस को सोने की चोरी के बारे में पता चला, तो वह बहुत ही



क्रोधित हो उठी। उसकी शैतान बिल्ली ने अपनी जादुई दृष्टि से सामंत का पता लगा लिया। वह मजे से ड्रेगन के साथ बढ़ा जा रहा था। फ्राउनीफेस अपनी बिल्ली के साथ जार्ज का पीछा करने लगी।

परी की बिल्ली सुनहरी हिरन बनकर जार्ज के सामने आई और उसे अपने पीछे-पीछे दूर भटका ले गई। परी के जादू से जार्ज एक कोठरी में बंद हो गया। फिर फ्राउनीफेस अपनी बिल्ली को लेकर कोठरी में जा पहुंची। जार्ज ने देखा कि वह फंस चुका है। तभी परी ने उसे अपने जादू से एक चूहे में बदल दिया और फिर अपनी बिल्ली को उस पर छोड़ दिया।

जार्ज अपनी जान बचाने के लिए इधर से उधर भागता फिरा। तभी फ्राउनीफेस ने कहा—''अभी तुम्हें मारना नहीं चाहती। तुम्हें खूब कष्ट दूंगी, ताकि पता चले कि तुमने कितना बड़ा अपराध किया है।'' फिर वह अपनी बिल्ली के साथ चली गई।

उधर अजेक्स को पता नहीं था कि जार्ज कितनी बड़ी मुसीबत में फंस गया है। जब बहुत देर हो गई, तो वह अपने दोस्त को ढूंढ़ने निकला। वह आकाश में उड़ता जा रहा था। कोठरी के झरोखे से जार्ज ने उसे देखा, तो पुकार उठा—''मित्र, मैं यहां कैद हूं।''

जार्ज को कारागार में देखकर अजेक्स हैरान रह गया। उसने कहा—''जार्ज, मेरे रहते हुए चिंता किस बात की ?'' और सच उसने जार्ज को कारागार से मुक्त करा लिया। थोड़ी देर बाद जार्ज अजेक्स की पीठ पर बैठा मजे से हवाई यात्रा का आनंद ले रहा था।

लेकिन फ्राउनीफेस ने अभी हार नहीं मानी थी। वह भी पीछा कर रही थी। ड्रेगन को उसने पहली बार देखा था। इसलिए वह कुछ घबराई। फिर अपनी जादुई छड़ी हवा में हिलाकर जार्ज से बोली—''तुम ड्रेगन बन जाओ और तुम्हारा साथी मनुष्य बन जाए।''

जार्ज तुरंत ड्रेगन बन गया, पर अजेक्स का रूप नहीं बदला। उस पर जादू का प्रभाव नहीं हुआ। अब वहां दो ड्रेगन खड़े थे। अपने कारनामे पर खुश होती हुई, फ्राउनीफेस वहां से चली गई। जार्ज ने अजेक्स से कहा—''अब तो और भी मुश्किल हो गई। मैं इस रूप में अपने नगर कैसे जाऊंगा ?''

अजेक्स ने कहा—''मित्र, धीरज से काम लो। हमें फ्राउनीफेस से उसकी जादुई छड़ी छीननी होगी। उसके बाद ही तुम अपने असली रूप में आ सकोगे। लेकिन जब तक ऐसा न हो जाए, आकाश में मेरे साथ घूमो-फिरो। ड्रेगन बनकर तुम ऐसे बहुत-से काम कर सकते हो, जो पहले नहीं कर सकते थे।''

मित्र की बात सुनकर जार्ज को सांत्वना मिली। स्थिति सचमुच उतनी बुरी नहीं थी, जितनी वह समझ रहा था। वह और अजेक्स आकाश में उड़ते हुए मिस्र की ओर चल दिए। अजेक्स जार्ज को एक विशेष स्थान दिखाने ले जा रहा था। वह थी एक चट्टान। वहां वर्ष में एक बार सुनहरे पंखों वाला पक्षी उतरता था।

रास्ते में उन्होंने एक बड़े कौए को देखा। उसकी आंखें हरी थीं। कौआ कुछ देर दोनों को देखता रहा, फिर उत्तर दिशा में उड़ गया। अजेक्स ने कहा—''न जाने क्यों, कौए की आंखें मुझे एक बिल्ली की याद दिला रही हैं।''

''हां, फ्राउनीफेस की खतरनाक बिल्ली। कहीं वही तो नहीं आ गई रूप बदल कर। हो सकता है, उसे फ्राउनीफेस ने ही हमारी टोह लेने भेजा हो।'' सचमुच ऐसा ही था। उसे फ्राउनीफेस ने ही भेजा था। जार्ज और अजेक्स पर नजर रखने के लिए।

वे दोनों आगे उड़ चले। नीचे रेगिस्तान में उन्हें दो आदमी पड़े दिखाई दिए। उनके आसपास गिद्ध चक्कर काट रहे थे। जार्ज और अजेक्स नीचे उतरे। दोनों आदमी बेहोश थे। दो ड्रेगनों को देखकर गिद्ध डर गए। अजेक्स और जार्ज ने उन दोनों व्यक्तियों को उठाया और नील नदी के किनारे ले गए। वहां उनकी बेहोशी दूर हो गई। दोनों मित्र फिर उड़ चले।

कुछ देर बाद एक विचित्र घटना घटी। अजेक्स ने एक ड्रेगन को उड़ते देखा। वह जार्ज से बोला—''यह क्या ! मैं तो समझता था कि मैं ही

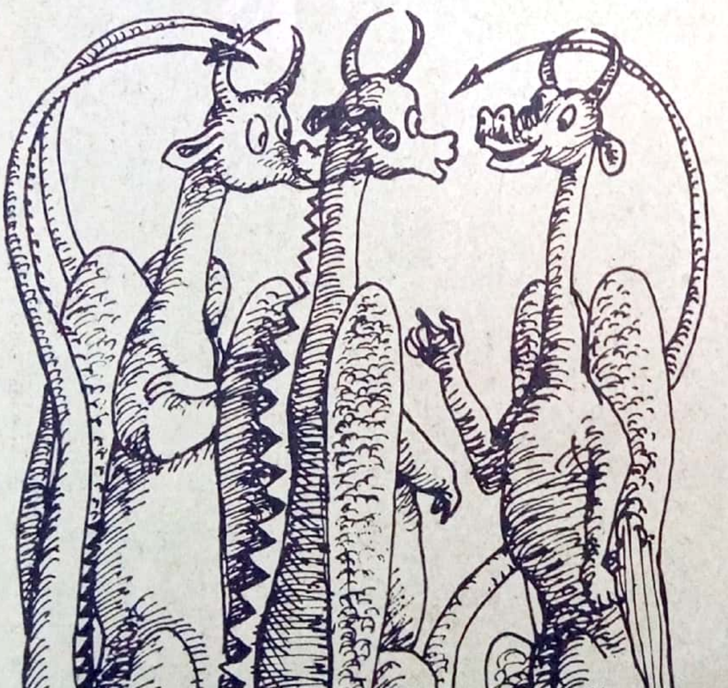
अकेला ड्रेगन बचा हूं। पर शायद मेरा विचार गलत था।''

तीसरा ड्रेगन इनके पास आ गया। असल में वह ड्रेगन नहीं, फ्राउनीफेस की शैतान बिल्ली ही थी। उसे अजेक्स और जार्ज को फंसाने के लिए भेजा गया था। वहां से थोड़ी दूर पर एक भयानक दलदल था। ड्रेगन बनी बिल्ली ने मनगढ़ंत किस्सा सुनाकर दोनों को उलझा दिया। फिर उन्हें दलदल की तरफ ले चली।

एकाएक उसकी आंखें देखकर जार्ज ने बिल्ली को पहचान लिया। दोनों मित्रों में गुपचुप बातें हुईं और फिर बिल्ली खुद अपनी चालाकी का शिकार हो गई। जार्ज और अजेक्स ने उसे दलदल में गिरा दिया। वह छटपटाती हुई चीखने लगी—'मालकिन बचाओ! मैं मरी।'

फ्राउनीफेस ने बिल्ली की चीख-पुकार सुनी, तो झट वहां आ पहुंची। उसने बिल्ली को दलदल से निकाल लिया, पर तब तक जार्ज और अजेक्स वहां से नौ दो ग्यारह हो गए थे।

बिल्ली को साथ लेकर फ्राउनीफेस फिर उन दोनों



का पीछा करने लगी। मौका पाकर उसने जार्ज को शेर बना दिया। अजेक्स पर तो उसका जादू चलता नहीं था। फिर अपनी सफलता पर खुश होने लगी। अजेक्स ने जार्ज से कहा—''तुम शेर हो तो कुछ कर के दिखाओ। इस बिल्ली का ही काम तमाम कर दो। अगर ऐसा हो गया, तो फ्राउनीफेस की ताकत काफी कम हो जाएगी।'' जार्ज को मौका मिला, तो उसने बिल्ली को अपना शिकार बना लिया।

फ्राउनीफेस को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था। उसने जार्ज को चूहा बना दिया और पुकार कर कहा—''मेरी प्यारी बिल्ली, शिकार की तैयारी करो।''

यह सुन, अजेक्स खूब हंसा। इससे फ्राउनीफेस चक्कर में पड़ गई। तब उसे पता चला कि क्या हो गया है। वह जार्ज के पीछे दौड़ी, तो वह बिल में जा घुसा।

फ्राउनीफेस अपने हाथ में जादू की छड़ी लेकर तैयार थी।

''पता नहीं, अब यह क्या गुल खिलाना चाहती है?''—अजेक्स बुदबुदाया। यह कहकर वह आकाश में उड़ गया। फिर तेजी से झपट्टा मारकर उसने अपनी पूंछ फटकारी, तो फ्राउनीफेस के हाथ से जादुई छड़ी गिर पड़ी। अजेक्स ने छड़ी को लपककर उठा लिया। फिर पुकारा—''फ्राउनीफेस, तुम पत्थर की मूरत बन जाओ।'' और अगले ही पल वहां एक मूर्ति नजर आने लगी। इसके बाद उसने जार्ज को आवाज दी—''बाहर आ जाओ। तुमने बिल्ली को ठिकाने लगाया था। मैंने उसकी मालकिन का काम तमाम कर दिया है। अब वह तुम्हें क्या, किसी को भी परेशान नहीं कर सकेगी।'' जार्ज बिल से बाहर निकला, तो अजेक्स जादुई छड़ी की सहायता से उसे असली रूप में ले आया।

इसके बाद अजेक्स को साथ लेकर जार्ज अपने नगर की ओर चल दिया। उसने निश्चय कर लिया था, चाहे कोई कुछ भी कहे, वह सदा अजेक्स के साथ रहेगा। ●

महल में भूसा

—मधुमालती जैन



एक राजा थे। दूर-दूर तक उनके बल और न्याय की ख्याति फैली हुई थी। राजा ने प्रजा के हित के लिए अनेक कार्य किए थे। रास्तों पर पेड़ लगाए थे। जगह-जगह प्याऊ बनवाई थीं, ताकि आते-जाते मुसाफिर ठंडा जल पीकर कुछ देर आराम कर सकें। उसने दीन-दुखी और अपाहिज लोगों के लिए भी बहुत से काम किए थे।

वह धार्मिक उत्सव पर गरीबों को दान देते थे। प्रजा के साथ पूरा न्याय करते थे। लोगों के दुःख-सुख की बात जानने के लिए, वेश बदलकर घूमा करते थे। इन सब कामों से वह प्रजा के प्रिय बन गए थे। चारों ओर उनकी प्रशंसा होती थी। राजा अपने मन में सोचते थे—'मेरे कामों से निश्चय ही देवता प्रसन्न होंगे। मैं जो पुण्य कमा रहा हूं, उससे मुझे स्वर्ग में स्थान मिलेगा।'

यही बात सोचते-सोचते एक दिन राजा को नींद आ गई। उन्होंने सपने में देखा, वह सिंहासन पर विराजमान हैं। तभी स्वर्ग से एक विमान उतरकर आया। वह राज दरबार में राजा के ठीक सामने आकर उतरा। विमान में से दिव्य रूप धारी एक देव बाहर निकला। देव राजा के पास आकर बोला—"राजन, मैं स्वर्ग लोक से आया हूं। मुझे आपके पास यह बताने के लिए भेजा गया है कि स्वर्ग में आपके रहने के लिए एक सुंदर महल बनाया जा रहा है। वह महल ऐसा है, जिसके अंदर बैठकर बिना कुछ किए ही, केवल सोचने मात्र से सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। पृथ्वी पर जिस दिन आपके जीवन की अवधि समाप्त हो जाएगी, मैं इसी विमान में आपको ले जाने के लिए आऊंगा।" इतना कहकर देवदूत विमान में बैठकर चला गया।

अचकचाकर राजा की आंखें खुलीं। वह स्वप्न के बारे में गंभीरता से सोचने लगे। उनको लगा, सचमुच ही स्वर्ग में मेरे लिए एक अद्भुत महल बनाया जा रहा है। ऐसा सोचते हुए राजा स्वर्ग की मनोरम कल्पना में डूब गए। जब चेतना लौटी, तो उन्हें अपने ऊपर गर्व होने लगा। सोचने लगे—'मैं इस पृथ्वी पर शायद अकेला ऐसा महान पुरुष हूं, जिसके लिए पहले से ही स्वर्ग में महल बनाया जा रहा है।'

एक दिन राजा अपने उपवन में घूम रहे थे। शाम ढलने में अभी देर थी। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। घूमते-घूमते राजा उस ओर आए, जहां अशोक वृक्षों का एक समूह खड़ा हुआ था। घनी छाया थी। उसी छाया के नीचे राजा ने एक संन्यासी को ध्यान मग्न बैठे देखा। वह देर तक खड़े देखते रहे। जब काफी देर तक संन्यासी का ध्यान नहीं टूटा, तो राजा मन में सोचने लगे—'बेचारा स्वर्ग जाने के लिए कैसी तपस्या कर रहा है! फिर भी क्या पता, इसे स्वर्ग मिलेगा या नहीं। एक मैं हूं, जिसके लिए अभी से स्वर्ग के द्वार खुल गए हैं। एक नया महल बनवाया जा रहा है।'

इसी बीच संन्यासी का ध्यान टूटा। उन्होंने राजा की ओर एक बार देखा। फिर ध्यान लगाकर बैठ गए। राजा को लगा, यह मेरी उपेक्षा कर रहा है। वह आगे बढ़े। संन्यासी के पास पहुंचे। बोले—"महात्मन्, आप नहीं जानते, मेरे पुण्यों के

कारण ही स्वर्ग में मेरे लिए एक नया महल बनवाया जा रहा है । एक दिन सपने में आकर देवदूत मुझसे यह बात कह गया ।''

सुनकर संन्यासी हंसे और बोले—''वाह, खूब सोची आपने । मगर यह मत भूलो, सपनों के महल कभी रहने के काम नहीं आते । वह तो एक बहलावा है । आप इस भूल को कभी स्वीकार नहीं करें । जो स्वर्ग के सपने देखता है, उसे शायद ही कभी स्वर्ग मिल पाता हो ।''

राजा अपने इस अपमान से तिलमिला उठे । वह संन्यासी को बुरा-भला कहते हुए, अपने महल की ओर चले गए । उसी रात राजा को सपने में फिर वही देवदूत दिखाई दिया । वह राजा से कह रहा था—''राजन, महल तो आपका बन गया, पर एक आश्चर्यजनक घटना घटी है । कहीं से भूसा उड़कर आया और उससे महल के सारे कमरे भर गए । जब तक वह भूसा नहीं निकलेगा, तब तक आप वहां कैसे रहेंगे ?'' —कहकर देवदूत फिर चला गया ।

राजा की आंखें खुलीं । सपने की बात याद आई, तो डर से कांप उठे । भागे-भागे राजगुरु के पास गए । उन्हें सारी बात बताकर पूछा कि ऐसा क्यों हुआ ?

राजगुरु ने कहा—''महाराज, इस बीच जरूर आपने किसी पुण्यात्मा का दिल दुखाया है ।'' यह सुनकर राजा को तुरंत उसी संन्यासी का ध्यान आ गया, जिनका पहली शाम को उन्होंने अपमान किया था । वह भागे-भागे उपवन में आए, पर वहां संन्यासी नहीं थे । वह तो पहले ही जा चुके थे ।

अब राजा सोच में पड़ गए । किसी ने उन्हें बताया कि आपके घमंड ने ही यह मुसीबत खड़ी की है । इसका एक ही उपाय है कि ज्यादा से ज्यादा लोग आपकी निंदा करें । जितनी निंदा होगी, घमंड का असर उतना ही कम होता जाएगा । फिर स्वर्ग वाले महल में भरा भूसा भी हट जाएगा ।

राजा ने तुरंत गुप्तचरों को बुलाया । आदेश दिया—''जाओ, राज्य में मेरे बारे में ऐसी अफवाह फैला दो, जिससे लोग मेरी निंदा करने लगें ।''

गुप्तचरों ने राजा के आदेश का पालन किया । फिर चारों ओर राजा की निंदा होने लगी । मगर उस राज्य में एक ज्ञानी कुम्हार भी था । इधर-उधर की बात सुनकर भी उसने राजा की कभी निंदा नहीं की ।

इसी बीच देवदूत फिर राजा के सपने में आया । उसने बताया—''राजन, आपके महल का भूसा तो गायब हो गया, किंतु आपके खाने के कमरे के एक कोने में अभी भी भूसा बाकी है । बहुत कोशिश करने पर भी हम उसे नहीं हटा पाए ।''

आंखें खुलने पर राजा ने यही बात फिर राजगुरु से कही । राजगुरु ने राजा को सुझाया—''जरूर राज्य में कोई ऐसा आदमी है, जो आपकी निंदा नहीं करता । अगर वह आपकी निंदा करे, तो हो सकता है, बाकी भूसा भी हट जाए ।''

जब राजा ने गुप्तचरों से इस बात का पता लगाया, तो उस कुम्हार के बारे में पता लग गया । एक दिन सुबह-सुबह राजा रथ पर सवार हो, कुम्हार के घर पहुंचे । उस समय कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाने की तैयारी में था । राजा को देखा, तो स्वागत करते हुए बोला—''मेरी झोंपड़ी पर पधारकर आपने मुझे कृतार्थ कर दिया । कहिए, मैं आपकी क्या सेवा करूं ?''

राजा बड़े प्यार से बोले—''भइया, सेवा नहीं, तुम मेरी निंदा करो । डरो नहीं, मैं इसके बदले तुम्हें सजा नहीं, इनाम दूंगा । मैं अपनी निंदा सुनने आया हूं । कहो, कुछ तो कहो ।''

कुम्हार कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा । फिर हंसकर बोला—''अरे, राजा ! क्यों मुझे मूर्ख बनाते हो । जरा यह तो सोचो, जब तुमने घमंड किया है, तो भूसा तुम्हें खाना ही पड़ेगा ।'' इतना कहकर कुम्हार अपने बर्तन बनाने लगा ।

राजा उस ज्ञानी से ज्ञान प्राप्त कर लौटा । वह सोच रहा था—'सचमुच घमंड करने से आदमी का विवेक नष्ट हो जाता है । वह अपने-पराए की सही पहचान भी भूल जाता है ।' उस दिन के बाद राजा दिल से खुश होकर दान करता था । वह उसके प्रतिदान के बारे में कुछ नहीं सोचता था । •



आ गया दशहरा !



दस दिन की धूम-धाम
चहल-पहल, मस्ती
देख रामलीला को
पुलक उठी बस्ती ।
हम सबके मन को
हरषा गया दशहरा ।

सोने का हिरन
और लक्ष्मण की रेखा,
सीता का हरण
मरण रावण का देखा ।
गीत जीत के आखिर
गा गया दशहरा ।

पोथी को और
कलम को हमने पूजा,
शोर विजयादशमी का
घर भर में गूंजा ।
आंगन को जैसे
महका गया दशहरा ।

कुछ दिन के बाद
अभी दीवाली आएगी,
लौटेंगे राम अवध
खुशहाली छाएगी ।
खुशखबरी सबको
पहुंचा गया दशहरा !

—योगेन्द्रदत्त शर्मा

कथा-कहानी

हमें सुनाओ
नानी जी कुछ
ऐसी कथा-कहानी,
जिनमें हों फूलों की बातें
परियों वाली रानी ।

चंदा मामा
किरणों के संग
चुपके से आ जाएं,
दूध-भात से भरा कटोरा
बच्चों को दे जाएं ।

रंग-बिरंगी
तितली के संग
हों खुशबू की बातें,
दीवाली-सी झिलमिल-झिलमिल
तारों वाली रातें ।

हम सबको
लेकर उड़ जाए
नभ में उड़नखटोला,
और वहां से भर लाएं हम
मोती वाला झोला ।

—रमेशचंद्र पंत



खेल-खेल में

जीवन है मैदान खेल का
इसमें सभी समान हैं ।

मेहनत से सब आगे बढ़ते
हिम्मत से सब ऊंचे चढ़ते,
खेल-खेल में मित्र-भाव से
सभी बढ़ाते ज्ञान हैं ।

नहीं अमीर जीतने वाला
नहीं फकीर हारने वाला,
सभी निपुण अपने खेलों में
सबके खेल महान हैं ।

ऊंच-नीच का नाम नहीं है
द्वेष-दम्भ का काम नहीं है,
सभी खिलाड़ी कदम मिलाकर
चलते सीना तान हैं ।

—गोपालकृष्ण कौल

बजे नगाड़े

सारे दिन
सोते रहते हैं
मामा नत्थूमल,
कुम्भकर्ण के चाचा हैं यह
मचा रहे हलचल !

ऐसे खर्राटे भरते हैं
जैसे बजे नगाड़े,
नींद न टूटे चाहे सिर पर
शेर खड़ा चिंघाड़े ।
मच्छर सिर पर भन-भन करते
हार गए खटमल ।

मुर्गे से कहकर सोते हैं
बांग लगाना मत,
सूरज से कहकर सोते हैं
मुझे जगाना मत ।
पर मामी के आगे उनकी
दाल न पाती गल ।

—वसु मालवीय

सुनहरी चिड़िया

—मदनमोहन राजेंद्र

गहरे सागर में एक छोटा-सा सुंदर टापू था। नाम था उसका टाली। उसके उत्तर में एक और टापू था। सब लोग उसे बौने राक्षस का टापू कहते थे। वह टापू उजाड़ था। वहां के सभी जीव-जंतुओं को बौने राक्षस ने खा लिया था। टाली का कोई भी आदमी डर के मारे उस टापू की ओर नहीं जाता था। परंतु टाली के सब मछुआरे बौने राक्षस को देख चुके थे। वह कभी-कभी अपने टापू के किनारे खड़े होकर सागर में चलते हुए जहाजों और नावों को देखता रहता था। वह कोयले की भांति काले रंग का था। उसके सिर पर उगे दो सफेद सींग दूर से नजर आते थे।

बौना राक्षस बहुत छोटा था, पर जब वह अट्टहास करता, उसका शरीर किसी गुब्बारे की तरह बढ़ने और फूलने लगता। देखते ही देखते वह बहुत लम्बा-चौड़ा राक्षस बन जाता। कुछ देर बाद वह फिर बौना बन जाता।

बौने राक्षस के बारे में टाली में तरह-तरह की कहानियां कही जातीं। दीनू और रामू को सुनकर हैरानी होती— 'क्या सचमुच बौना राक्षस इतना भयानक है ?' वे दोनों अभी बालक ही थे, लेकिन थे बहुत निडर। उनकी अपनी नाव थी। उसमें बैठकर वे सागर में दूर-दूर तक जाते। मछलियां पकड़ते। टापू के दूसरे लड़कों के साथ कबड्डी खेलते। तीर चलाने का अभ्यास करते।

एक दिन दीनू ने रामू से कहा— "क्यों न किसी दिन बौने राक्षस के टापू चलें!"

"तुम पागल हो गए हो क्या ?"— रामू चकित होकर बोला।

"देखो रामू, मरना तो एक दिन सभी को है। फिर मरने से डर कैसा ! लेकिन अगर हमें बौने राक्षस के खजाने की एक भी वस्तु हाथ लग गई, तो टापू के लोग मालामाल हो जाएंगे। मैंने सुना है, उसके खजाने में बहुत सारा सोना और हीरे-जवाहरात हैं।"

"मगर हम दोनों को तो वह जाते ही खा जाएगा।"— रामू बोला

—"मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूं। मैंने पता लगा लिया है कि वह अमावस के दिन सो जाता है। फिर तीन दिन तक नहीं उठता। आज अमावस है, वह सो गया होगा। कल चलते हैं। उसके जागने से पहले उसके खजाने में से कुछ चीजें ले आएंगे।"

अगले दिन तड़के ही दोनों बालक अपनी नाव में बैठ, बौने राक्षस के टापू की ओर चल पड़े। अपने धनुष-बाण भी ले लिए। हवा उलटी दिशा में बह रही थी। उन्हें नाव खेने में बड़ा जोर लगाना पड़ा। दोपहर के समय वे टापू पहुंच गए। उन्होंने नाव को एक चट्टान से बांध दिया। फिर ऊपर चढ़ गए। वे थककर चूर हो गए थे। भूख भी लग रही थी। उन्होंने कुछ फल खाए, फिर वहीं सो गए। उनकी आंखें शाम को ही खुलीं।

वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर आगे बढ़े। बड़ी पथरीली और बंजर धरती थी। कभी-कभी ठोकर लग जाती। चलते-चलते घोर अंधेरा छा गया। दीनू का पांव किसी भारी चीज से टकराया। एक धमाका-सा हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि किसी खाई में गिरे जा रहे हैं। कुछ देर के बाद उनके पांव टिके। उन्होंने डरते-डरते आंखें खोलीं। वहां कमरे में रोशनी थी। चारों ओर हड्डियों की दुर्गंध। एक कोने में सोने की



तिपाई थी। उस पर एक गुलदस्ते में रंगबिरंगे फूल थे। बीच में खूब बड़ा गुलाब का फूल था— फूल के चारों ओर खूब नुकीले कांटे। दीनू को हैरानी हुई। उसने गुलाब को छूने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया, कांटे सिकुड़ने लगे।

रामू बोला— "ठहरो, मैं देखता हूं।" उसने तेजी से हाथ बढ़ाकर गुलाब का फूल तोड़ लिया। तीखे कांटों से हाथ लहूलुहान हो गया। पर जैसे ही उसने गुलाब के फूल को सूंघा, हाथ ठीक हो गया।

अब रामू ने उस फूल को तिपाई से छुआया। आश्चर्य! तिपाई एक ओर हट गई। नीचे जाने वाली सीढ़ियां निकल आईं। दोनों उनसे नीचे उतर गए। एक बड़े कमरे में पहुंच गए। वह कमरा सोने-चांदी और हीरे-जवाहरात से अटा पड़ा था। दोनों ने एक थैले में हीरे-जवाहरात भर लिए। आले में एक सोने की चिड़िया रखी थी। दीनू की नजर उस पर पड़ गई। उसने उसे भी उठाना चाहा, पर चिड़िया फुदक कर ऊपर चली गई। बोली— "मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। पहले ये हीरे-जवाहरात फेंक दो।"

जैसे ही दीनू और रामू ने हीरे-जवाहरात निकालकर फेंके, चिड़िया बारी-बारी से दोनों के कंधों पर बैठी। फिर उनके चारों ओर चक्कर लगाने लगी।

उड़ते-उड़ते चिड़िया ने अपना सुनहरा पंख गिरा दिया। अचानक एक जोर का धमाका हुआ। कमरे की दीवारें हिलने लगीं, मानों कोई भूकम्प आ गया हो। दीनू और रामू भागकर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए।

तभी एक और धमाका हुआ। वे दोनों गिरते-गिरते बचे। सामने तेज रोशनी चमकी। उन्होंने देखा कि उनके सामने कुछ दूरी पर बौना राक्षस खड़ा है। वह कड़ककर बोला— "मूर्ख बालको, तुम्हें तुम्हारी मौत यहां ले आई है। तुमने मेरी नींद हराम कर दी। मैं तुम्हें दंड दूंगा। अब तुम यहां से बचकर नहीं जा पाओगे।"

दीनू और रामू घबराए नहीं। उन्होंने अपने धनुष-बाण संभाल लिए। इतने में बौने राक्षस को दीनू के कंधे पर सोने की चिड़िया नजर आई। वह तड़प-सा गया और बोला— "तुम यह चिड़िया मेरी तरफ फेंक दो। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा। बदले में जितने चाहो, हीरे-जवाहरात ले जा सकते हो।"

"नहीं, ऐसा कभी मत करना। नहीं तो राक्षस मुझे मारकर खा जाएगा। फिर यह अजेय हो जाएगा। इसे कोई नहीं मार सकेगा।"— चिड़िया बोली।

"चिड़िया को मेरे हवाले नहीं किया, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।"— कहकर राक्षस आगे बढ़ा। अब वह भयंकर कहकहे लगा रहा था। उसका शरीर किसी विशाल, काले पहाड़ जैसा नजर आ रहा था।

चिड़िया बोली— "दीनू, रामू... घबराओ मत। इसके पैरों में तीर मारो।"

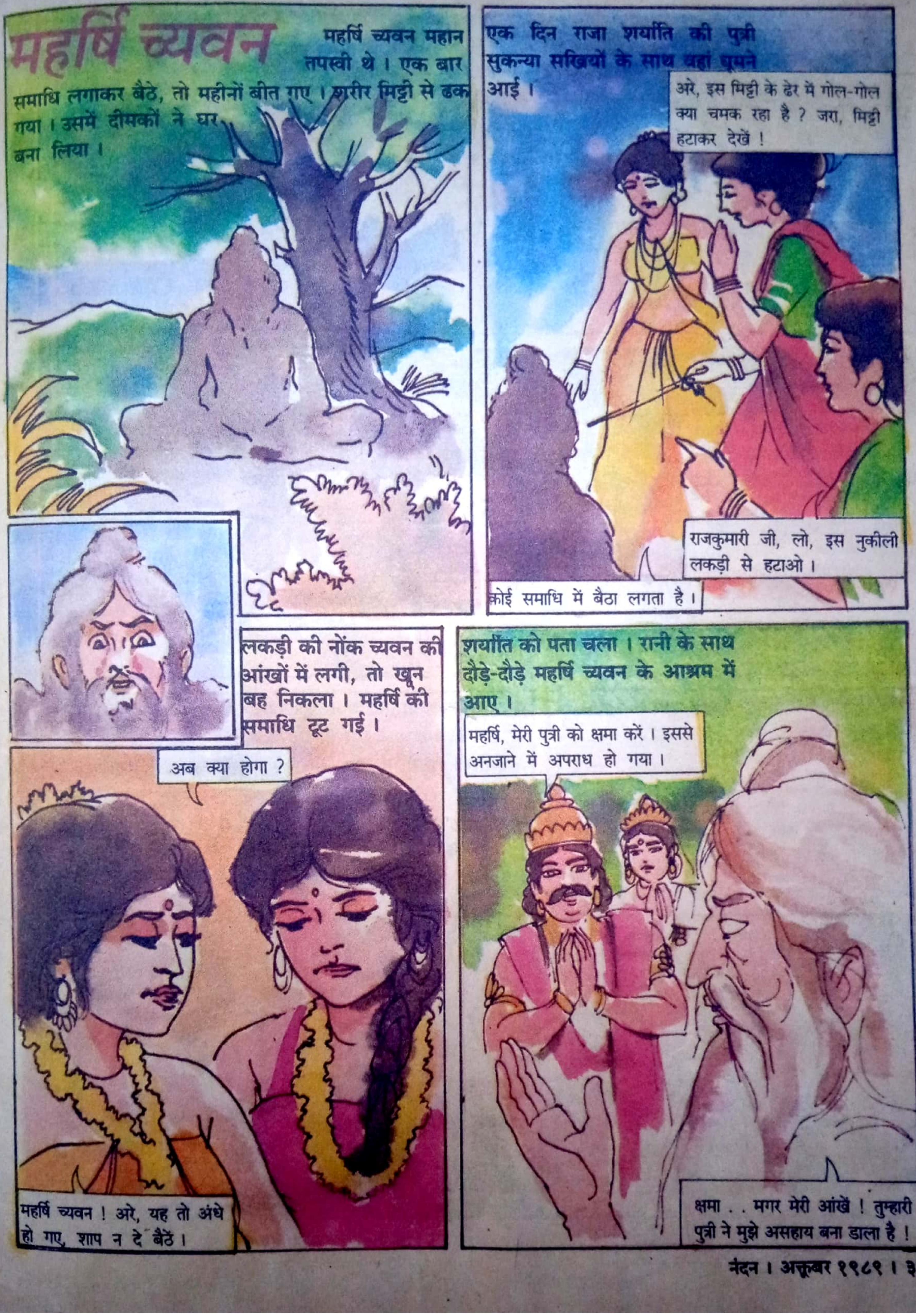
सुनते ही राक्षस डर गया। फिर से बौना बनकर गिड़गिड़ाया— "नहीं, नहीं, ऐसा मत करना। बदले में कुछ भी ले लो—। सारा खजाना, हीरे-जवाहरात..."

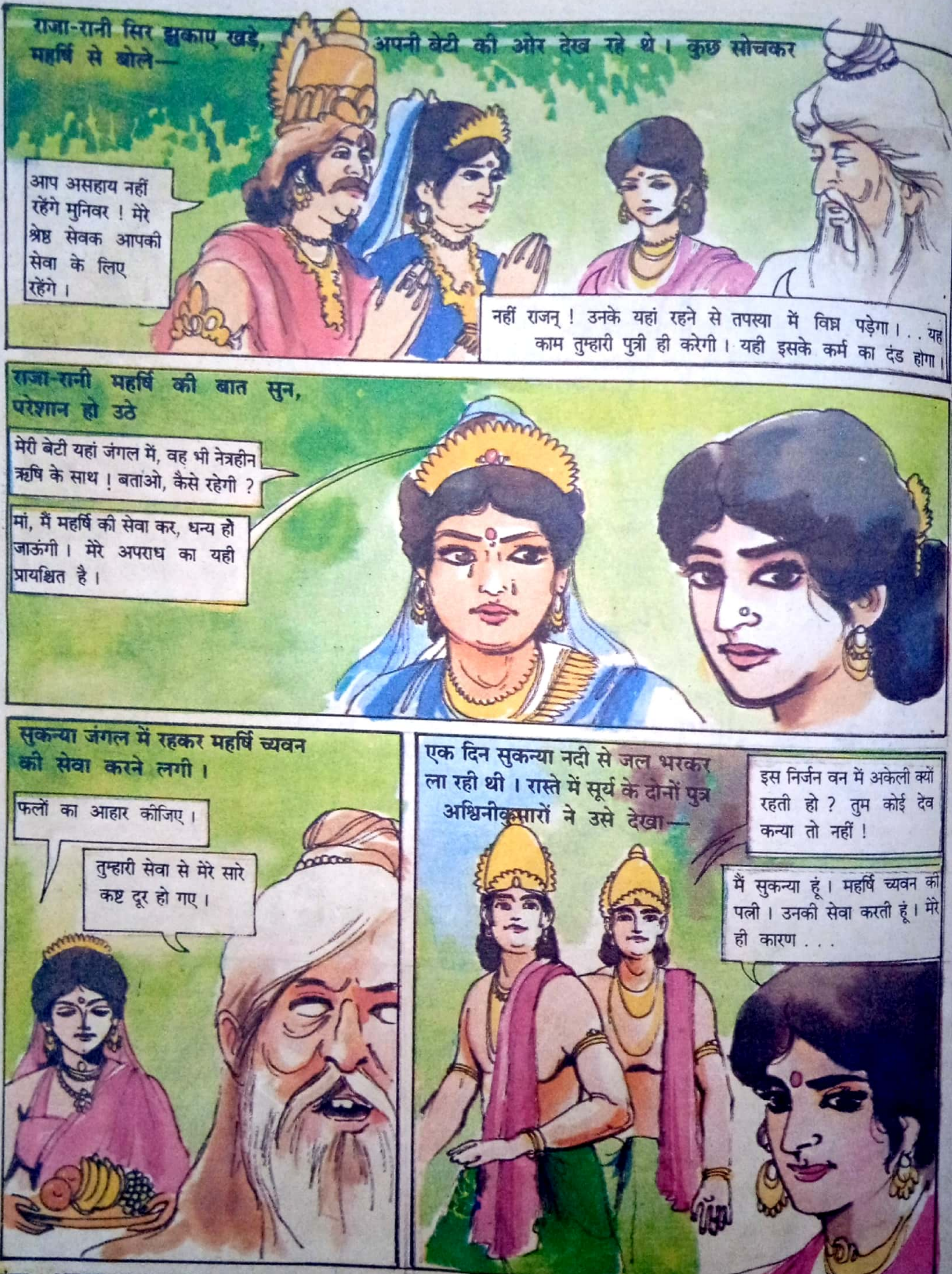
लेकिन तब तक तीर चल चुके थे। फिर एक जोरदार धमाका हुआ। जैसे तेज बिजली कौंधी हो। देखते ही देखते राक्षस काले धुएं के ढेर में बदल गया।

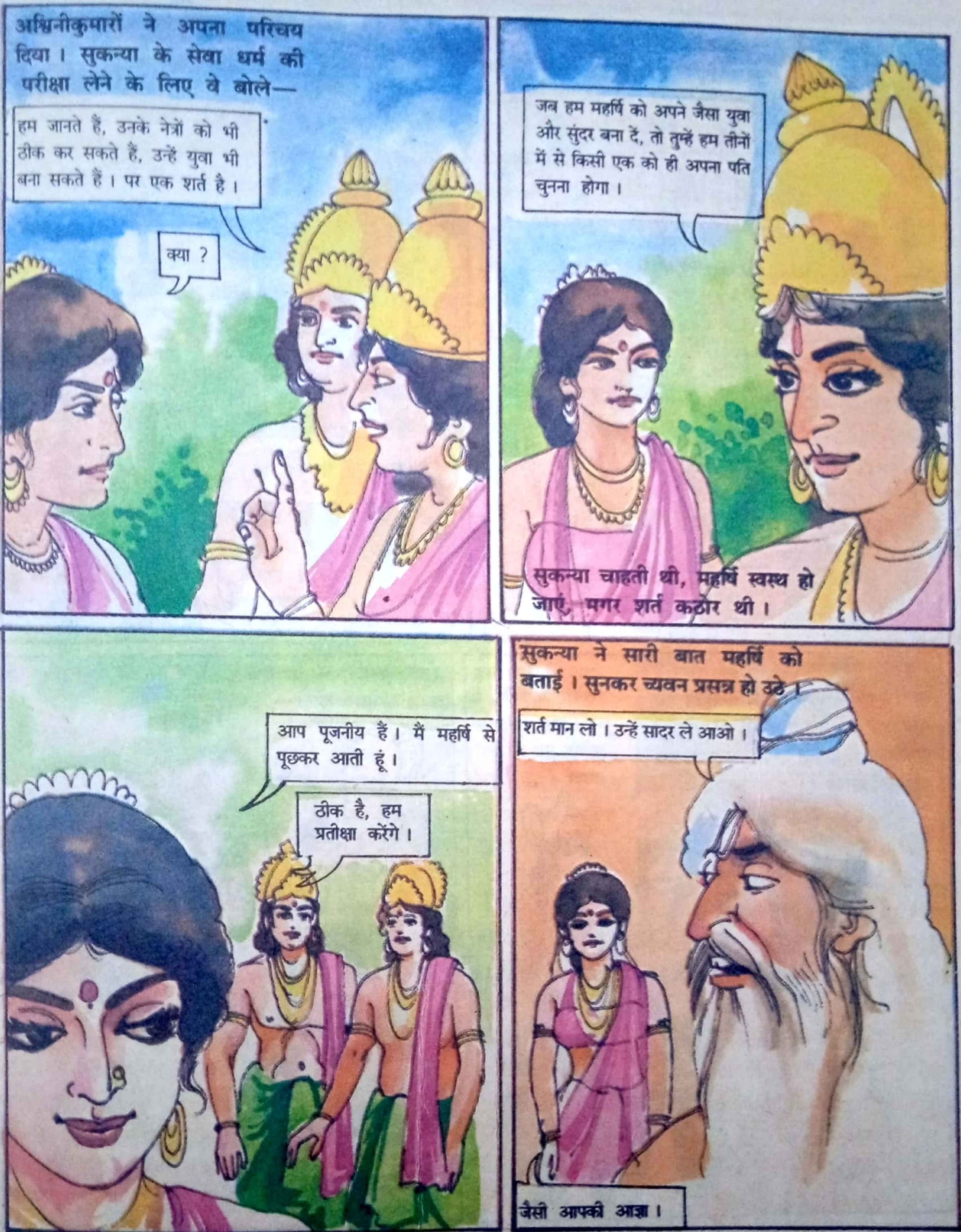
अब रामू और दीनू ने अचरज से सुनहरी चिड़िया की ओर देखा। पूछा— "तुम कौन हो?"

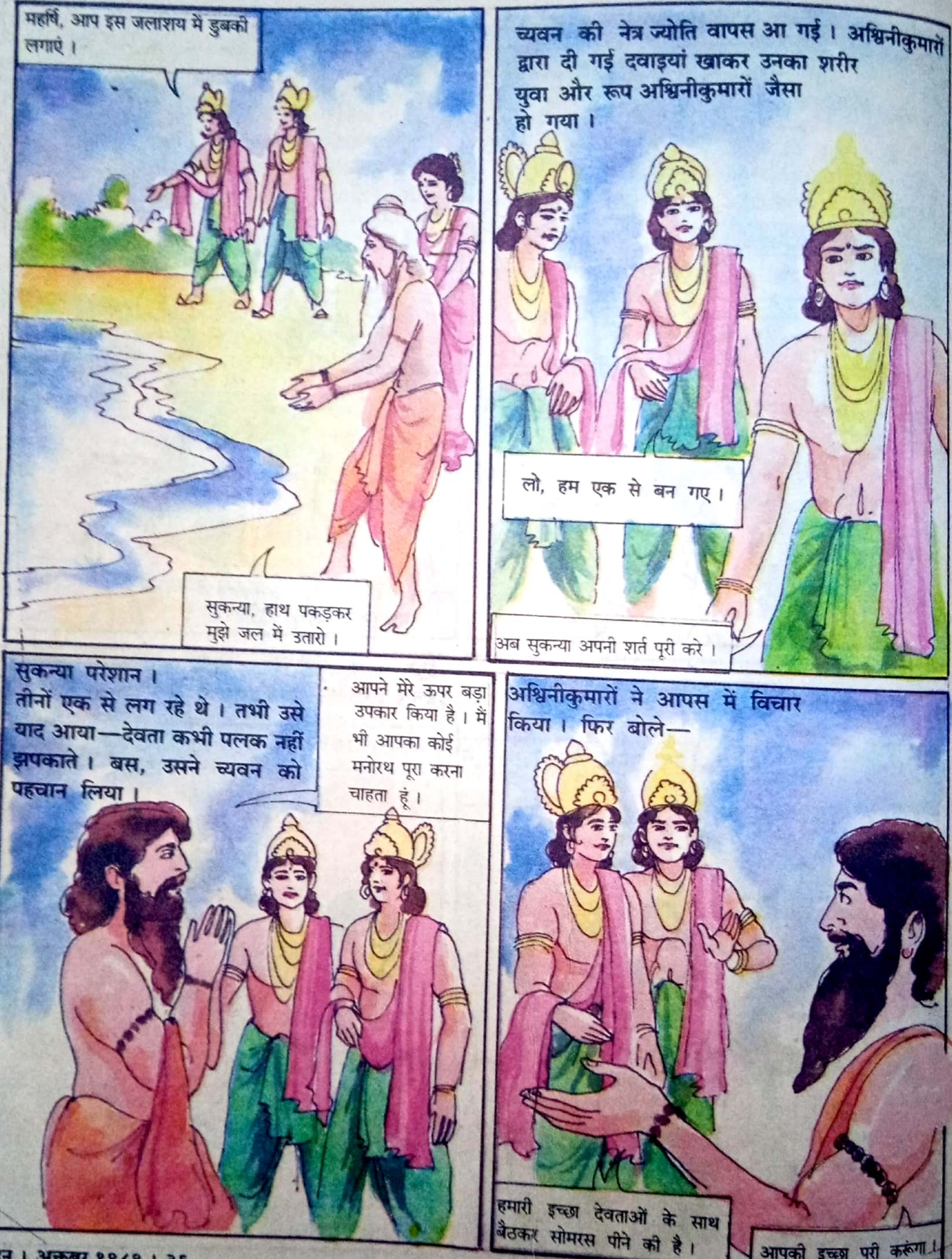
चिड़िया बोली— "मैं गंधर्वराज चित्ररथ की पुत्री हूं। वेश बदलकर धरती पर घूमने आई थी, पर राक्षस ने मुझे कैद कर लिया। वह यह रहस्य जान गया था। मुझसे गंधर्वलोक का रास्ता जानना चाहता था।" फिर कुछ रुक कर बोली— "मुझे खुशी है, तुम लोग लालची नहीं हो। इसीलिए तुम्हारी मदद करने की इच्छा हुई। जाकर टापू के लोगों से कहो, वे सारे हीरे-जवाहरात ले जाएं।"

और फिर चिड़िया दूर जंगल की ओर उड़ गई। रामू और दीनू देर तक उस सुनहरी चिड़िया को उड़ते देखते रहे। वे नाव खोलकर टापू की ओर चल पड़े।


महर्षि च्यवन
महर्षि च्यवन महान तपस्वी थे । एक बार समाधि लगाकर बैठे, तो महीनों बीत गए । शरीर मिट्टी से ढक गया । उसमें दीमकों ने घर बना लिया ।
एक दिन राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या सखियों के साथ वहां घूमने आई ।
अरे, इस मिट्टी के ढेर में गोल-गोल क्या चमक रहा है ? जरा, मिट्टी हटाकर देखें !
राजकुमारी जी, लो, इस नुकीली लकड़ी से हटाओ ।
कोई समाधि में बैठा लगता है ।
लकड़ी की नोंक च्यवन की आंखों में लगी, तो खून बह निकला । महर्षि की समाधि टूट गई ।
अब क्या होगा ?
महर्षि च्यवन ! अरे, यह तो अंधे हो गए, शाप न दे बैठें ।
शर्याति को पता चला । रानी के साथ दौड़े-दौड़े महर्षि च्यवन के आश्रम में आए ।
महर्षि, मेरी पुत्री को क्षमा करें । इससे अनजाने में अपराध हो गया ।
क्षमा . . मगर मेरी आंखें ! तुम्हारी पुत्री ने मुझे असहाय बना डाला है !


राजा-रानी सिर झुकाए खड़े, महर्षि से बोले—
आप असहाय नहीं रहेंगे मुनिवर ! मेरे श्रेष्ठ सेवक आपकी सेवा के लिए रहेंगे ।
अपनी बेटी की ओर देख रहे थे । कुछ सोचकर
नहीं राजन् ! उनके यहां रहने से तपस्या में विघ्न पड़ेगा । . . यह काम तुम्हारी पुत्री ही करेगी । यही इसके कर्म का दंड होगा ।
राजा-रानी महर्षि की बात सुन, परेशान हो उठे
मेरी बेटी यहां जंगल में, वह भी नेत्रहीन ऋषि के साथ ! बताओ, कैसे रहेगी ?
मां, मैं महर्षि की सेवा कर, धन्य हो जाऊंगी । मेरे अपराध का यही प्रायश्चित है ।
सुकन्या जंगल में रहकर महर्षि च्यवन की सेवा करने लगी ।
फलों का आहार कीजिए ।
तुम्हारी सेवा से मेरे सारे कष्ट दूर हो गए ।
एक दिन सुकन्या नदी से जल भरकर ला रही थी । रास्ते में सूर्य के दोनों पुत्र अश्विनीकुमारों ने उसे देखा—
इस निर्जन वन में अकेली क्यों रहती हो ? तुम कोई देव कन्या तो नहीं !
मैं सुकन्या हूं । महर्षि च्यवन की पत्नी । उनकी सेवा करती हूं । मेरे ही कारण . . .


अश्विनीकुमारों ने अपना परिचय दिया। सुकन्या के सेवा धर्म की परीक्षा लेने के लिए वे बोले—
हम जानते हैं, उनके नेत्रों को भी ठीक कर सकते हैं, उन्हें युवा भी बना सकते हैं। पर एक शर्त है।
क्या ?
जब हम महर्षि को अपने जैसा युवा और सुंदर बना दें, तो तुम्हें हम तीनों में से किसी एक को ही अपना पति चुनना होगा।
सुकन्या चाहती थी, महर्षि स्वस्थ हो जाएं, मगर शर्त कठोर थी।
आप पूजनीय हैं। मैं महर्षि से पूछकर आती हूं।
ठीक है, हम प्रतीक्षा करेंगे।
सुकन्या ने सारी बात महर्षि को बताई। सुनकर च्यवन प्रसन्न हो उठे।
शर्त मान लो। उन्हें सादर ले आओ।
जैसी आपकी आज्ञा।



महर्षि, आप इस जलाशय में डुबकी लगाएं ।
सुकन्या, हाथ पकड़कर मुझे जल में उतारो ।
च्यवन की नेत्र ज्योति वापस आ गई । अश्विनीकुमारों द्वारा दी गई दवाइयां खाकर उनका शरीर युवा और रूप अश्विनीकुमारों जैसा हो गया ।
लो, हम एक से बन गए ।
अब सुकन्या अपनी शर्त पूरी करे ।
सुकन्या परेशान । तीनों एक से लग रहे थे । तभी उसे याद आया—देवता कभी पलक नहीं झपकाते । बस, उसने च्यवन को पहचान लिया ।
आपने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है । मैं भी आपका कोई मनोरथ पूरा करना चाहता हूं ।
अश्विनीकुमारों ने आपस में विचार किया । फिर बोले—
हमारी इच्छा देवताओं के साथ बैठकर सोमरस पीने की है ।
आपकी इच्छा पूरी करूंगा ।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २५, अंक १२, नई दिल्ली; अक्तूबर '८९, भाद्रपद-आश्विन, शक सं. १९११

रहते दोस्त हमारे चिड़ियाघर में

एडिनबरा । पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं । बच्चों को उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए । ऐसी जानकारी के लिए चिड़ियाघर सबसे अच्छी जगह है । एडिनबरा में बच्चों को जानवरों के साथ खेलने-मिलने का अवसर दिया जाता है । वहां बच्चे सांपों से खेलते हैं । उन्हें पता चलता है कि सांप कैसे सुनते हैं ? वे टेढ़े-मेढ़े क्यों चलते हैं ? बार-बार जीभ क्यों लपलपाते हैं ?

लम्बी चोंच, पेट पर से सफेद और बाकी पूरे काले । पीठ पर पंख,मगर दो पैरों से चलते हुए पेंग्विन पक्षी—दक्षिणी ध्रुव के बर्फीले प्रदेशों में पाए जाने वाले इन अद्भुत पक्षियों को चिड़ियाघर में देखना एक अनोखा अनुभव है । दोपहर में जब ये चलते हैं, तो लगता है अनुशासन में बंधी कोई सैनिक टुकड़ी मार्च कर रही हो ।



एडिनबरा चिड़ियाघर में पेंग्विन

बहुत सारे उदास चिम्पांजियों को देख, यह न समझना चाहिए कि वे दर्शकों के कारण ऐसा कर रहे हैं । बल्कि अपने किसी साथी के बिछुड़ने का दुःख भी उन्हें उदास कर देता है ।

इस चिड़ियाघर में कई प्रकार की जंगली बिल्लियां, चकत्तेदार चीते, भालू, लम्बी गरदन ताने जिराफ, जेबरा तथा उछलते-कूदते बंदर और मस्ती में भरे पूंछ फटकारते लंगूर देखे जा सकते हैं ।



यह चिड़ियाघर ऐसे पशु-पक्षियों और जानवरों के लिए मशहूर है जो कहीं और नहीं मिलते । यह समतल भूमि पर नहीं है । जगह-जगह छोटी-छोटी पहाड़ियों और घास के मैदान दिखाई देते हैं ।

—श्रीकांत शर्मा

लता मंगेशकर अस्पताल

मारीशस । यहां पर जानी-मानी गायिका लता मंगेशकर के नाम से अस्पताल बनाया जाएगा । इसकी आधारशिला आगामी २१ मार्च को मारीशस के राष्ट्रीय दिवस पर रखी जाएगी ।

हवाई शहर

तोक्यो । जापान में अगली सदी के शुरूआत में एक हवाई शहर बसाया जाएगा । इसमें पांच सौ मंजिलें होंगी ।

बाल मजदूरी कानून

नई दिल्ली । "बाल मजदूरों सम्बंधी कानूनों में संशोधन किया गया है । उनके लिए काम के छह घंटे रखे गए हैं । अब कोई भी बाल मजदूरों से ज्यादा घंटे काम नहीं करा सकेगा । प्रत्येक फैक्ट्री को बाल मजदूरों के लिए अलग से रजिस्टर रखना होगा । केवल चौदह वर्ष और इससे बड़ी आयु के बच्चे ही काम कर सकेंगे ।"—यह बात कही कार्यकारी पार्षद श्री बंसीलाल चौहान ने । वह एक संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे ।

जल्दी मिलेगी चिट्ठी

बम्बई । यहां अगले वर्ष डाक को तेजी से छांटने वाली मशीन लगाई जाएगी । यह मशीन एक घंटे में हजारों पत्रों को छांट देगी । देश भर में पहली बार बम्बई में यह मशीन लग रही है ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

अपने मन की बात हर एक के सामने मत करो ।— चाणक्य

बहुत दूर की खोज

दूर, बहुत दूर, बहुत-बहुत दूर कोई रहता है । जगह इतनी दूर है कि हमारे तेज से तेज चलने वाले यान को पहुंचने में बरसों लगें । शायद धरती की तरह ही वहां शहर बसे हों, कारखाने लगे हों । यदा-कदा धरती पर 'उड़न तश्तरी' देखने के समाचार आते रहते हैं—यानी कहीं दूर के ग्रह से कोई यान आया । उसमें कुछ यात्री थे । देखते ही देखते गायब हो जाते हैं ।

लोग मानते हैं कि ब्रह्मांड में कहीं न कहीं प्राणी हैं—शायद हमारे जैसे या कुछ अलग तरह के । इंसान ने इस दिशा में खोजबीन शुरू कर दी है । वायजर-२ यान ने बारह बरस तक लगातार यात्रा करके कई ग्रहों के बारे में जानकारी दी है । आज के बच्चे बड़े होंगे, तो उन ग्रहों तक पहुंच सकेंगे ।

डाकिए और कुत्ते

लंदन । 'चिट्ठी लीजिए !' इस आवाज के आते ही घर का मालिक बाहर न आए, बल्कि भौंकता हुआ कुत्ता दौड़े तो । दोपहर में डाकिए जब चिट्ठी देने जाते हैं, तो अक्सर कुत्ते उन्हें काट लेते हैं । अब डाक विभाग डाकियों को नए यंत्र देगा । इन यंत्रों से ऐसी आवाजें निकला करेंगी, जिन्हें सुनकर कुत्ते डर जाएंगे ।

भाग्यशाली नम्बर

सिडनी । यहां के एक व्यक्ति ने लाटरी का सबसे बड़ा इनाम जीता है । इनाम की राशि है— ४१ लाख २० हजार आस्ट्रेलियाई डालर । इस इनाम को जीतने की सम्भावना सत्तर लाख लाटरियों में एक बार होती है । क्योंकि सभी लाटरी नम्बरों में जीतने वाले टिकट नम्बर को दो बार पहले स्थान पर आना पड़ता है ।

पृथ्वी ठंडी क्यों

न्यूयार्क । यदि पृथ्वी पर जीवन न होता, तो क्या होता ? तब पृथ्वी बेहद गरम होती । वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी का तापमान, इस पर बसने वाले प्राणियों के कारण ही कम हुआ है ।

धीरे कार क्यों चलाई

पोंटीप्रिड (वेल्स) । एम. टामस पर पचास पौंड का जुर्माना किया गया है । वह तीस कि. मी. प्रतिघंटा की रफ़ार से कार चला रहा था, जबकि उस सड़क पर कम से कम पचास कि. मी. प्रति घंटा की रफ़ार से कार चलानी चाहिए । मजिस्ट्रेट ने कहा कि टामस ने धीमी गति के कारण पीछे के वाहनों को रोक दिया। जबकि टामस ने कहा कि वह फिर से ऐसा करेगा । आखिर इस तेज भागती दुनिया में कोई तो धीरे चलने वाला हो ।

नया अभियान

नई दिल्ली । देश में १० करोड़ २८ लाख बच्चे ऐसे हैं, जो स्कूल नहीं जा पाते । इनमें से आठ करोड़ बच्चे गांव के हैं । दिल्ली में जो बच्चे स्कूल नहीं जाते, उन्हें वहां भेजने के लिए दिल्ली प्रशासन एक अभियान चलाएगा ।

अंगारों पर चले

जयपुर । हालैंड के एमिल स्टेल बैंड ने अंगारों पर चलकर सबको चकित कर दिया । एमिल का कहना है कि मनुष्य अपनी दिमागी शक्ति से कुछ भी सम्भव कर सकता है ।

इनसे मिलिए



डा. एन. एल. वैश्य

बिना चश्मे के बच्चे

नई दिल्ली । नजर कमजोर हो, तो छोटे बच्चों को भी चश्मा लग जाता है । आजकल चश्मा लगाने वाले बच्चों की तादाद तेजी से बढ़ रही है । लेकिन चश्मा पहनने वाले बच्चों के मन में हीनता आ जाती है । अक्सर उन्हें खेल-कूद में कठिनाई होती है । राजधानी के नेत्र विशेषज्ञ डा. एन. एल. वैश्य कहते हैं कि अब चश्मा लगाना जरूरी नहीं रहा । मामूली-सा आपरेशन करने पर दूर की दृष्टि का दोष (मायोपिया) ठीक किया जा सकता है ।

चश्मे का नम्बर बहुत ज्यादा हो, तो वह कम हो सकता है । उन्होंने अनेक बच्चों के आपरेशन किए हैं । उनके चश्मे छुड़ा दिए हैं या नम्बर कम कर दिए हैं । यह विधि रूसी नेत्र चिकित्सक डा. फ्योदोरोव की है । डा. वैश्य पिछले ग्यारह बरस से ऐसे आपरेशन कर रहे हैं । उन्होंने बच्चों की आंखों की बीमारी 'सिप्रंग कटार' की आयुर्वेद दवा भी तैयार की है । हजारों बच्चों को उन्होंने इस बीमारी से मुक्त किया है ।

एक हजार वर्ष का शहर

कटक । उड़ीसा का यह शहर एक हजार वर्ष का हो गया । इसे राजा नृपतकेशरी ने सन् ९८९ में बसाया था । इस शहर की एक हजारवीं वर्षगांठ मनाने के लिए धूमधाम से तैयारियां हो रही हैं ।

खोया हुआ बेटा

काहिरा। एक महिला से भिखारी ने भीख मांगी। महिला ने भीख दी और आगे बढ़ गई। मगर थोड़ी देर बाद लौट आई। भिखारी कोई और नहीं, उसका खोया हुआ बेटा ही था। एक बार किसी ने उसकी पिटाई कर दी थी और वह घर छोड़कर चला गया था। महिला ने आठ साल बाद बेटे को पहचान लिया था।

बच्चे का आपरेशन

बड़ोदरा। एक बच्चे ने गलती से गंधक का तेजाब पी लिया। बच्चे की भोजन की नली गल गई। वह कुछ भी खाने-पीने के योग्य न रहा। डाक्टरों ने बच्चे का आपरेशन किया। प्लास्टिक सर्जरी से उन्होंने बच्चे को ठीक कर दिया।

सिकंदर के सिक्के

अदन। उत्तरी यमन में सिकंदर के समय की कुछ गुफाएं और एक मंदिर मिला है। गुफाओं में सिकंदर के समय के सिक्के मिले हैं। वहां ईश्वर को भिन्न-भिन्न रंगों से चित्रित किया गया है।

सत्तर वर्ष बाद

मद्रास। 'ब्रोसेन मैटकाफ' नाम का पुच्छल तारा सत्तर वर्ष बाद फिर से दिखाई दे रहा है। इस तारे की खोज सन् १८४७ में ब्रोसेन ने की थी। सन् १९१९ में मैटकाफ नाम के वैज्ञानिक ने इसे देखा था। तबसे इसका नाम ब्रोसेन मैटकाफ पड़ गया।

आंचल

नई दिल्ली। दिमागी रूप से पिछड़े बच्चों के लिए नई दिल्ली नगर पालिका ने 'आंचल' बनाया है। मंदबुद्धि बच्चों की शिक्षा के लिए जो भी तकनीक और उपकरण जरूरी हैं, वे सब आंचल में मौजूद हैं। इसमें ३१ कमरे हैं। स्कूल को बनाने पर ८४ लाख रुपए खर्च हुए हैं।

हवाई अड्डे पर बाज

लंदन। अक्सर पक्षियों के कारण विमान दुर्घटनाएं होती रही हैं। अब यहां के हवाई अड्डों पर पक्षी भगाने के पारंपरिक तरीके अपनाए जा रहे हैं। वहां बहुत-से बाज पाले गए हैं। ये बाज पक्षियों पर कड़ी नजर रखते हैं। उनके रहते दूर-दूर तक पक्षी नजर नहीं आते हैं।

स्कूल में शेर

नैरोबी। यहां एक शेर चिड़िया घर से भागकर बच्चों के स्कूल के पास आ गया। बच्चों ने उसे जंगली कुत्ता समझा। वे उसे पत्थर मारने लगे। एक अध्यापिका ने आकर यह देखा, तो उसने चिड़िया घर के अधिकारियों को फोन किया। करीब तीन घंटे में उसे पकड़ा जा सका।

करोड़ों का जन्म दिन

टेनजियर्स। एक जन्म दिन और खर्चा ४.५ करोड़ रुपए। जन्मदिन था एक पत्रिका के प्रकाशक मेलकाम फोर्ब्स का। फोर्ब्स ७९ वर्ष के हैं। उनका जन्म दिन मनाने के लिए देश-विदेश के जाने-माने करीब एक हजार लोग आए।

ईमानदार महिला

शरजाह। शीला जैकब नाम की भारतीय महिला को बहुत सारे सोने के आभूषण हवाई अड्डे पर पड़े मिले। उसने वे सारे आभूषण अधिकारियों के पास जमा कर दिए। शीला को ईमानदारी का प्रमाण-पत्र और इनाम दिया गया है।

जंगल में भटके

वाशिंगटन। दस वर्ष का नन्हा माइक और चौरासी वर्ष के उसके बुजुर्ग दादा जी। दोनों घने जंगल में खो गए। नन्हा माइक चार दिन तक अपने बूढ़े दादा जी को जंगली बेर लाकर खिलाता रहा। एक खोजी दल की मदद से वे जंगल से बाहर निकल सके।

नन्हे समाचार

- भूविज्ञानी कहते हैं कि श्रीनगर में शंकराचार्य पहाड़ी ४० लाख साल पुराना एक ज्वालामुखी है।
- ह्वेलों ने एक नाव उलट दी, तो उसमें सवार बूढ़े पति-पत्नी समुद्र में जा गिरे। वे प्राणरक्षक नौका में ६६ दिन तक लहरों पर तिरते रहे। फिर उन्हें बचा लिया गया।
- चीन में एक आदमी हर रोज हजारों मक्खियां मारता है। उसका कहना है—'ऐसा मैं दूसरों को स्वस्थ रखने के लिए करता हूं।'
- पश्चिमी जर्मनी के एक कस्बे में एक सफेद बगुले ने बहुत आतंक फैला रखा है। वह जगह-जगह नुकीली चोंच से प्रहार करता घूमता है।
- दिल्ली के समस्त स्कूलों में फर्स्ट एड की शिक्षा दी जाएगी।
- अमरीकी वैज्ञानिकों ने नई विशाल आकाश गंगा खोज निकाली है।
- अलीपुर चिड़ियाघर में रहने वाले एक कछुए की उम्र २०० वर्ष है।
- पेरिस में फिलिप नामक व्यक्ति ३३० फुट की ऊंचाई पर बंधे तार के ऊपर २३०० फुट तक चला। तार एफिल टावर और एक भवन के बीच बंधा हुआ था।
- बीजिंग एशियाई खेलों में २७ प्रतियोगिताएं होंगी।
- ईरान में रेलगाड़ियों के अंदर धूम्रपान पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
- सफेद शेरों के बारे में एक सर्वेक्षण से पता चला है कि खुले वन में वे २० वर्ष तक जीवित रहते हैं, तो कैद में केवल १२ वर्ष।
- दुनिया में पक्षियों की ५० से अधिक जातियां लुप्त होती जा रही हैं। कारण है उनका अंधाधुंध शिकार।

सचित्र समाचार



तीन सौ वर्ष का कलकत्ता : समारोह में उस समय की गाड़ी सड़क पर दौड़ते हुए।



मूंछें बनी मुकुट : ताकेशी सेतो को तोक्यो में हुई मूंछ-दाढ़ी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला।



वरुण (नेप्च्यून) का चंद्रमा ट्राइटन : वायजर-२ ने जो चित्र भेजे हैं, उससे पता चला कि इस चंद्र पर गुलाबी बर्फ के पहाड़ हैं।



जोधपुर के मूक-बधिर बच्चों ने कठपुतली नृत्य का प्रदर्शन किया।

हिरोशिमा नागासाकी कभी न बनें : दुनिया के बच्चों को शांति मिले। बच्चों का प्रदर्शन।



'बच्चों के अक्षर ज्ञान की समस्याएं और उनकी पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी' विषय पर पेरिस में एक विश्व सम्मेलन हुआ। भारत के प्रतिनिधि थे प्रसिद्ध समाज शास्त्री और नंदन के लेखक श्री सुरेंद्र अग्रवाल।



मोतियों का हार

—ब्रह्मदेव

बहुत पुरानी बात है। बर्मा की महारानी अपने सहेलियों के साथ स्नान करने किसी झील के किनारे गईं। सबने अपने गहने-कपड़े उतारकर किनारे पर रख दिए। नहाकर लौटीं, तो महारानी का मोतियों का हार नदारद था।

सबने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने। जाकर राजा को सूचना दी कि महारानी का हार झील के किनारे से गायब हो गया है। राजा ने तुरंत अपने एक मंत्री को आदेश दिया—"हार के चोर की फौरन खोज की जाए।"

मंत्री सैनिकों को लेकर झील के किनारे पहुंचा। सबको चारों ओर जाकर चोर की तलाश करने भेजा। झील से कुछ दूर पर एक लकड़हारा पेड़ पर चढ़ा, लकड़ियां काट रहा था। वह राजा के सैनिकों को देखकर घबरा गया। सैनिक उसे पकड़कर मंत्री के सामने लाए। मंत्री ने डांटते हुए पूछा—"क्या तुमने महारानी का मोतियों का हार चुराया है?"

लकड़हारे ने थर-थर कांपते हुए उत्तर दिया—"जी हुजूर, लेकिन हार अब मेरे पास नहीं है। मैंने उसे तुरंत जाकर मशहूर जौहरी खिनमौं को दे दिया है।"

लकड़हारे को जेल भिजवाकर मंत्री और सैनिक जौहरी के यहां पहुंचे। जौहरी इन सबको देखकर घबरा गया। मंत्री ने पूछा—"क्या लकड़हारे ने तुम्हें महारानी का मोतियों का हार दिया है?"

जौहरी ने घबराकर उत्तर दिया—"जी हां, दिया तो है। लेकिन उसे उसी समय यहां की एक धनी महिला माटिनिओं ले गई।"

जौहरी को भी मंत्री ने जेल भिजवा दिया। तब माटिनिओं के घर की ओर लपके। माटिनिओं से भी मंत्री ने यही पूछा कि जौहरी के यहां से क्या वह महारानी का मोतियों का हार लाई है।

माटिनिओं ने उत्तर दिया—"वह हार मैंने अपने पिता को दे दिया है।" माटिनिओं को जेल भिजवाकर मंत्री ने उसके पिता को भी पकड़ मंगवाया। पिता ने मान लिया कि माटिनिओं ने मोतियों का हार उसे दिया था।

इसी बीच शाम हो गई। अधीर राजा मंत्री की खोज करते हुए जेल पहुंच गया। मंत्री ने राजा को सारा हाल सुनाया। राजा को कुछ दाल में काला नजर आया। वह सोचने लगा—'इतनी जल्दी मोतियों का हार चार-चार आदमियों तक कैसे पहुंच गया?' उसने मंत्री को आज्ञा दी—"इन चारों को रात भर जेल के एक ही कमरे में बंद रखा जाए।" बाहर आकर उसने मंत्री से कहा—"मुझे चारों की बात में कुछ गड़बड़ नजर आ रही है। इसलिए रात भर अपने किसी विश्वसनीय आदमी को जेल के बाहर रखो, जो इनकी बातें सुन सके।"

यही किया गया। रात में जो बातें उस विश्वसनीय नौकर ने सुनी, वे इस प्रकार थीं—सबसे पहले



लकड़हारा बोला—''जौहरी महाशय, मुझे क्षमा करें। मैंने तो आज तक महारानी का हार देखा भी नहीं। मुझे भय था कि मेरे मना करने पर कहीं वह मुझे जान से मार ही न दें। आप इस नगर के प्रमुख व्यक्ति हैं। इसलिए मैंने सोचा, आप कोई न कोई उपाय ढूंढ़ ही लेंगे। बस, मैंने आपका नाम ले दिया।''

जौहरी महोदय ने सफाई दी—''मुझे भय था, अगर मैं कहता कि लकड़हारे ने मुझे हार नहीं दिया, तो बेचारा लकड़हारा बेमौत मारा जाता। इसलिए मैंने धनी महिला माटिनिओं का नाम ले दिया।''

माटिनिओं ने बताया—''जब मंत्री और राजा के आदमी अचानक पहुंचे, तो मैंने सोचा कि जौहरी ने मेरा नाम बताया है, तो अवश्य ही कोई गम्भीर समस्या होगी। मैंने पिता जी का नाम इसलिए ले दिया कि वह अवश्य इस समस्या का समाधान ढूंढ़ लेंगे।''

जब सब बोल चुके, तो लकड़हारे ने कहा—''जब मैं लकड़ी काट रहा था, तो मैंने एक बहुत बड़े बंदर को झील की ओर से आते हुए देखा था। सम्भव है, उस बंदर ने वह मोतियों का हार उठा लिया हो। आप चाहें, तो यह बात राजा को बता दें।''

प्रातः होते ही चारों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन चारों को जेल से छोड़ दिया गया था।

मंत्री ने झील के आसपास अपने आदमी भेजे, जो पांच-छह बंदरों को पकड़ लाए। मंत्री ने उन सब बंदरों को चांदी के हार पहनवा दिए। फिर उन्हें वापस झील के किनारे छुड़वा दिया। अपने आदमियों से कहा कि इन बंदरों का ध्यान रखो।

घंटे भर बाद उन आदमियों ने देखा कि एक बड़ा बंदर वहां आया। सब बंदरों के गले में हार देख, वह वापस गया और मोतियों का हार ले आया। फिर उसे पहन लिया। उस बड़े बंदर को राजा के आदमियों ने पकड़ लिया। इस प्रकार महारानी का मोतियों का हार मिल गया।

राजा ने मंत्री की बुद्धि पर खुश होकर उसे पुरस्कार दिया। ●

रहो अंधेरे में

—सुखवीर

एक लड़का जंगल में गुलेल से निशाना लगाता घूम रहा था कि गुलेल से छूटा एक ढेला पेड़ पर बैठे उल्लू को जाकर लगा।

उल्लू चोट खाते ही उड़ा और मित्र कौवे के पास जाकर बोला— ''बहुत सख्त चोट आई है मुझे। देखो, जख्म हो गया है।''

''फिक्र न करो।'' —कौवे ने कहा—''मैं तुम्हें इलाज के लिए कोयल के पास ले चलता हूं। वह बड़ी सयानी है। हर बीमारी का इलाज कर सकती है।''

वे कोयल के पास गए। कोयल ने उल्लू का मुआयना करने पर पाया कि सख्त हो चुके कीचड़ का एक छोटा-सा टुकड़ा जख्म में धंस गया था। उसने उल्लू को धीरज देते हुए कहा— ''घबराने की जरूरत नहीं है। तुम ठीक हो जाओगे।'' फिर उसने इलाज करने की अपनी फीस बताई।

''जो भी मांगोगी, देने को तैयार हूं। बस, मुझे ठीक कर दो।'' —उल्लू ने कहा।

कोयल जानती थी कि उल्लू पर भरोसा नहीं किया जा सकता। सो उसने कौवे की ओर देखा, जैसे पूछना चाहती हो कि क्या वह उस पर विश्वास करे?

''तुम फीस की चिंता न करो और इलाज शुरू करो। देखो, बेचारा कितनी तकलीफ में है।'' —कौवे ने कहा।

''तो ठीक है।'' —कोयल बोली— ''मैं इसका सिर्फ पानी से इलाज करूंगी—प्राकृतिक इलाज। और वह सौ फीसदी शर्तिया इलाज होगा। यहां से कुछ दूर साफ पानी का एक पोखर है। मरीज को उस पोखर में ले जाकर बैठाओ। कुछ ही देर में आराम आने लगेगा। जब तक पूरा आराम न आ जाए, पानी में ही बैठे रहना।''

''धन्यवाद!'' —उल्लू ने कहा— ''ठीक होते ही मैं तुम्हारी फीस चुका जाऊंगा।'' फिर वह कौवे को

साथ लेकर पोखर की ओर उड़ा । वहां जाकर पोखर के पानी में आराम से बैठ गया । कुछ देर के बाद उसने कौवे से कहा—"मुझे कुछ आराम महसूस हो रहा है । अब तुम बेशक जाओ । मैं ठीक होने पर खुद ही चला जाऊंगा ।"

कौवा चला गया । उल्लू को पानी में बैठे हुए काफी समय हो गया था । इस दौरान उसके जख्म में धंसा हुआ कीचड़ का टुकड़ा पानी में घुलकर निकल गया, तो उसकी सारी पीड़ा जाती रही । उसने सुख की सांस ली और पानी में से निकलकर चला गया । रास्ते में उसे कोयल की फीस चुकाने का खयाल आया । उसने मन में कहा—'यह भी कोई इलाज है ! कोई दवा-दारू दी होती, तो फीस देता । पानी में बैठने की सलाह देने की फीस कैसी ?'

कुछ दिन बीत गए । कोयल को उल्लू के ठीक हो जाने के बारे में कौवे से पता लग गया था और वह अपने इलाज पर खुश थी । पर साथ ही उसे अफसोस भी था कि उल्लू उसकी फीस चुकाने नहीं आया । आखिर एक दिन उसने खुद उल्लू से मिलकर अपनी फीस मांगी ।

"कैसी फीस ?" —उल्लू ने कहा— "वह भी कोई इलाज था !"

"पर तुम्हें आराम तो आ गया न ?" —कोयल ने पूछा ।

—"हां । पर तुम्हारा तो दवा-दारू पर कुछ भी खर्च नहीं हुआ । सो फीस किस चीज की मांगती हो ?"

—"फीस दवा-दारू की नहीं, सही मुआयना करने और इलाज करने की मांगती हूं ।"

"मैं कुछ भी देने को तैयार नहीं हूं । तुम जो चाहो कर लो ।" —उल्लू ने कहा और चला गया ।

उसके रवैये से कोयल को और भी दुःख हुआ । तब उसने कौवे के पास जाकर सारी बात बताई ।

कौवे ने कहा—"चलो, उल्लू के पास चलते हैं, और फीस लेकर ही लौटेंगे ।"

पर उल्लू उन्हें कहीं न मिला ।

"अब तुम्हें उसकी फीस देनी चाहिए । आखिर तुम उसके दोस्त हो ।"—कोयल ने कौए से कहा ।

"मैं कहां से दूं ?" —कौवा बोला— "मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है ।"

—"तो फिर उसे लेकर क्यों आए थे ?"

—"ठीक है, तुम्हें जो करना है, कर लो ।"

कौवे की उद्दंडता देखकर कोयल और दुखी हुई । वह फीस छोड़ भी सकती थी, पर अब वह इस मामले को वहीं छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी । सो उसने पक्षियों की पंचायत के सामने मसला पेश किया ।

पंचायत में फैसला हुआ कि उल्लू के लापता होने की सूरत में कौवे को फीस चुकानी चाहिए ।

"पर मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है ।" —कौवे ने कहा ।

"इस हालत में तुम्हें कोयल की सेवा करनी होगी और उस सेवा के रूप में फीस चुकानी होगी ।" —पंचायत के मुखिया ने कहा ।

"कैसी सेवा ?" —कौवे ने पूछा ।

—"भविष्य में तुम्हें इसके अंडों की रखवाली करनी होगी ।"

"ठीक है, पर उल्लू को कोई सजा नहीं दी जाएगी क्या ?" —कौवे ने कहा ।

"वह खुद ही सजा भुगत रहा है ।" —मुखिया बोला— "उसका डर ही उसकी सजा है । वह तुम दोनों से डरकर किसी अंधेरी जगह छिपा हुआ है । वह रोशनी में आने से डरता है । कुछ अरसे के बाद उसकी आंखें रोशनी को सहन नहीं कर सकेंगी और वह सिर्फ रात के समय ही बाहर निकला करेगा । उसे दिन देखना नसीब नहीं होगा ।"

तब से अब तक कौवा कोयल के अंडों की रखवाली करता आ रहा है और उल्लू सिर्फ अंधेरे में ही बाहर निकलता है । ●



नीले से सफेद

—रमेशचंद्र शर्मा

किसी नगर में शुद्धक नाम का एक धोबी रहता था। वह कपड़े धोने तथा रंगने की कला में विशेष निपुण था। वह नगर सेठ के कपड़े भी धोता था। एक समय की बात है कि भूल से शुद्धक ने सेठ के कपड़ों को नीले रंग से भरे हुए पात्र में डाल दिया। बहुत देर के बाद जब उसे इस बात का पता चला, तब तक सारे कपड़े नीले हो चुके थे। वह डर गया। सोचने लगा— 'नगर सेठ के इतने बहुमूल्य कपड़े हैं। अब इनकी कीमत कैसे चुकाऊंगा। सेठ राजा का मित्र है। वह मेरी शिकायत राजा से करेगा, तो राजा मुझे कठोर दंड देगा।' इसी भय से वह कांप उठा। उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा— "मैंने नगर सेठ के बहुत-से बहुमूल्य वस्त्र अज्ञानवश नीले रंग में डाल दिए हैं। अब मुझे दंड मिलना निश्चित है। क्यों न हम यहां से कहीं चले जाएं, वर्ना जीवन भर पछताना पड़ेगा।" पत्नी भी इससे सहमत थी। उन्होंने घर का सारा सामान समेट लिया और अज्ञात दिशा में जाने की तैयारी करने लगे। इसी समय उसकी पुत्री अपनी एक सहेली मल्लाह की पुत्री से मिलने गई। वहां जाकर सहेली से बोली— "मुझसे जाने-अनजाने में कोई अपराध हुआ हो, तो क्षमा करना।"

यह सुनकर सहेली के नेत्र भर आए। वह आकुल होकर पूछने लगी— "सखी, आज तुम मुझसे ऐसी बातें क्यों कर रही हो?"

धोबी की कन्या ने कहा— "मेरे पिता ने नगर सेठ के बहुमूल्य वस्त्र नीले रंग में डाल दिए हैं। प्रातःकाल इस बात का जब पता चलेगा, तो नगर सेठ राजा से शिकायत करेगा। तब राजा उन्हें बड़ा कठोर दंड देंगे। इसी डर से हम सब यहां से जा रहे हैं। इसीलिए मैं तुमसे अंतिम बार मिलने आई हूं।"

मल्लाह की पुत्री बोली— "यदि ऐसी बात है, तो तुम कहीं न जाओ। शीघ्र जाकर अपने पिता को रोक दो। यहां से पूर्व-उत्तर के कोने में एक जलाशय है, उसमें किसी समय मेरे पिता ने जाल डाला था। वह जाल काले सूत का बना हुआ था। जलाशय में डालते ही सफेद हो गया। तब कौतूहल वश मेरे पिता भी जल में कूद गए। मेरे पिता काले रंग के थे, वह भी गोरे हो गए। केवल शरीर ही नहीं, उनके काले बाल भी सफेद हो गए। तब से वहां कोई नहीं जाता है। मेरी मानो, तुम उसी में इन कपड़ों को धुलवाओ। इससे सब नीले कपड़े सफेद हो जाएंगे।"

धोबी की कन्या सहेली की बात सुनकर दौड़ती हुई, अपने पिता के पास पहुंची। सारी बात बताई। उस की बात सुनकर धोबी ने कहा— "बेटी, मैं इतने वर्षों से कपड़े धो रहा हूं। मुझे पता है कि नीला रंग मिटना कठिन है।" धोबी की बेटी बोली— "पिता जी, एक बार सब वस्त्रों को लेकर चलिए तो सही। वहां जाकर धोने से नीले कपड़े सफेद हो जाएंगे। यदि रंग नहीं छूटा, तो अभी रात्रि शेष है। हम वहीं से आगे की दिशा में चले जाएंगे।"

बेटी की यह बात सुनकर, धोबी नीले कपड़ों को लेकर उस जलाशय की ओर चल दिया। मल्लाह की कन्या भी साथ थी। वही उन्हें रास्ता दिखाती वहां ले गई थी। धोबी ने जल में घुसकर उन वस्त्रों को धोया। धोते ही वे सभी नीले वस्त्र सफेद हो गए। उनका रंग छूट गया। इससे प्रसन्न होकर धोबी ने मल्लाह की पुत्री को धन्यवाद देते हुए कहा— "अब हम ये सभी वस्त्र उन नगर सेठ को लौटा देंगे। तुम्हारे कारण ही आज राजा के दंड से बच पाए।" घर जाकर धोबी ने वे वस्त्र नगर सेठ को दिए। वस्त्रों के साथ ही धोबी के शरीर और केशों को सफेद हुआ देखकर, सेठ ने पूछा— "यह क्या! कल तो तुम्हारे बाल काले थे!"

धोबी ने सेठ को सारी बात बताई। सेठ के मन में भी उत्सुकता हुई। वहां जाकर उन्होंने देखा— सरोवर में गिरते ही चीजें सफेद हो जाती थीं। सेठ ने उस स्थान की सफाई कराई। वहां धर्मशाला बनवाई। जल्दी ही बड़ी संख्या में लोग उस पवित्र सरोवर के दर्शन करने आने लगे। आज वह सरोवर तो नहीं, लेकिन वह स्थान शुक्ल तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है।

बांसुरी के बोल

— जया रमेश



गंगा किनारे एक ग्वाला परिवार रहता था। उस परिवार में कुल मिलाकर तीन सदस्य थे— भाई और उसकी पत्नी तथा देवर। जिसका नाम था केसर।

एक बार गंगाजी में भयंकर बाढ़ आई। उनका घर, आंगन, खेत-खलिहान सब बाढ़ की चपेट में आ गए। पशु धन के नाम पर भी कुछ न बचा। अब गुजर-बसर भी उनके लिए कठिन हो गई।

घर के सभी काम-काज में केसर अपनी भाभी का हाथ बंटाता। वह जंगल से सूखी लकड़ियां बटोरकर लाता, तब कहीं उसकी भाभी चूल्हा जलाती। दो-चार रोटियां पकाती और सौ-सौ ताने देकर देवर को खाना देती।

एक दिन लकड़ियां बटोरते हुए केसर को बरगद के पेड़ की खोह में एक बांसुरी मिली। उसने लपककर बांसुरी उठा ली। बांसुरी उठाते ही घुघरुओं की आवाज आई। घबराकर उसने इधर-उधर देखा। वहां कोई न था। बांसुरी को देखकर उसे अपने बचपन की याद हो आई— कैसे पिता ने उसे जतन से बांसुरी बजाना सिखाया था। जल्दी ही वह कई धुनें भी निकालने लगा था। लेकिन भाग्य में कुछ और ही था। महामारी ने उसके माता-पिता को छीन लिया। तब भाई-भाभी उसे अपने साथ ले आए। मगर भाभी को वह फूटी आंख न सुहाता था। केसर हमेशा बहुत खिन्न और उदास रहता था।

बांसुरी मिलने पर वह लकड़ियां बटोरना भूल गया। पेड़ की छांह में बैठकर, बांसुरी बजाने लगा। धुन पर धुन निकलती गईं। पता ही न चला। रात ढलने लगी थी। जैसे-जैसे रात गहरी होती गई, बांसुरी का स्वर दर्द में डूबकर करुण होता गया। केसर की आंखों से अविरल आंसू बहने लगे। रोते-रोते वह अचेत हो गया।

तभी पेड़ों के पत्तों में तेजी से सरसराहट हुई। सफेद वस्त्रों में लिपटी एक सुंदर आकृति ने बांसुरी के छेदों पर अपना हाथ रख दिया। सुर बंद हो गया। वह बोली— "केसर, अपने दुःख को इतना बढ़ाना ठीक नहीं।"

अपना नाम सुनकर केसर भौंचक्का रह गया। उसने आंखें खोलीं — "कौन हो तुम ? क्या तुम परी हो.... ?" उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"हां, मुझसे तुम्हारा दुःख देखा न गया।....फिर इस बांसुरी में मेरे प्राण बसते हैं। इसकी मधुर तान मुझे सुख देती है।"— कहकर परी हंसने लगी। परी हंसती जाती और उसके मुख से सफेद मोती झड़ते जाते। केसर गिरे हुए मोती उठाने लगा। लेकिन हाथ में आते ही मोती फूल बन जाते।

"तुम परी हो, तो मेरा दुःख दूर करो।"— केसर बोला— "मेहनत और मजदूरी के बदले में भाभी से ताने क्यों पाता हूं ? मैं क्या करूं, कहां जाऊं ?"

"कहीं नहीं, घर जाओ। धैर्य रखो। जाओ, गऊ माता की सेवा करो।"— कहकर परी गायब हो

गई। बांसुरी भी पता नहीं कहां लोप हो गई! भाभी के डर के मारे वह तेज कदमों से घर की ओर भागने लगा। सामने चरागाह में दो गऊएं उसे घास चरती हुई दिखाई दीं। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। दूर-दूर तक कोई न था। वह समझ गया, ये गाएं परी ने उसे दी हैं। वह गायों को हांकते हुए घर ले गया।

गाएं देखकर उसकी भाभी बहुत प्रसन्न हुई। उस दिन उसने केसर को भरपेट भोजन दिया। कुछ दिन तक घर में उसकी आव-भगत होती रही। फिर वही हाल। एक दिन भाभी ने ताना मारा— "न जाने कहां से गाएं चुराकर ले आया।" सुनकर रोटी का कौर उसके हलक से नीचे न उतरा। उसका मन रो उठा।

केसर का दुःख देखकर गायों का दूध सूखने लगा। भूरी गाय बीमार रहने लगी। भाभी उन्हें भी भरपेट चारा नहीं डालती थी। एक दिन भाभी ने केसर व गायों को निकाल बाहर किया। केसर गायों को लेकर उसी बरगद के पेड़ के नीचे आ गया, जहां उसे परी मिली थी। उसने खोह में बांसुरी ढूंढ़ी, तो मिल गई। बांसुरी बजाने लगा। कुछ देर बाद उसे परी की झंकार सुनायी दी। परी ने कहा— "अरे, चिंता



क्यों करते हो? गायों की सेवा-टहल करो। सारे दुःख दूर हो जाएंगे।"

कहकर परी गायब हो गई। केसर ने गायों के लिए घास-फूस का छप्पर डाला। स्वयं भी उसी में रहने लगा।

उसकी मरियल गाएं स्वस्थ हो गईं। दोनों गायों ने एक-एक बछिया को जन्म दिया। इस तरह दूध घी घर में होने लगा। गऊ धन भी बढ़ने लगा। ज्यादा दूध हुआ, तो केसर उसको बेचने लगा। यह उसकी आय का अच्छा साधन बन गया।

धीरे-धीरे यह बात केसर के गांव तक जा पहुंची। उसके सुखी-संपन्न होने की खबर उसके भाई-भाभी को मिली। अब इनकी हालत खराब हो गई थी। भाभी बीमार रहने लगी थी। भाई-भाभी दोनों केसर को गांव लौटाने के लिए गए। भाभी ने अपने किए की क्षमा मांगी — "तुम्हें बेघर करके हमें बड़ी सजा मिल गई। तुम्हारे बिना तो घर भी भुतहा हो गया।" यह सब सुनकर भी केसर टस से मस न हुआ। उसके मन में अहंकार जाग उठा। उसने भाई-भाभी को डांटकर वापस भगा दिया।

उनके लौटने पर घमंड में भरे केसर ने पेड़ की खोह में जाकर बांसुरी निकाली। मधुर तान छेड़ने लगा, लेकिन बासुरी के स्वर जैसे बेसुरे हो गए थे। उसने बहुत प्रयत्न किया। मधुर राग न निकल सका। गुस्से में भरकर उसने बांसुरी पटक दी। तभी वही परी उसके सामने आ खड़ी हुई। बोली— "इतना अहंकार ठीक नहीं केसर! तुम्हें भाई-भाभी के साथ ऐसा कठोर व्यवहार नहीं करना चाहिए था। जब वे क्षमा मांगने आए थे, तो क्षमा कर देते। वे बेचारे परेशान हैं। जाओ, घर लौट जाओ। अब तुम्हारा वहां मान बढ़ेगा। संकट में अपने भाई के काम आओ।"

परी की बात सुनकर केसर ने गलती मान ली। परी चली गई।

सुबह होते ही केसर अपनी गायों के साथ घर की ओर लौट पड़ा। घर पहुंचा, तो भाभी ने गायों के चरण छूकर उनकी और केसर की अगवानी की। ●

दीप जले

बहुत दिन हुए बिजनौर जिले के आसपास दूर तक फैले हुए जंगलों में गम्भीरसिंह नाम का एक डाकू रहता था। गम्भीरसिंह बहुत बुद्धिमान था। उसे अदृश्य हो जाने की कला भी आती थी, इसीलिए वह किसी की पकड़ में नहीं आता था।

गम्भीरसिंह का बेटा आठ-नौ बरस का हो गया था। कई बार वह उसे भी अपने साथ ले जाता। और अपनी विद्या सिखाने का यत्न करता। पर बेटे का मन इन कामों में नहीं लगता था।

एक रात की बात, बाप बेटे दोनों घर से निकलकर जंगल में बढ़ चले।

"बापू, आज हम किस ओर जा रहे हैं?"— बेटे ने पूछा।

बहुत दूर, जंगल के बीचों बीच से आती हुई प्रकाश की किरण को दिखाकर गम्भीरसिंह ने कहा— "हम वहां जा रहे हैं।"

चलते-चलते बेटे ने पूछा— "पिता जी, आप वहां पहले भी कभी गए हैं ?"

गम्भीरसिंह ने याद करते हुए कहा— "अगर मुझे ठीक से याद है यह तेरहवीं बार है। इससे पहले बारह बार हम वहां डाका डाल चुके हैं।"

बेटे ने हैरान होकर कहा— "बारह ! बारह बार आप उनका सारा धन छीनकर उन्हें कंगाल बना चुके हैं। लेकिन उनके घर में अब भी दीपक जल रहा है। एक हम हैं, जिनके घर में आज तक कभी दीपक जला ही नहीं।"

गम्भीरसिंह जैसे सोते से जागा— "तू ठीक कहता है बेटे, हम रोज रात को अपने घर में अंधेरा करके दूसरी जगह प्रकाश ढूंढने निकल पड़ते हैं। लेकिन तू ने मेरी आंखें खोल दीं हैं। — कहकर गम्भीरसिंह लौट चला। अब वह वापस जा रहा था। उस रात के बाद कभी किसी ने गम्भीरसिंह डकैत के बारे में नहीं सुना।

—सुनीति

भूख

काशी में एक निर्धन ब्राह्मण काशीनाथ भट्ट रहा करता था। उसके परिवार में तीन जने थे। काशीनाथ भट्ट, उसकी पत्नी तथा इकलौता बेटा।

काशीनाथ इधर-उधर पूजा-अर्चना कर किसी प्रकार परिवार का भरण-पोषण करता था।

एक दिन एक दुष्ट विचार काशीनाथ के मन में आया। उसने सोचा—'क्यों न राजमहल में चोरी की जाए। वहां तो किसी चीज का अभाव नहीं है।'

बस, एक रात काशीनाथ मौका देख, राजमहल में घुस गया। उस समय राजा आनंदपाल गाढ़ी निद्रा में थे। वह पहले खजाने में घुसा। धन देख, उसकी इच्छा चोरी करने की हुई, किंतु फिर विवेक जाग गया। उसने सोचा—'इस धन पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।'

इसी सोच-विचार में पूरी रात बीत गई। काशीनाथ खाली हाथ घर लौट आया।

लेकिन वह बेचैन था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे ?

वह जल्दी ही दोबारा से राजमहल में जा पहुंचा।

काशीनाथ को आया देख, राजा ने प्रणाम किया। कहा—"आइए महाराज, विराजिए।"

"नहीं महाराज, आज मैं बैठने नहीं, अपने किए का दंड पाने आया हूं।"—काशीनाथ ने कहा।

काशीनाथ ने विस्तार से पूरी बात राजा को बताई।

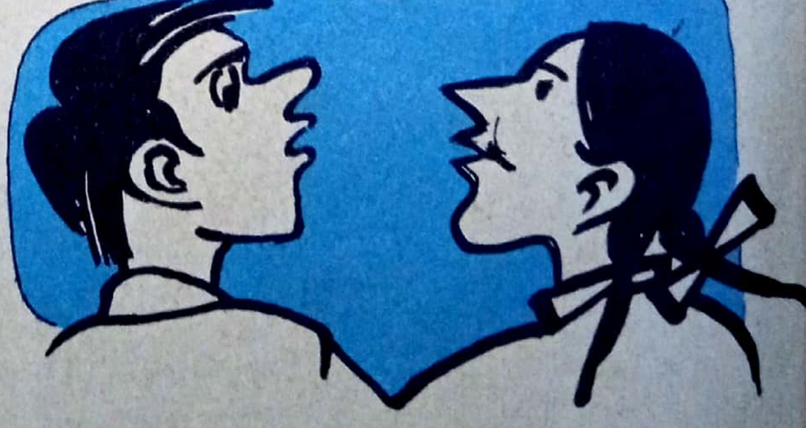
सुनकर राजा ने कहा—"महाराज, इस घटना से तो यह सिद्ध होता है कि अपराधी आप नहीं, हम हैं। यह कर्तव्य राजा का है कि वह प्रजा को कोई कष्ट न होने दे। जिस राजा की प्रजा भूख के कारण चोरी करने पर मजबूर हुई, वहां कुछ न कुछ अपराध तो राजा का है ही।"

राजा का ऐसा निर्णय सुन, काशीनाथ की आंखें भर आईं।

—सुरेश के. अंजुम

चटपट

- कर्मचारी—जी हां, मैं अगले जीवन में विश्वास करता हूं।
  अधिकारी—इसीलिए, जब तुम अपने दादा जी की मृत्यु की छुट्टी लेकर चले गए थे, तब वह तुमसे मिलने यहां आए थे।
- महिला—कल दूध खट्टा हो गया था।
  दूध वाला—बहन जी, शायद भैंस ने स्वाद बदलने के लिए नींबू खा लिए थे।
- :अध्यापक (नाराज होकर)—तुम्हें पचास में से बीस नम्बर देकर मुझे बहुत खुशी हुई।
  छात्र—क्या आप अपनी खुशी को दोगुना करना नहीं चाहेंगे ?
- मकान मालिक—अभी मकान का किराया दो सौ रुपए है, मगर छह महीने बाद चार सौ रुपए हो जाएगा।
  किराएदार—ठीक है, तो मैं छह महीने बाद ही आऊंगा।
- पंडित जी—यजमान, इस बार कथा नहीं कराओगे।
  यजमान—नहीं पंडित जी, पिछली बार जब आप कथा कह रहे थे, मैंने उसे टेप कर लिया था।
- अध्यापक—रस कितने प्रकार के होते हैं ?
  छात्र—बहुत प्रकार के हो सकते हैं—नीबू का रस, इमली का रस, टमाटर का रस।
- एक दोस्त—तुम अपने बेटे को बड़ा होने पर संगीतकार बनाना चाहते हो, अभी वह क्या बजाता है ?
  दूसरा दोस्त—ट्रांजिस्टर।
- नरेंद्र—जल्दी रास्ता नाप, नहीं तो. . .
  सुरेंद्र—नहीं तो क्या, पहले इंची टेप तो दो।
- आदमी—आपका कुत्ता काटता तो नहीं ?
  मालिक—पहले आप अंदर तो आएं, तभी पता चलेगा
- मां—यह शीशा तुमसे पिंकी के कारण कैसे टूटा ?
  बेटा—जब मैं इसे मारने दौड़ा, तो शीशे से टकरा गया।
- भाई—दीदी, जल्दी खाना दो।
  बहन—इतनी देर से मेरा सिर खा रहे थे, अभी तक पेट नहीं भरा !
- बबलू—मेरा चौके लगाने वाला बल्ला कहां गया ?
  ढपलू—अब मां उससे कपड़ों के छक्के छुड़ा रही है।
- ग्राहक—इस खाने को जानवर भी नहीं खा सकते।
  मैनेजर—साहब के लिए ऐसा खाना लाओ, जिसे जानवर खा सकें।
- मां—आज तो आग बरस रही है।
  बच्चा—फिर तो रोटी बनाने के लिए चूल्हा जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- लड़का—मैं बी. ए. तक पढ़ा हूं।
  दादाजी—अरे बेटा, दो शब्द पढ़ा, वो भी उलटे।
- रामलाल— तुम अपने लड़के को आंख का डाक्टर बनाओगे या दांतों का ?
  श्यामलाल— दांतों का। आंख तो सिर्फ दो होती हैं और दांत होते हैं बत्तीस।
- कंडक्टर— सभी यात्री बैठ चुके हैं। ड्राइवर से निवेदन है कि वह अपनी सीट ग्रहण करें।
  यात्री— हां, नहीं तो कोई दूसरा उस खाली सीट पर बैठ जाएगा और बस रवाना हो जाएगी।



तेनालीराम २५६

जरीदार रूमाल



राजा कृष्णदेव राय दरबार के कामकाज में फंसे रहते थे। उन्होंने कुछ दिन छुट्टियां मनाने की सोची। महारानी ने कहा—"नगर से दूर झील के किनारे छुट्टियां मनाएंगे। चार दिन तक केवल कुछ गिने-चुने मित्र-सम्बंधी साथ रहें। उनके अलावा वहां कोई न आए।"

महाराज ने मंत्री को आदेश दिया—"किसी भी काम के लिए वहां किसी को भी हमारे पास न भेजा जाए।"

राजा कृष्णदेव राय को गए एक दिन ही बीता था कि मंत्री को संदेश मिला—'राजा के किसी निकट सम्बंधी के साथ कोई दुर्घटना घट गई है। हालत खराब है। वह कृष्णदेव राय को कोई महत्वपूर्ण बात बताना चाहते हैं।'



मंत्री परेशान। राजा का आदेश माने या चुप बैठ जाए। दरबारियों के सामने समस्या रखी, तो सभी एक स्वर से बोले—"ऐसी सूरत में तेनालीराम ही कोई उपाय ढूंढ़ सकते हैं।"

तेनालीराम चुप था। सभी ने उससे समस्या का समाधान ढूंढ़ने की प्रार्थना की, तो वह मान गया। फिर चुपचाप उठकर चला गया।

आश्चर्य! राजा कृष्णदेव राय अगले ही दिन राजधानी लौट आए। सीधे अपने सम्बंधी के घर गए। वहां से दरबार में आए। मंत्री की पीठ थपथपाकर बोले—"मुझे तुम्हारी चतुराई पर नाज है। तुमने आदेश भी माना और महत्वपूर्ण समाचार भी मुझ तक पहुंचा दिया।"



इतना कहकर उन्होंने गले की माला उतारकर मंत्री को पहना दी। तभी उन्होंने देखा, तेनालीराम एक जरीदार रूमाल हवा में लहरा रहा था।

"यह रूमाल तुम्हें कहां से मिला?"—राजा ने अचरज में भर, तेनालीराम से पूछा—"यह तो मैंने झील के किनारे तरबूज बेचने वाले आदिवासी को दिया था।"

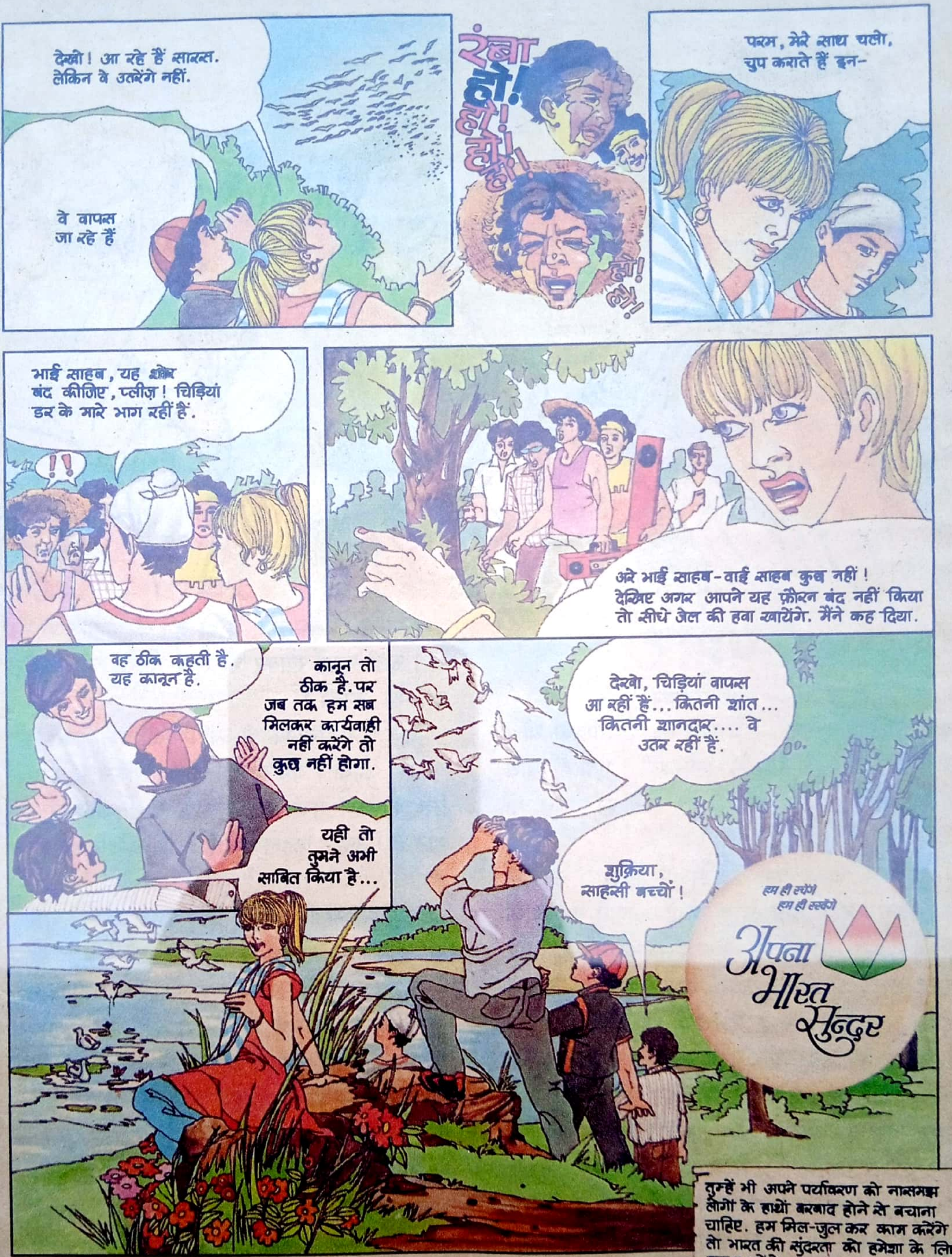


"मैं ही तो था वह आदिवासी अन्नदाता।"—कहकर तेनालीराम ने आदिवासी की पोशाक राजा के सामने रख दी। फिर सारी बात बताकर बोला—"आप तक संदेश पहुंचाने का यही उपाय था। आपको काले तरबूज प्रिय हैं। मैं उन्हें ले, वेश बदल, झील के किनारे बैठ गया। इस तरह मैं आपके पास नहीं, आप मेरे पास आए। तरबूज लपेटने के बहाने कागज पर मैंने संदेश लिखा और चला आया।"

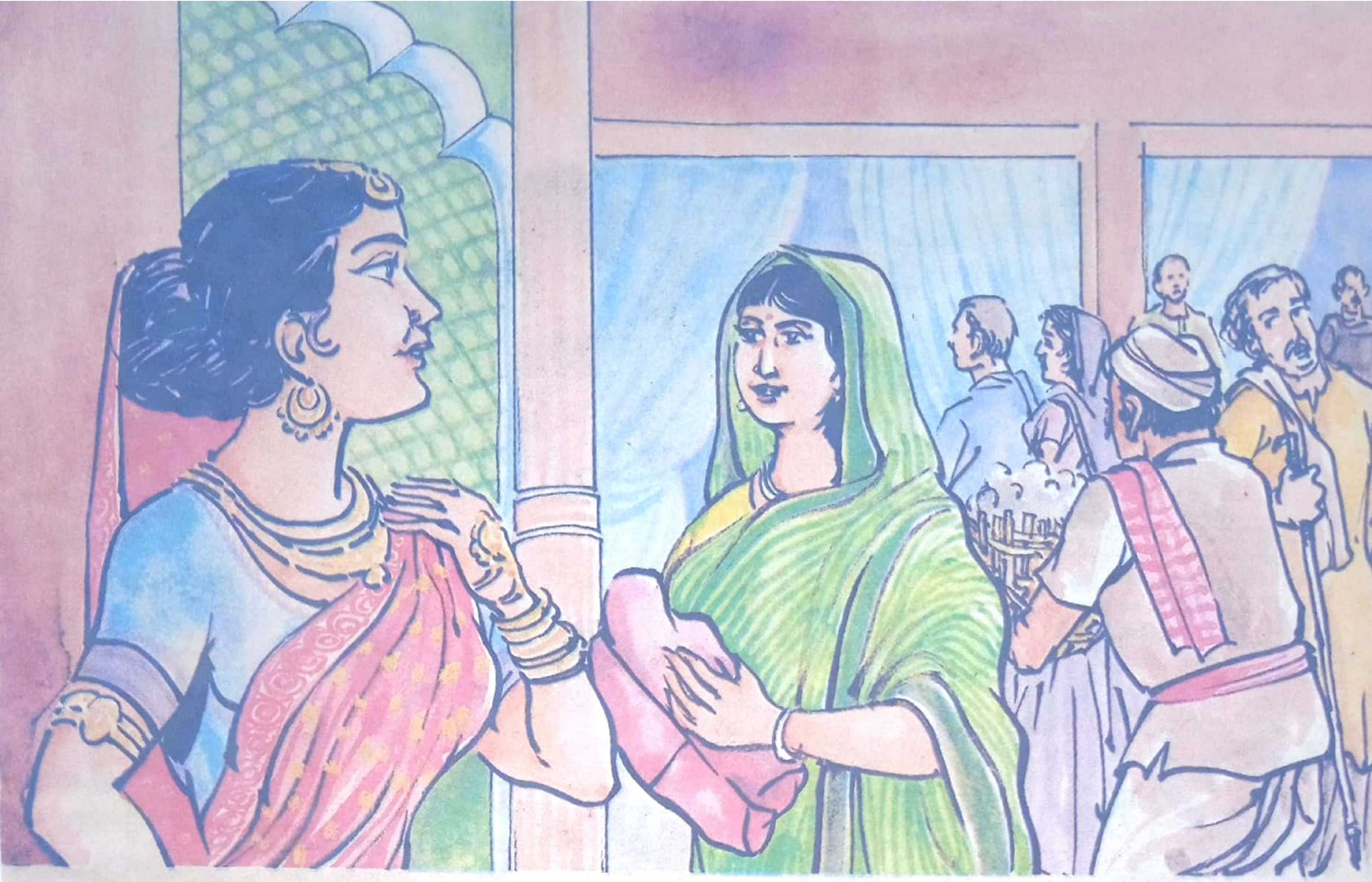
राजा कृष्णदेव राय ने मंत्री की ओर देखा। मंत्री ने गले से माला निकालकर तेनालीराम को पहना दी।



पर्यटन विभाग भारत सरकार



देखो! आ रहे हैं सारस. लेकिन वे उतरेंगे नहीं.
वे वापस जा रहे हैं
रंबा हो! हो! हो! हो!
हो! हो!
परम, मेरे साथ चलो, चुप कराते हैं इन-
भाई साहब, यह शोर बंद कीजिए, प्लीज़! चिड़ियां डर के मारे भाग रही हैं.
!!
अरे भाई साहब-वाई साहब कुछ नहीं! देखिए अगर आपने यह फ़ौरन बंद नहीं किया तो सीधे जेल की हवा खायेंगे. मैंने कह दिया.
वह ठीक कहती है. यह कानून है.
कानून तो ठीक है. पर जब तक हम सब मिलकर कार्यवाही नहीं करेंगे तो कुछ नहीं होगा.
यही तो तुमने अभी साबित किया है...
देखो, चिड़ियां वापस आ रही हैं... कितनी शांत... कितनी शानदार.... वे उतर रही हैं.
शुक्रिया, साहसी बच्चों!
अपना भारत सुन्दर
तुम्हें भी अपने पर्यावरण को नासमझ लोगों के हाथों बरबाद होने से बचाना चाहिए. हम मिल-जुल कर काम करेंगे तो भारत की सुंदरता को हमेशा के लिए बनाए रखेंगे.



उपहार

— उषा महाजन

कामिनी और नैना— बचपन की दो सखियां थीं। दोनों एक ही नगर में पली-बढ़ी। एक ही साथ खेली-कूदीं। संयोग की बात कि दोनों का विवाह भी एक ही नगर में हुआ।

लेकिन भाग्य दोनों का अलग-अलग। कामिनी का विवाह हुआ नगर के एक बड़े व्यापारी के पुत्र के साथ। दिन भर खाना-पीना, सजना-संवरना और तरह-तरह के जेवर-गहने बदल-बदलकर पहनते रहना— यही उसकी दिनचर्या थी।

उधर नैना का विवाह हुआ एक मामूली मूर्तिकार के साथ। उसका पति दिन भर घर बैठा, मिट्टी की तरह-तरह की मूर्तियां और खिलौने बनाया करता। सप्ताह के अंत में नगर में लगने वाली हाट में जाकर बेच आता। घर के काम-काज में ही नैना का पूरा दिन निकल जाता था। जो थोड़ा-बहुत समय मिलता, उसमें वह मूर्तियां बनाने में पति के साथ जुट जाती। इसी प्रकार परिश्रम कर, वे दो जून की रोटी कमा रहे थे। रूखी-सूखी खाकर भी सुख-चैन से जीवन बीत रहा था उनका।

एक दिन अचानक ही कामिनी का एक नौकर नैना के यहां आया। वह बोला— "मालकिन ने आपके लिए निमंत्रण भेजा है। कल उनके विवाह की वर्ष गांठ है। उन्होंने कहलवाया है, आपको अवश्य आना होगा।"

कामिनी से मिलने के लिए नैना का मन मचल उठा। उसे पता तो था कि कामिनी उसी नगर में रहती है, किंतु अपने घर-गृहस्थी के झंझटों के कारण वह उससे मिल नहीं पाई थी। अब कामिनी ने निमंत्रण भेजा था। मान-सम्मान सहित बुलवाया था। उसने तय किया—'मैं जाऊंगी।'

नैना ने अपने कपड़ों के बक्से को उलट-पुलटकर सबसे अच्छा जोड़ा निकाला। उसी दिन उसके पति ने राधा-कृष्ण की एक सुंदर मूर्ति बनाकर पूरी की थी। नैना ने उसे अच्छी तरह एक कागज में लपेट लिया। यही मूर्ति वह कामिनी को, उसके विवाह की वर्ष गांठ

के उपलक्ष्य में भेंट करेगी।

मन में सखी से मिलने के न जाने कितने स्वप्न लिए वह उसके घर पहुंची। द्वार पर पहुंचते ही वह ठगी-सी रह गई। इतना विशाल, महल-सा घर। न जाने कहां-कहां से अतिथि आए थे। रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्र पहने। आभूषणों से लदे-फदे। भीतर प्रवेश किया, तो वहां की चकाचौंध देख, वह और भी विस्मित रह गई। किसी राजभवन की-सी सज्जा थी। नौकर-चाकर हाथों में मिठाइयों के थाल लिए इधर से उधर घूम रहे थे। इत्र और फूलों की सुहावनी गंध से सारा वातावरण महक रहा था। नैना इधर-उधर ताकती अपनी सखी को खोजने लगी। जब कामिनी मिली, तो नैना के मन को राहत मिली। कामिनी ने तो उसे ऐसे गले लगाया, जैसे बरसों के बाद दोनों मिली हों। आदर के साथ वह उसे अपने कमरे में ले गई। घर के लोगों के साथ उसने नैना का परिचय करवाया।

समारोह के दौरान कामिनी ने नैना को अपने साथ ही रखा। पूरा मान-सम्मान उसे दिया। किंतु नैना का मन रह-रहकर दुखी हो उठता। कभी वह अपने साधारण कपड़ों की ओर देखती, तो कभी अपने बिवाई भरे पैरों की ओर। कहां कामिनी जेवरों-गहनों से लदी, रेशमी वस्त्रों में लिपटी और कहां वह, एक सूती साड़ी पहने हुए। न गले में कामिनी जैसा चंद्रहार, न कलाइयों में सोने की चूड़ियां। और उपहार भी तो क्या लाई थी वह? मिट्टी की एक मूर्ति! जबकि अन्य सभी अतिथियों ने उसे सोने-चांदी के उपहार दिए।

कामिनी थी तो बहुत अमीर, पर घमंड उसे छू भी नहीं गया था। उसका ध्यान नैना के कपड़ों-लत्तों की तरफ गया ही नहीं। वह तो नैना को देखकर फूली नहीं समा रही थी, इतने दिनों बाद दोनों मिली थीं।

नैना को विदा करते समय कामिनी ने उससे कहा— "अब मैं भी किसी दिन तुम्हारे घर आऊंगी और पूरा दिन वहीं रहूंगी।" यह सुनते ही नैना घबरा गई। किसी तरह बहाना बनाकर उसने कामिनी को मना किया।

कहा— "अभी तो महीने भर के लिए मैं मायके जा रही हूं। जब लौटूंगी, तो स्वयं ही तुम्हें नौकर भेजकर बुला लूंगी।"

पर नैना के यहां नौकर कहा था! और न वह कामिनी को बुलवाना चाहती थी। सोच रही थी— 'बचपन की मित्रता अब समाप्त हुई। गरीब-अमीर के बीच भी भला कैसी दोस्ती! न वह कामिनी को बुलाएगी, न कामिनी उसके घर आएगी।

इधर कामिनी थी कि उसे नैना से मिले बिना चैन ही नहीं। महीना गुजरते ही उसने पुनः नैना को बुला भेजा। ऐसे ही, आए दिन वह किसी न किसी बहाने नैना को अपने यहां बुलाने लगी। दोनों सखियां साथ बैठकर स्वादिष्ट भोजन करतीं। बाग में पेड़ों पर डले झूलों में झूला झूलतीं। साथ-साथ कशीदा करतीं और यहां तक कि कामिनी ने नैना से मिट्टी की मूर्तियां बनाना भी सीख लिया।

नैना कामिनी के यहां आती तो थी, पर मन ही मन संकोच से गड़ी रहती कि उसने तो कभी कामिनी को अपने यहां बुलाया ही नहीं। एक दिन न जाने क्या सोच, उसने हिम्मत की। वह कामिनी से बोली— "अगले सप्ताह दुर्गा पूजा पर तुम हमारे घर आना।"

कामिनी तो स्वयं चाहती थी उसके यहां जाना, वह झट मान गई। नैना की निर्धनता के बारे में अब तक वह सब-कुछ जान चुकी थी। उसे खुशी हुई कि पूजा के दिन जाने से नैना को अधिक आडम्बर नहीं करना होगा।

घर आते ही नैना अपने पति से बोली— "तुमने



जिन लोगों के लिए दुर्गा पूजा की मूर्तियां बनाई है, उनसे अपने पैसे तुरंत मांग लाओ । कुछ और पैसे भी उधार ले आना । मैंने पूजा पर कामिनी को घर बुलाया है । वह भी देख ले, हम उससे कुछ कम नहीं । वह रेशमी कपड़े पहनकर आएगी, तो मैं भी रेशमी साड़ी खरीदूंगी । वह हीरे-जवाहरातों के गहने पहनकर आएगी, तो मैं भी अपने लिए गहने गढ़वाऊंगी । वह अपने आपको बहुत अमीर समझती होगी, मगर मैं भी उसकी बराबरी कर सकती हूं ।''

बेचारा मूर्तिकार क्या करता । अपने ग्राहकों के पास गया । कर्ज भी ले आया । उसने अपनी पत्नी को बहुत समझाया, पर नैना ने उसकी एक न सुनी । उसे तसल्ली देती हुई वह बोली— ''तुम चिंता क्यों करते हो ? यह सब तो मैं अपना मान रखने के लिए कर रही हूं । फिर कामिनी कोई खाली हाथ थोड़े ही आएगी । पहली बार हमारे घर आ रही है । अवश्य ही कोई कीमती उपहार लाएगी । तुम उसे बेचकर अपना सारा कर्ज चुका देना ।''

वह शुभ दिन भी आ पहुंचा । नैना ने सचमुच कहीं कोई कमी नहीं छोड़ी थी । पूजा का भव्य पंडाल बनाया गया । सारे घर को फूलों से सजाया गया । भारी कर्ज उठाकर नैना ने अपने लिए बनारसी रेशमी साड़ी खरीदी । और जड़ाऊ गहने बनवाए । सब पहनकर वह किसी दुलहिन-सी सजी कामिनी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी । पिछवाड़े आंगन में हलवाई तरह-तरह के पकवान बनाने में लगे थे । किराए पर सुंदर आसन और पीढ़े भी मंगवाए गए थे । एक दिन के लिए बुलाए गए नौकर भी द्वार पर तैनात थे ।

एक नौकर ने भीतर आकर सूचना दी— ''मालकिन, बाहर आपकी सखी खड़ी हैं ।''

कामिनी के आने की खबर सुन, नैना उसकी अगवानी करने बाहर आई । वह कामिनी को देख, हैरान हो गई । लाल पाड़ की सूती साड़ी में किसी सामान्य परिवार की कुलवधू-सी दिख रही थी कामिनी । गले में बस मोतियों की माला और कलाइयों में शंख के कंगन । हाथों में संभाले थी लाल रंग के कागज में लिपटी कोई भारी-सी वस्तु ।

कामिनी को इस वेशभूषा में देख, नैना पानी-पानी हो गई । वह तो सोच रही थी— 'न जाने कितना सज-धजकर आएगी वह ।'

पूजा के उपरांत नैना ने उसे अपने समीप आसन पर बैठाया । नौकरों को आदेश दिया— ''सब तरह के पकवान दो थालियों में सजाकर ले आओ ।''

कामिनी ने सुनते ही उसे टोका— ''मेरा तो आज उपवास है । मैं तो केवल फल ही खाऊंगी । भोजन तुम अपने लिए ही मंगवाना ।''

यह सुनकर नैना स्तब्ध ही रह गई । मन रोने को हो आया । जिसे दिखाने के लिए उसने इतना कुछ किया, उसे तो इसकी जरूरत ही नहीं थी ।

बेचारी अनमनी-सी कामिनी को फल खाते देखती रही । अपनी थाली में सजे व्यंजन उसके गले के नीचे उतर नहीं रहे थे ।

चलते हुए कामिनी ने अपने बगल में रखी, लाल कागज में लिपटी भेंट नैना को थमाई । वह बोली— ''यह मेरी छोटी-सी भेंट है । आशा है, तुम्हें पसंद आएगी ।'' इतना कहकर कामिनी ने नैना से विदा ली ।

कामिनी के जाते ही नैना लाल कागज में लिपटी उसकी भेंट लेकर अपने पति के पास गई । बोली— ''देखो तो, बहुत भारी लगती है । निश्चय ही बहुत बहुमूल्य वस्तु होगी ।''

मूर्तिकार ने लाल कागज को फाड़कर उपहार को बाहर निकाला, तो वे दोनों ठगे-से उसे देखते ही रह गए । मिट्टी की बनी एक सुंदर मूर्ति थी— गले मिलती दो सखियों की ।

पहले तो उसे देख, नैना को थोड़ा धक्का लगा । फिर अचानक ही उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी । भले ही वह सोने-चांदी की मूर्ति नहीं थी, पर निश्चय ही उसकी सखी के सच्चे प्रेम की निशानी थी । कामिनी ने उन दोनों के बीच का भेद मिटा दिया था ●

काले हाथ

— सोमाली दीदी

किसी गांव में एक माली रहता था। गांव के बाहर उसका बाग था। माली ने बचपन में कई पेड़ अपने हाथों से लगाए थे। अब उन पर फल आ गए। वह फलते-फूलते पेड़ों को देखकर बहुत खुश होता।

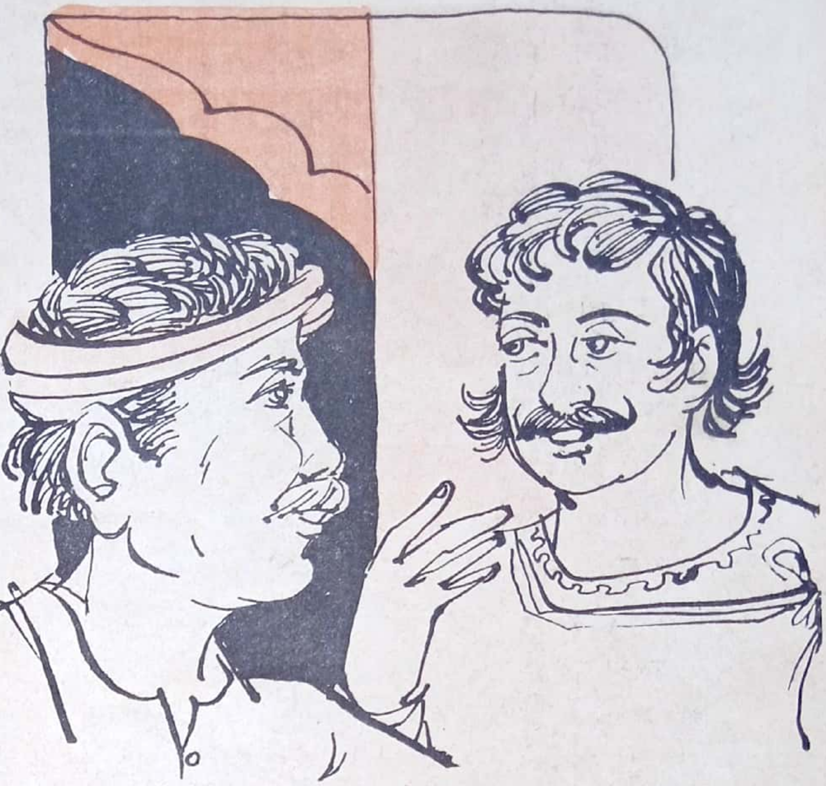
उसने बाग में ही अपनी झोंपड़ी बना रखी थी। माली के कोई संतान नहीं थी। इसलिए वह गांव के बच्चों को बाग में बुला लेता। उनके साथ हिल-मिलकर रहता। बच्चे भी खुश होकर बाग में जाते। क्योंकि उन्हें खाने को मीठे-मीठे आम जो मिलते थे। धीरे-धीरे माली बूढ़ा हो गया। एक दिन उसकी पत्नी ने कहा— "हमारा कोई बच्चा नहीं है। क्यों न हम गांव के किसी लड़के को गोद ले लें ? उसे अपने पुत्र की तरह पालेंगे। हमारे बाद वह इस बाग की देखभाल भी करता रहेगा।"

माली को पत्नी की बात बहुत अच्छी लगी। एक दिन गांव में जाकर जमींदार से बात की। जमींदार ने सोचा— 'यह माली बूढ़ा हो चुका है, न जाने कब मर जाए। यदि मैं अपना पुत्र इसे दे दूं, तो इसके मरने के बाद इतना बड़ा बाग मेरा हो जाएगा।' उसने खुश होकर कहा— " माली बाबा ! मैं अपना छोटा बेटा अजीत आपको देता हूं। आप इसे अपने साथ रखें।"

माली जमींदार के लड़के अजीत को लेकर बाग में आ गया। अजीत बहुत शैतान था। जब गांव के बच्चे बाग में खेलने आते, तो वह उनके साथ झगड़ा करता। माली बच्चों को मीठे-मीठे आम देता। अजीत ने यह सब देखा, तो बहुत गुस्सा आया। उसने माली से कहा— "ऐसे तो ये बच्चे हमारे सारे आम खा जाएंगे। हमें इन्हें मुफ़्त में आम नहीं देने चाहिएं।"

माली ने उसे समझाया— "इन गरीब बच्चों के पास पैसे कहां से आएंगे ? फिर पेड़ तो सबके होते हैं।"

लड़का न माना। उसने कहा— "यदि तुमने इन



बच्चों को आम दिए, तो मैं पेड़ काट दूंगा।"

माली को बहुत दुःख हुआ। पर अब क्या कर सकता था ? उसे डर था कि कहीं यह शैतान लड़का सचमुच ही पेड़ काट दे।

इस चिंता में दिन बाद माली मर गया। माली की पत्नी अब बहुत उदास रहने लगी। बच्चे भी बाग में नहीं आते थे। अजीत ने सोचा— 'अब तो पूरा बाग मेरा हो गया है। मैं किसी को भी अंदर नहीं आने दूंगा।'

एक दिन बुढ़िया ने उसे समझाया— " माली की हार्दिक इच्छा थी क़ि उसके मरने के बाद भी बच्चे इस बाग में आएं और फल खाएं। उन्होंने इसीलिए तुम्हें गोद लिया था।" पर अजीत नहीं माना। हार कर बुढ़िया चुप हो गई। अब वह झोंपड़ी में चारपाई पर लेटी रहती।

एक दिन अजीत ने देखा, बाग के पास कुछ बच्चे खड़े हैं। उसने सोचा— 'अवश्य ये आम तोड़ने आए हैं।' वह लाठी लेकर उनके पीछे दौड़ा। बच्चे डरकर भाग गए।

अजीत बाग में घूमने लगा। पेड़ों पर बहुत-से फल लगे थे। वह आम के एक पेड़ के नीचे खड़ा हो

गया। फलों के बोझ के कारण पेड़ झुक गया था।

उसने हाथ बढ़ाकर एक पका आम तोड़ना चाहा। पर यह क्या ! जैसे ही उसने आम को हाथ लगाया, आम एकदम काला हो गया। उसने दूसरे आम को तोड़ना चाहा, तो वह भी छूते ही काला हो गया।

अजीत को बहुत गुस्सा आया। उसने काले आम को पकड़कर जोर से भींच दिया। भींचते ही काले रस के छींटे बिखर गए। काला रस उसके हाथ और मुंह पर भी लग गया। जहां भी यह रस लगा, वहीं से उसकी खाल काली हो गई। उसने अपने हाथों को देखा। उन पर काले-काले धब्बे बन गए थे।

अजीत ने तुरंत मुंह-हाथ धोए। पर कोई लाभ नहीं हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा बूढ़ी मालिन के पास गया। बोला— ''दादी मां, देखो, मेरे शरीर पर यह क्या हो गया ?'' बुढ़िया को भी चिंता हुई। अजीत की शक्ल बहुत भद्दी हो गई थी।

अगले दिन गांव के बच्चों ने उसे देखा, तो हंसते-हंसते लोट-पोट हो गए। सब उसे कलमुंहा लंगूर कहकर चिढ़ाने लगे। अब बेचारा अजीत शर्म के मारे घर से बाहर न निकलता। झोंपड़ी में बैठा-बैठा रोता रहता।



बुढ़िया बोली— ''अरे, रोता क्यों है। जैसे तेरे काम हैं, वैसा ही शरीर हो गया है। अब पछताने से क्या होगा ?''

अजीत को अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था।

वह बुढ़िया के गले से लिपटकर बिलख उठा— ''दादी मां ! मेरा मुंह ठीक कर दो। अब मैं कभी बुरे काम नहीं करूंगा।''

बुढ़िया को दया आ गई। उसने कहा— ''जाओ, उन बच्चों को बुलाकर लाओ। सब मिलकर बाग में खेलो। धीरे-धीरे तुम्हारा मुंह और हाथ ठीक हो जाएंगे।''

अजीत उठकर बाग में आया। वहां कई बच्चे खड़े थे। अजीत ने उन्हें प्यार से बुलाया, तो वे हैरान हो गए— 'अजीत इतना कैसे बदल गया ?'— सबके मन में एक ही बात थी।

वे सहमे-सहमे बाग में आए। दिन भर उसके साथ खेलते रहे। अगले दिन गांव के सभी बच्चों को पता चल गया कि बूढ़े माली के बाग में अब कोई रोक-टोक नहीं है। सब बच्चे खुश होकर बाग में किलकारी मारते, खेलते और फल खाते।

अजीत आम की तरफ भूलकर भी हाथ नहीं बढ़ाता था। उसे भय था, कहीं काला रस सारे शरीर पर न टपक जाए। गांव के सब बच्चों को पता चल गया था कि अजीत को क्या हुआ है।

एक दिन बच्चों से अजीत की उदासी न देखी गई। उन्होंने एक फल तोड़कर अजीत को दिया। अजीत ने डरते-डरते फल ले लिया और खाने लगा। खाते-खाते रस की कुछ बूंदें उसके हाथ पर गिर गईं। तुरंत हाथ के काले धब्बे मिट गए।

अजीत खुशी से उछल पड़ा। उसने रस सारे मुंह और हाथों पर लगाया। उसके शरीर पर कोई दाग नहीं रहा। वह दौड़ता हुआ बुढ़िया की झोंपड़ी में गया। उसे सारी बात कह सुनाई। वह भी खुश हो गई।

अजीत को बूढ़े माली की बात याद आ रही थी। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. रात को— छोड़ दिया उसने। (सोना/खाना)
३. यह तो बता— कहां है ? (जाता/जाना)
६. नागकन्या, जिसका विवाह अर्जुन से हुआ था।
८.घिसते-पिसते चमड़ी— गई। (छिल/गल)
१०. आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला पक्षी। यह उड़ नहीं सकता।
११. मैंने कब मना किया, जी भर—। (पीटो/काटो)
१२. हिम्मत है तो— कर देख लो। (मुड़/लड़)

ऊपर से नीचे

२. मैंने कहा न— ही ठीक रहेगा। (ऐसे/वैसे)
४. ध्यान रखना वह— न पाए। (लेने/रोने)
५. सोच लो— बात। (कोई/नई)
७. इसकी क्या कहूं, यह तो बहुत ही दुष्ट—। (है/था)
९. वह सो रहा था इसलिए राजकुमार के— का पता न चला। (आने/गाने)

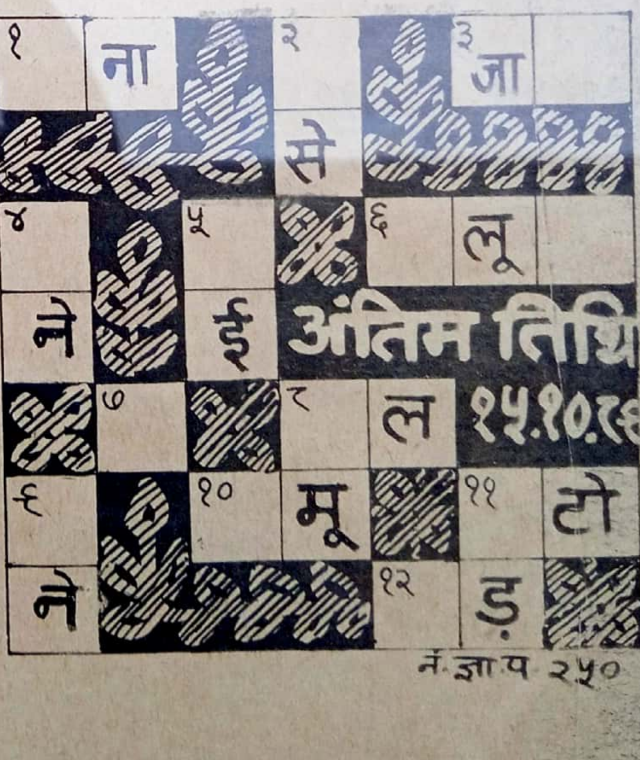
काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली २५०

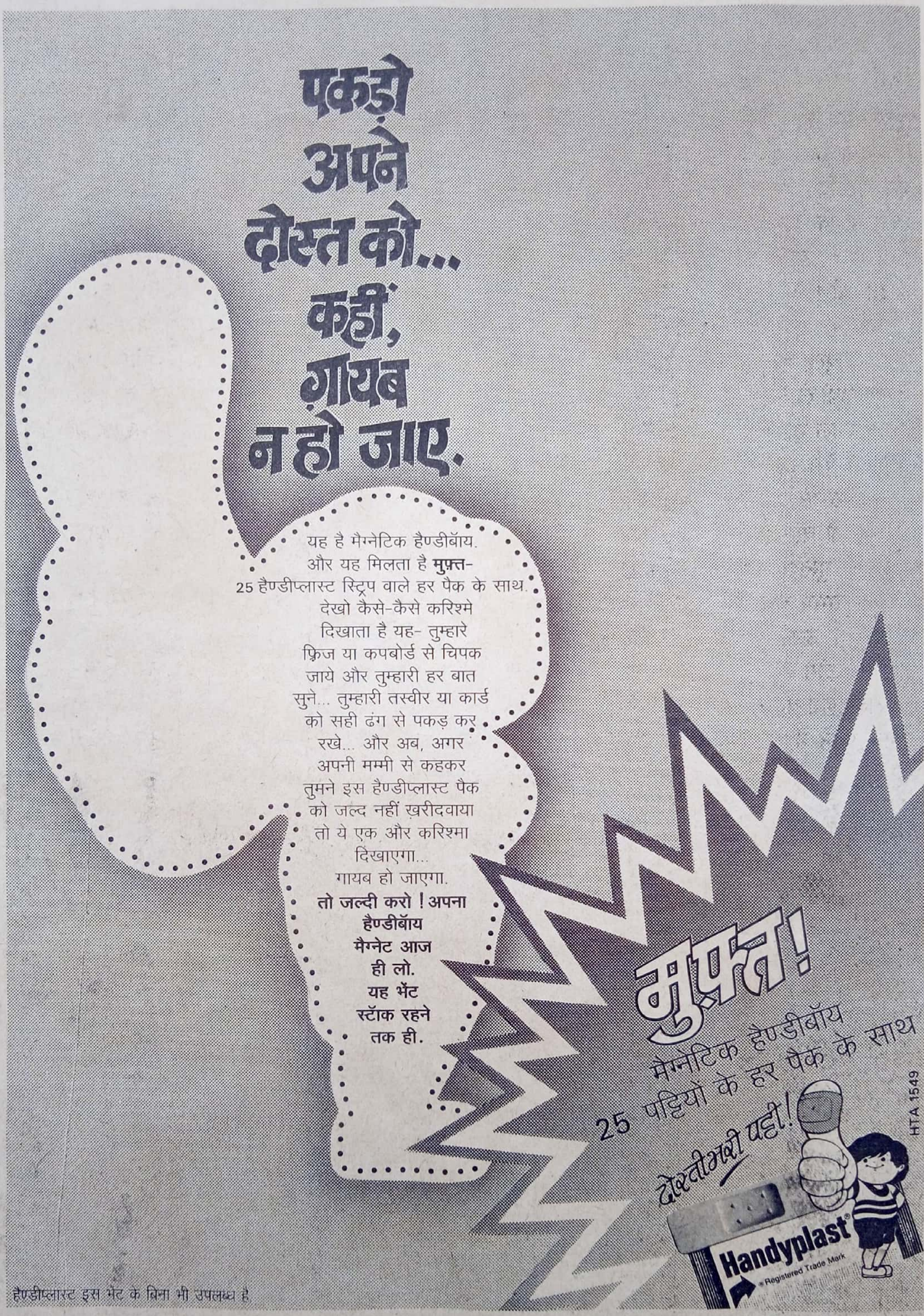
नाम ____________________

आयु ________ पता ____________________

____



नं.ज्ञा.प २५०


पकड़ो अपने दोस्त को... कहीं, ग़ायब न हो जाए.
यह है मैग्नेटिक हैण्डीबॉय.
और यह मिलता है **मुफ़्त**-
25 हैण्डीप्लास्ट स्ट्रिप वाले हर पैक के साथ.
देखो कैसे-कैसे करिश्मे
दिखाता है यह- तुम्हारे
फ्रिज या कपबोर्ड से चिपक
जाये और तुम्हारी हर बात
सुने... तुम्हारी तस्वीर या कार्ड
को सही ढंग से पकड़ कर
रखे... और अब, अगर
अपनी मम्मी से कहकर
तुमने इस हैण्डीप्लास्ट पैक
को जल्द नहीं ख़रीदवाया
तो ये एक और करिश्मा
दिखाएगा...
गायब हो जाएगा.
तो जल्दी करो ! अपना हैण्डीबॉय मैग्नेट आज ही लो. यह भेंट स्टॉक रहने तक ही.
मुफ़्त!
मैग्नेटिक हैण्डीबॉय
25 पट्टियों के हर पैक के साथ
दोस्तीभरी पट्टी!
Handyplast®
® Registered Trade Mark
HTA 1549
हैण्डीप्लास्ट इस भेंट के बिना भी उपलब्ध है.

इतनी सी बात

—हूंदराज बलवाणी

एक समय की बात है। चीन में लू चीं नाम का एक आदमी रहता था। वह किताबों का कीड़ा था। बस, पूरा दिन पढ़ता ही रहता। पढ़ने का उसे इतना शौक था कि खाना तक भूल जाता। चलते-फिरते, उठते-बैठते बगल में पुस्तक दबाए रखना उसकी आदत थी।

एक बार उसकी पत्नी खाना पका रही थी, तो अचानक चूल्हे की लकड़ियां खत्म हो गईं। उसने पति से लकड़ियां ले आने को कहा। लू चीं तुरंत उठा और पुस्तक बगल में दबाए, चल पड़ा लकड़ियां खरीदने। जल्दी में पैसे लेना भी भूल गया। एक चौराहे पर आकर बैठ गया। सोचा— कोई लकड़हारा वहां से गुजरेगा, तो वह उससे लकड़ियां खरीद लेगा। तब तक वह पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा।

कुछ समय बाद एक लकड़हारा वहां से गुजरा। लू चीं ने उससे पूछा —"भाई, मुझे लकड़ियां चाहिए। दोगे ?"

लकड़हारा कोई उत्तर दे, उससे पहले ही वह फिर पुस्तक पढ़ने में खो गया। लकड़हारा कुछ देर तक वहां रुका। फिर चला गया। अचानक लू चीं को लकड़हारे का ख्याल आया, परंतु वह तो जा चुका था। लू चीं फिर पुस्तक पढ़ने लगा। कुछ देर के बाद दूसरा लकड़हारा आया, तो उसे पता ही न चला। बहुत देर के बाद तीसरा लकड़हारा आया, तो उसने उससे पूछा—"भाई, क्या तुम लकड़ियां बेचोगे ?"

लकड़हारे ने उत्तर दिया—"बेचने के लिए ही तो लाया हूं। कितनी चाहिए ?"

"कितनी चाहिए !" —लू चीं ने अपनी जेबें टटोलीं। वह चिल्लाया— "अरे ! पैसे लाना तो भूल गया। जरा रुको, घर से पैसे ले आऊं।" कहकर वह घर की ओर भागा। लकड़हारे को तो बाजार जाना था। वह चला गया।

उधर लू चीं की पत्नी पति की प्रतीक्षा कर रही थी। पति को खाली हाथ लौटते देखा, तो चिल्लाई—"लकड़ियां कहां हैं ?"

—"कहां से लाता ? पैसे तो तुमने दिए ही नहीं !"

—"मैंने नहीं दिए या तुमने नहीं लिए ?"

—"तुमने नहीं दिए।"

इसी बात पर पति-पत्नी के बीच युद्ध छिड़ गया।



पत्नी ने गुस्से में आकर जलती हुई लकड़ी हाथ में उठाकर घुमाई। उससे घर में आग लग गई। पत्नी मदद के लिए चिल्लाने लगी, परंतु लू चीं महाशय तो फिर पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गए थे।

"क्या करते हो। यहां घर में आग लगी है और तुम पुस्तक पढ़ने बैठ गए। जल्दी आओ। कहीं से पानी भरी बाल्टी ले आओ।"— पत्नी ने डांट सुनाई।

लू चीं को पुस्तक छोड़ने की इच्छा नहीं हो रही थी, फिर भी वह उठा, कहीं से बाल्टी लाने। इस बीच पास-पड़ोस के लोग आग बुझाने में जुट गए। लू चीं को कहीं बाल्टी न मिली, तो अपने मित्र के घर की ओर चला। मित्र उस समय शतरंज खेल रहा था। लू चीं चुपचाप वहीं खड़ा होकर पुस्तक पढ़ने लगा। बहुत देर के बाद मित्र ने गर्दन उठाई। लू चीं को देखकर उससे आने का कारण पूछा।

"मेरे घर में आग लगी है। और मुझे आग बुझाने के लिए पानी भरी बाल्टी चाहिए।" —उसने कहा —"तुमने पहले क्यों नहीं बताया ? चुपचाप क्यों खड़े थे ?"— मित्र ने पूछा।

—"चुपचाप कहां खड़ा था ? पुस्तक पढ़ रहा था।"

—"अरे, मूर्ख ! तुम्हारे घर में आग लगी है और तुम यहां पुस्तक पढ़ रहे हो !"

मित्र तुरंत उठा। पानी की बाल्टी लेकर लू चीं के घर की ओर दौड़ा। लू चीं धीरे-धीरे घर की ओर लौटने लगा। सबको यूं दौड़-धूप करते हुए देखकर, वह कहने लगा—"इतनी मामूली-सी बात पर इतना शोर-शराबा क्यों ?"

लू चीं की बात सुनकर लोगों ने हंसकर कहा—"अक्ल के दुश्मन ! यह मामूली बात नहीं है। केवल पोथी पढ़ने से कुछ नहीं होने वाला। अब बताओ। रात को सोओगे कहां ?"

"सोऊंगा कहां ? सचमुच यह तो बड़ी समस्या है !" —कहते हुए उसने पुस्तक को एक ओर रख दिया। **(चीनी कथा)**

ईमानदार

—कमलेश भट्ट 'कमल'

एक राजा को अपने छोटे बच्चों की देखभाल के लिए ईमानदार और सच्चे आदमी की जरूरत थी। राजा की सलाह पर मंत्री ने राज्य भर में यह बात प्रचारित करवा दी। लोग अपनी नियुक्ति के लिए राजा के पास आने लगे। लोगों ने अपनी ईमानदारी और सच्चाई के बारे में एक से बढ़कर एक मिसालें पेश की थीं। राजा के लिए यह तय करना ही मुश्किल हो रहा था कि उनमें से किसको श्रेष्ठ माना जाए ?

राजा ने इस समस्या की चर्चा अपने मंत्री से की।

एक दिन मंत्री सुबह-सुबह ही राजा से मिला। बोला—"राजन, मैंने राजकुमारों के लिए सच्चे और ईमानदार आदमी की तलाश कर ली है।" वह एक दीन-हीन-से आदमी को राजा के सामने लाया।

"क्षमा करें राजन ! आपने सैकड़ों लोगों से उनकी ईमानदारी और सच्चाई की जानकारी ली है, लेकिन इनके पास ऐसा कोई लेखा-जोखा नहीं है।" —मंत्री ने साथ आए आदमी की सिफारिश करते हुए कहा।

"फिर तुम इन्हें यहां लाए ही क्यों ?"—राजा को क्रोध आने लगा।

"राजन ! असली बात तो मैं बता ही नहीं पाया। आपकी आज्ञा मिलने के बाद मैं कितने ही लोगों से मिला। सिर्फ यह ऐसा पहला आदमी मिला, जिनके पास ऐसा कोई किस्सा नहीं था। लेकिन इसे इतना याद है कि इसने एक बार बेईमानी की थी, जिसके लिए यह आज भी पश्चात्ताप करता रहता है।"—मंत्री ने उस आदमी के बारे में जानकारी दी।

"मंत्री, अभी भी मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सका।" —राजा ने कहा।

"राजन ! जो आदमी अपनी गलतियों को देखने-बताने का साहस नहीं कर सकता, वह भला राजकुमारों की गलतियों को देखने और उन्हें आपको बताने का साहस कैसे करेगा ?" —मंत्री ने कहा।

मंत्री की बात सुनकर राजा के चेहरे पर मुसकान फैल गई। ●

चीटू-नीटू



मैं देश का सब से बड़ा धनुर्धारी बनूंगा
निशाना साधो तो जानूं... भैयाश्री
अरे, कोई पकड़ो, हमारी चद्दर फाड़ गए
वह देखो, कौआ चोरी-चोरी दूध पी रहा है। मैं अभी मूर्छा बाण...
अरे, सत्यानाशियो... अभी तुम्हारी मां से...
देखो, अब गगनभेदी तीर का कमाल
ठहरो, अभी बताते हैं
मुझे क्या पता था अब धनुर्विद्या के कदरदान नहीं रहे



पुरस्कृत चित्र

कोहिनूर सेनगुप्ता, १९ स्टेट बैंक आफीसर्स कालोनी, अरविंदनगर वार्ड, वल्लभनगर रायपुर (म.प्र.)

इनके चित्र भी पसंद आए— अनुराधा कुमारी, धौलपुर; मनोजकुमार रोहिल्ला, बादली, दिल्ली; मोनिका गोयल, फरीदाबाद; समन सलीम, तंकिया (उ.प्र.); अरुण लोहिया, मोतिहारी ।

शीर्षक बताइए

हंसना है तो और हंसो : इस चित्र को ध्यान से देखिए । सोचिए ऐसा ही कोई अच्छा-सा, छोटा सा शीर्षक । उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० अक्तूबर तक, **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

परिणाम : दिसम्बर '८९ अंक

चित्र : श्रीकांत शर्मा





आगामी अंक

नेहरू जन्म शताब्दी पर

उपहार विशेषांक

चाचा नेहरू पर विशेष सामग्री

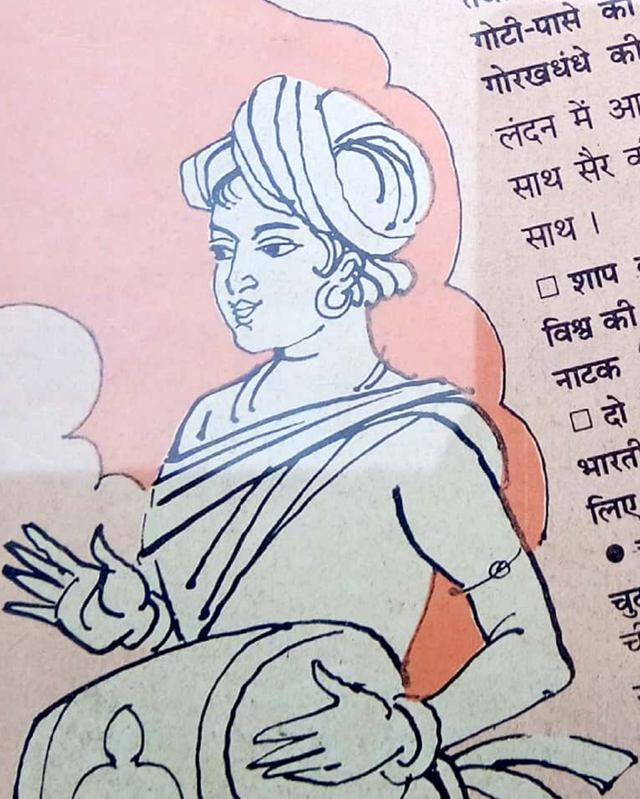
'खिलते रहें गुलाब' नेहरू जी के अनूठे संस्मरणों से सजी बहुरंगी चित्र-कथा

'नेहरू जी और उनके साथी।'— रंगीन टिकटों का दुर्लभ एलबम।

महकते-चहकते फूल— डाक टिकटों पर दुनिया के चुने हुए फूल।

□ **दीवाली पर विशेष भेंट— लक्ष्मी-गणेश की फ्रेम कराने योग्य बहुरंगी छवियां** तथा धन की देवी लक्ष्मी पर सजीली चित्र-कथा। **गोटी-पासे का** नया खेल— बाधा दौड़। साथ में **गोरखधंधे की चुनौती।**

लंदन में आया बसंत : इस बार सम्पादक नंदन के साथ सैर कीजिए लंदन की : अनेक रंगीन चित्रों के साथ।



□ **शाप बना वरदान— कैसे! विश्व की महान कृतियों में महाकवि कालिदास के अमर नाटक 'विक्रमोर्वशीयम्' की संक्षिप्त कथा।**

□ **दो दर्जन से अधिक सरस कहानियां भारतीय भाषाओं के अछूते कथा भंडार से 'नंदन' के लिए लाए हैं आपके चहेते लेखक**

● **चुटकुला प्रतियोगिता के परिणाम और पुरस्कृत चुटकुले भी इसी विशेषांक में**

चीटू-नीटू, तेनालीराम, ज्ञान-पहेली तथा अन्य स्थायी स्तम्भ। साथ में बच्चों का अखबार— 'नंदन बाल समाचार'



अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें

सौ से अधिक पृष्ठ   मूल्य वही ४ रुपए

बातें रंग-बिरंगी

चीनी मिट्टी— चीनी मिट्टी से बने प्लेट-प्यालों का प्रयोग दुनिया भर में किया जाता है। इससे केवल बरतन ही नहीं बनते, बल्कि कागज, रबर, पेंट आदि भी बनाए जाते हैं। कागज में चिकनाहट पैदा करने और रबर को मजबूत बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसी मिट्टी से उच्च तापमान पर न पिघलने वाले क्रुसीबिल भी बनाएं जाते हैं।

इस मिट्टी का सबसे पहले प्रयोग चीन में बरतन बनाने के लिए किया गया था, इसीलिए इसका नाम चीनी मिट्टी पड़ गया। यह सफेद रंग की होती है। इसकी छोटी-छोटी पहाड़ियां होती हैं।

हमारे देश में चीनी मिट्टी गुजरात के बनास कांठा, साबर कांठा और पंचमहल नामक स्थानों पर मिलती है। इसमें मुख्य रूप से सिलिका, एल्युमिनियम आक्साइड और पानी होते हैं। पानी के साथ इस मिट्टी का चिकना लोथड़ा बन जाता है। इसी से बरतन बनाए जाते हैं। पकाने पर इसका रंग चमकदार हो जाता है। बरतनों की तरह और चमक लाने के लिए एक प्रकार के कांच की परत चढ़ा दी जाती है। कांच की परत चढ़ाने के बाद बरतनों को एक बार फिर आग में पकाया जाता है। अंत में इन पर चित्रकारी कर दी जाती है।

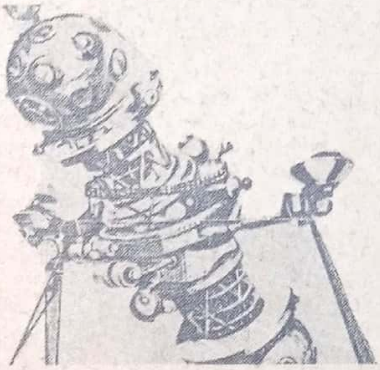
इत्र— खस, केवड़ा, रात की रानी आदि के इत्रों का चलन काफी प्राचीन काल से है। सभी इत्रों में मनमोहक सुगंध होती है।

इत्र फूलों से बनाए जाते हैं, लेकिन सुगंध को अधिक प्रभावशाली और टिकाऊ बनाने के लिए इत्र में दूसरे पदार्थ भी मिलाए जाते हैं। हिरण से प्राप्त कस्तूरी का इत्रों में खास प्रयोग किया जाता है। एक अच्छे इत्र में २०० प्रकार के सुगंधित पदार्थ तक हो सकते हैं।



फूलों से इत्र बनाने के लिए, उन्हें उबाला जाता है। इससे निकलने वाली भाप को ठंडा करके दूसरे बरतन में एकत्रित किया जाता है। फूलों का तेल भाप के साथ आ जाता है और पानी के ऊपर तैरने लगता है। इसी तेल को एकत्रित करके इत्र बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसमें दूसरे सुगंधित पदार्थ विशेष विधियों से मिला दिए जाते हैं।

फ्रांस के इत्र दुनिया में सबसे महंगे होते हैं।



ताराघर— तारों-सितारों के बारे में सभी जानना चाहते हैं। पुस्तकों के अलावा अंतरिक्ष के बारे में ताराघर से भी थोड़े समय में अच्छी जानकारी मिल सकती है। ताराघर गोल छत के होते हैं। दर्शकों को लगता है, जैसे अचानक अंधेरी रात में वे तारों भरे आकाश को देख रहे हैं। कई बार तो वहां बैठे-बैठे लगता है कि सचमुच रात हो गई है। लोग गहरी नींद में सो जाते हैं। झींगुरों की आवाजें इस बनावटी रात को और गहरा कर देती हैं। हमारे देश में तीन ताराघर हैं— दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता।

ताराघर को अंग्रेजी में 'प्लेनेटोरियम' कहते हैं। प्लेनेटोरियम एक ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा अंतरिक्ष की गतिविधियों को देखा जा सकता है। सबसे पहला ताराघर सन् १९१३ में पूर्वी जर्मनी में बनाया गया था। इसे वाल्टर नामक वैज्ञानिक ने बनाया था। इसमें बहुत से लैंस और प्रिज़्म लगे होते हैं। जो ताराघर के आकाश में सितारे बन चमकते हैं। आज दुनिया में बहुत-से ताराघर हैं। इनमें सबसे बड़ा मास्को में है।

—डा. सी. एल. गर्ग

उपहार

सिंहगढ़ के राजा शेरसिंह को शिकार खेलने का अत्यंत शौक था। एक बार वह शिकार खेलते-खेलते घने जंगल में पहुंच, अपने साथियों से बिछुड़ गए। चलते-चलते शेरसिंह की दृष्टि एक कुटिया पर पड़ी। 'इतने घने जंगल में कौन रहता होगा ?'—सोचते हुए उन्होंने कुटिया के दरवाजे पर दस्तक दी। आवाज सुनकर एक युवती बाहर आई।

वह बोले—"मैं सिंहगढ़ का राजा शेरसिंह हूं। बड़ी भूख लगी है। कुछ खाने को मिलेगा ?"

उस युवती ने राजा का स्वागत करते हुए कहा—"मेरी कुटिया में आपका स्वागत है। आप राजा न होकर साधारण मनुष्य भी होते, तो यहां आपका स्वागत होता। मेरे लिए सब मनुष्य बराबर हैं।" युवती की स्पष्ट बात से राजा बहुत प्रभावित हुए।

तब तक वह कुछ फल व एक बर्तन में पानी ले आई। राजा ने फल खाकर भूख मिटाई। तब वह बोली—"आप काफी थके हुए मालूम होते हैं। कुछ देर विश्राम कीजिए।"

शेरसिंह ने कहा—"नहीं बहन ! वहां राज्य में सभी मेरी चिंता कर रहे होंगे। मुझे अभी जाना होगा। लेकिन जाने से पहले मैं तुम्हें कोई उपहार देना चाहता हूं।"

"महाराज, मैं जंगल में रहती हूं। मीठे फल खाती हूं। पक्षियों का सुरीला गाना सुनती हूं। यदि आप कुछ देना ही चाहते हैं, तो वायदा कीजिए कि आप भविष्य में कभी भी किसी प्राणी का शिकार नहीं करेंगे। न ही किसी अन्य व्यक्ति को शिकार करने देंगे।"

शेरसिंह उस युवती के वन्य प्राणियों के प्रति अगाध प्रेम से बहुत प्रसन्न हुए। बोले—"बहन, बचपन से शिकार करना मेरा शौक है, लेकिन आज से मैं कभी किसी निरीह प्राणी का शिकार नहीं करूंगा। तुम सचमुच महान हो।"

—परेश सागरकर, धार

बया बना

मंथर एक जुलाहा था। कपड़े बहुत अच्छे बुनता था। राजा ने उसे अपना जुलाहा नियुक्त किया। मंथर रोज कपड़े बुनकर राजा को दे आता।

उसी प्रदेश में एक लड़की मंजरी रहती थी। वह अनेक कलाओं में पारंगत थी। उसने बुनने की कला मंथर से सीखी थी। धीरे-धीरे उसके कपड़े मंथर से भी अच्छे माने जाने लगे।

मंथर एक दिन राजा के कपड़े देने गया, तो रानी से रहा न गया। उन्होंने मंथर से कहा—"मंजरी तुमसे अच्छे कपड़े बुनती है। उसके कपड़े महीन होते हैं। बुनाई में अनेक रंग व चित्र होते हैं। तुम भी उससे क्यों नहीं सीख लेते ?"

मंथर क्या कहता ? मंथर को मंजरी की सफलता पर खुश होना चाहिए था। पर स्पर्धा ने उसे अंधा कर दिया। कोई उससे अच्छा बुनने वाला भी हो सकता है, यह उसने कभी सोचा भी न था।

वह सीधा मंजरी के पास पहुंचा। मंजरी ने मंथर को प्रणाम किया। बैठने को आसन दिया। मंथर बैठ तो गया। लेकिन उसने मंजरी की किसी बात का जवाब न दिया। मंजरी ने कहा—"क्या मुझसे कोई अपराध हुआ है आचार्य ?"

मंजरी के बहुत पूछने पर मंथर बोला—"क्या इसी दिन के लिए मैंने तुझे शिक्षा दी थी ? कल तक लोग मेरा नाम आदर से लेते थे। आज सब कुछ खत्म हो गया।"—कहते हुए वह बाहर निकल गया।

उस दिन के बाद मंथर को किसी ने न देखा। न जाने वह कहां चला गया था। कहते हैं, अगले जन्म में मंथर बया पक्षी बना। बया बनकर भी मंथर ने बुनना नहीं छोड़ा। वह पहले जितने अच्छे कपड़े बुनता था, अब उतना अच्छा अपना घोंसला बुनता है।

—रघुनंदन शर्मा, भवानी मंडी (राज.)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं—ब्रजेशकुमार वर्मा, इटावा; श्वेता राय, कुल्लू; मधुसूदन भारद्वाज, गांधीनगर, मेरठ।

अनाज की बोरी

—चैतन्य

किसी गांव में गणेश्वर और हरिहर नाम के दो किसान रहते थे। वे दोनों काफी मेहनती थे। इसीलिए खेतों में अच्छी पैदावार होती थी। कुछ अनाज बेच देने के बाद भी परिवार का भरण-पोषण आराम से हो जाता था। इसके बाद भी वे अगली बोआई के लिए अनाज बचाकर रख लेते थे।

गणेश्वर के खेत ऊंची जगह में थे। इसलिए खेतों की पैदावार के लिए उसे बारिश पर निर्भर रहना पड़ता था। जबकि हरिहर के खेत समतल जगह में थे। हल्की बर्षा से भी खेतों में अच्छी पैदावार हो जाती थी।

एक बार की बात है। बहुत कम बारिश हुई। गणेश्वर की खेती पानी के बिना बर्बाद हो गई। अगली बोआई के लिए भी अनाज नहीं बच पाया। गणेश्वर और उसकी पत्नी चिंतित हो उठे। परिवार के खाने के लिए पूरा अनाज नहीं था। पेट भरने के लिए पति-पत्नी मेहनत-मजूरी करने लगे।

कुछ दिन बीते। खेतों की अगली बोआई का समय जैसे-जैसे निकट पहुंचता गया, गणेश्वर चिंता में डूबा रहने लगा। आखिर खेती तो करनी ही होगी। दूसरों की चाकरी से कैसे काम चलता।

एक दिन गणेश्वर की पत्नी पूछ बैठी—"इस बार खेतों में बोआई का अनाज कहां से आएगा?"

गणेश्वर बोला—"इसी बात की चिंता मुझे भी है। पहले खेतों को जोत लूं। फिर कुछ न कुछ करूंगा।"

अगले रोज गणेश्वर हल-बैल लेकर खेत की तरफ निकल गया। इस तरह कई दिन कड़ी मेहनत कर, उसने सारे खेत जोत डाले। अब बोआई के एक दिन पहले गणेश्वर हरिहर के पास अनाज मांगने गया। गणेश्वर की बुरी हालत से हरिहर परिचित था। गणेश्वर ने आप बीती कह सुनाई और खेतों की बोआई के लिए अनाज मांगा।

हरिहर के मन में शंका थी, अगर पिछले वर्ष की भांति ज्यादा बर्षा नहीं हुई, तो गणेश्वर अनाज वापस कैसे करेगा?



यही सोचकर हरिहर ने साफ-साफ इंकार कर दिया। बोला—"गणेश्वर भाई, तुम्हारी मजबूरी मैं खूब जानता हूं, पर बोआई के लिए अनाज मेरे पास नहीं है। किसी और से ले आओ।"

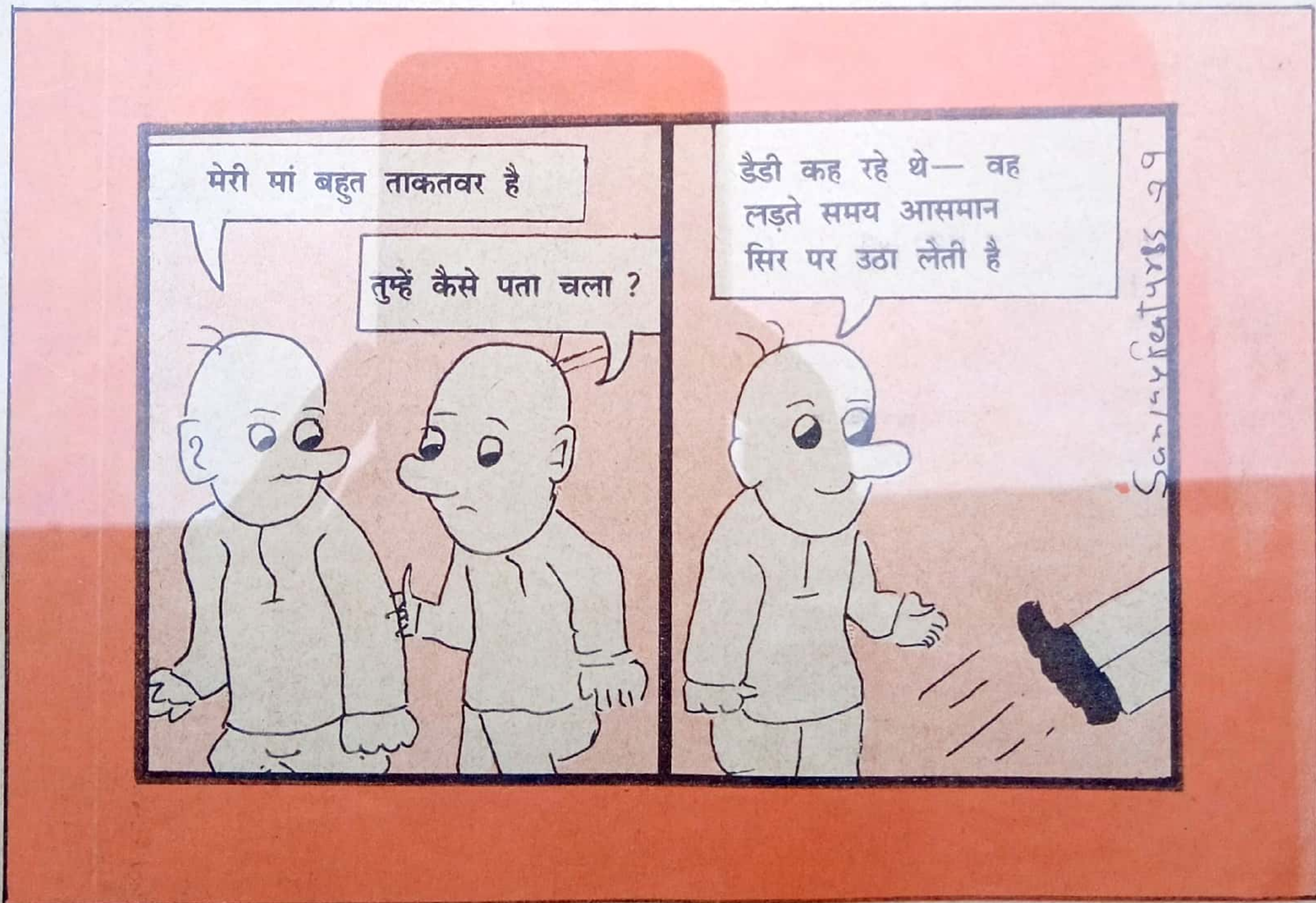
गणेश्वर चुप रहा। बिना कुछ कहे, घर लौट आया। किसी तरह उसने बोआई के अनाज का जुगाड़ किया। और समय रहते खेतों की बोआई कर दी।

संयोग से उस वर्ष जमकर बरसा हुई। ऐसी बारिश कि ऊंची जगह के खेतों के लिए ठीक थी, मगर समतल भूमि वाले खेतों में पानी भर गया, जिससे फसल को भारी नुकसान हुआ। तेज बारिश के कारण हरिहर की फसल भी बर्बाद हो गई। उसे खेती से एक दाना भी नहीं मिला। लेकिन इस बार गणेश्वर के खेतों में अच्छी फसल हुई। फसल न होने से हरिहर को कठिनाई का सामना करना पड़ा। अब वह और उसकी पत्नी मजदूरी करके अपने परिवार को पालने लगे।

अगली बोआई का समय आया, तो हरिहर ने अपने खेतों की जुताई कर दी, मगर बोआई के लिए अनाज की समस्या आ खड़ी हुई। उसने बोआई के अनाज के लिए इधर-उधर हाथ पसारे, पर कहीं से भी अनाज मिलने की उम्मीद दिखाई नहीं पड़ी।

लाचार होकर हरिहर गणेश्वर के पास पहुंचा। हरिहर ने गणेश्वर से अनाज मांगा। बोआई की बात छेड़ते ही गणेश्वर और उसकी पत्नी ने अनाज से भरी बोरी उसे दे दी। कहा—"लो, अब अच्छी तरह खेतों की बोआई करो।"

पिछली बात यादकर लज्जा से हरिहर का सिर झुक गया। वह कुछ कहना चाहता था, तभी गणेश्वर बोला— "हम मित्र भी हैं और पड़ोसी भी। भला, हम एक-दूसरे के काम नहीं आएंगे, तो कौन आएगा? मैं जानता हूं, तुम क्या सोच रहे हो। भूल जाओ उस बात को।" —कहते हुए गणेश्वर ने बोरी उठवाकर उसके सिर पर रखवा दी। सिर पर बोरी का बोझ होते हुए भी हरिहर का मन हलका हो गया था। ●



पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ______________ आयु ______

पूरा पता ______________________

____

रुचि ______________________

पुस्तकें पढ़ने व लेखन में रुचि :

१. संदीप मित्तल, १६ वर्ष, ४४७/४ नंदा नगर, इंदौर (म. प्र.); २. दिलीपकुमार अग्रवाल, १७, कक्षा ११-अ, डी. बी. इंटर कालेज, मोंठ, झांसी (उ. प्र.); ३. बाबर अकील खां, १६, सराय पुखता, अंदरराज, रामपुर (उ. प्र.); ४. राजीवरंजन कुमर, १३, द्वारा विंदेश्वरीकुमार, कनिष्ठ अभियंता, कमला नहर प्रमंडल, जयनगर, मधुबनी; ५. जितेंद्र रितौरिया, १६, ११८ रवीन्द्र नगर, इंदौर (म. प्र.); ६. अनिलकुमार, १५, द्वारा अमरनाथ, म. नं. २५५, गोपाल नगर, जलंधर; ७. जगतसिंह, १६, द्वारा राधेसिंह, नैनी मिल, देवी मंदिर, स्टेशन रोड, हलद्वानी (उ. प्र.); ८. सुनील दत्त, १७, द्वारा पुत्तूलाल राठौर, समीप धनपतिया नीम, मु. बाबूजई, शाहजहांपुर (उ. प्र.); ९. रामजी अग्रवाल, १६, बीसाकोपी टी. ई. दुमदुमा (असम); १०. शशिभूषण प्रसाद, १२, द्वारा देवलाल प्रसाद, अम्बिके आटा चक्की के पास, रोड नं. १३, राजेन्द्र नगर, पटना; ११. राजकुमार, १४, ७५३ आर. पी. एफ. बैरक, लोको कालोनी, खगोल, पटना; १२. गौतम बोथरा, १५, बोरीदास चिमनीराम जी, जूना के राडू मार्ग, बाड़मेर; १३. शैलेशकुमार, १६, डा. शंभूशरण के सामने, न्यू जक्कनपुर, पटना; १४. जयंतकुमार दत्त, १६, द्वारा नन्हू महतो, घघा घाट, पो. महेन्द्रू, पटना; १५. प्रदीपकुमार पाटीदार, १६, श्रीराम मंदिर के पीछे, निसरपुर, धार (म. प्र.); १६. सुरेंद्रकुमार शर्मा, १७, मकान नं. ३०९, एस. एल. यू. सलापड़ कालोनी, जि. मंडी (हि. प्र); १७. जितेन्द्रकुमार गर्ग, १६, जैन बोर्डिंग के सामने, केशवपुरा, हिंडौन सिटी (राज.); १८. सोनूकुमार, १२, द्वारा ललितकिशोर प्रसाद, पुरानी धर्मशाला, मुजफ्फरपुर; १९. जयकुमार बख्ताणी, १७, कैलाश पान भंडार, पोस्ट आफिस के पास, बाड़मेर (राज.); २०. गोपालचंद्र सक्सेना, १७, १५ कानपुर रोड, इलाहाबाद।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. सत्यनारायण कासट, १७ वर्ष, मो. +पो— ईसागढ़, गुना (म. प्र.); २. सुखबीरसिंह तोमर राजपूत, १५, द्वारा शेरसिंह राजपूत, ग्रा. ढाकी, डा. सहसपुर, जि. देहरादून; ३. विनयकुमार शर्मा, १२, एफ-१/९० सुंदरनगरी, नंद नगरी एक्सटेंशन, दिल्ली; ४. नीरज तायल, १४, द्वारा चुन्नीलाल तायल, ककराला, बिजलीघर नं. १ के पीछे, खुरजा (उ. प्र.); ५. युगलकिशोर निगम, १७, खरैया पोखरा, बसारतपुर, गोरखपुर; ६. योगेश्वर सिंह 'सोनू', १४, मकान नं. ८, कूचा काकाराम, पक्का डंगा, जम्मू (तवी); ७. अजय अग्रवाल, १७, द्वारा रामस्वरूप नंदकिशोर, माकूम रोड, सुखान पोखरी, तिनसुकिया (असम); ८. प्रेमचंद यादव, १६, द्वारा रूपचंद यादव, ग्रा. दाऊदपुर, पो. सेनापुर, जौनपुर; ९. रविकांत मूंदड़ा, १४, विमल जी मूंदड़ा, डाकीदड़ा, कृष्णकुंज, नांवा, जि. नागौर; १०. सुनील त्रिवेदी, १७, पावटा बी. रोड, जालम निवास के पास, कन्हैया सदन, जोधपुर; ११. अजयप्रकाश, १२, नेचुआ, जलालपुर (बि.); १२. राकेश उर्फ राजस्थानी, १६, बद्रीनाथ मार्ग, कोटद्वार जि. गढ़वाल; १३. अरविंद १०, द्वारा विजयशंकर, पश्चिम रामसागर रोड, गया; १४. हरजिंदर सिंह रीन, १५, न्यू पावर हाउस के निकट, रामगढ़, जि. अलवर (राज.); ●

नई पुस्तकें

खेल-खिलाड़ी विश्वकोश— योगराज थानी; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; पृष्ठ ३८४; सजिल्द मूल्य : अस्सी रुपए।

खेलों के प्रति दिनों-दिन दिलचस्पी बढ़ रही है। किसी को कोई खेल पसंद है, किसी को कोई। सभी खेलों के बारे में एक ही जगह खेलों की जानकारी पाने के लिए, यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। खेलों के साथ ही, भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं तथा खिलाड़ियों के बारे में रोचक विवरण भी दिया गया है।

आम तौर पर ऐसे विश्वकोश किसी न किसी अंग्रेजी पुस्तक का सहारा लेकर तैयार होते हैं। उनमें विदेश के खिलाड़ियों पर ही अधिक सामग्री होती है। यह विश्वकोश इस दोष से मुक्त है। खेल समीक्षक थानी जी ने अनेक भारतीय खिलाड़ियों पर काफी सामग्री दी है। हिंदी में यह अपने ढंग का अनूठा प्रयास है। पुस्तक पढ़ने और सहेज कर रखने योग्य है।

सफदर हाशमी की पांच पुस्तकें—

१. पेड़
२. बाग की सैर
३. गड़बड़ घोटाला
४. बांसुरी वाला
५. दुनिया सबकी

मूल्य : दस रुपए (प्रत्येक); दुनिया सबकी का मूल्य पंद्रह रुपए। प्रकाशक : सहमत, ८ विट्ठल भाई पटेल हाउस, रफी मार्ग, नई दिल्ली-१

पेड़, बाग की सैर, गड़बड़ घोटाला और बांसुरी वाला— इन चार पुस्तकों में एक-एक कविता है। अनेक रंगीन और सुंदर चित्र हैं। बढ़िया कागज पर छपाई भी अच्छी है। बच्चों को ये पुस्तकें खूब पसंद आएंगी।

इनमें सबसे बढ़िया पुस्तक है— 'पेड़'। पेड़ अपनी कहानी कहता है। बताता है कि वह हम सबका कितना अच्छा दोस्त है। मिकी पटेल के बनाए चित्र इस पुस्तक की जान हैं।

'दुनिया सबकी' में इक्कीस कविताएं हैं। कई कविताएं बड़ी मजेदार हैं, पर कई मामूली। आजादी कविता की ये पंक्तियां बालक की बात कह देती हैं—

हम से कोई पूछे : "बच्चो
आजादी क्या होती है?"
हम कह देंगे, "उस दिन सबकी
पूरी छुट्टी होती है।"

सेर को सवा सेर— लेखिका : डा. तान्या गुप्ता; प्रकाशन : पाटोला प्रकाशक, २०३ आशादीप, ९ हेली रोड, नई दिल्ली-१; मूल्य सात रुपए

पुस्तक में आठ कहानियां हैं। ये कहानियां भारतीय बच्चों के लिए मूल इतालवी से रूपांतर की गई हैं। मेरघन और उसके साथी, सबसे लम्बा सफर, तीन ठग, लालची नौकर, चोर कौन, लालसा, गूंज, सेर को सवा सेर— इनमें कुछ कहानियां ऐसी हैं, जो इटली का रंग लिए हुए हैं। कई कहानियां भारतीय लोक-कथाओं जैसी हैं। पर सभी कथाएं रोचक हैं।

पुस्तक के चित्र बनाए हैं डा. जान्री चेजारात्तो ने। चित्र अलग तरह के हैं और अच्छे हैं।

अकेला सेनानी— लेखिका— शारदा; प्रकाशक : पराग प्रकाशन, नई दिल्ली-३२; मूल्य दस रुपए; पृष्ठ संख्या : ५२।

प्रस्तुत पुस्तक में बच्चों की रुचि की ११ कहानियां दी गई हैं। इन कहानियां में कुछ न कुछ सीख है। कई कहानियों के कथानक सुपरिचित लोक कथाओं से मिलते हैं। लेखिका ने स्वयं स्वीकारा है कि ये सभी कथाएं पूर्व प्रकाशित हैं। कथाओं की रोचक शैली बच्चों को पसंद आएगी। हरिपाल त्यागी के चित्र कहानियों के कथानक को समझने में सहायक हैं और इनसे पुस्तक आकर्षक भी बन पाई है। ●

नंदन

ज्ञान पहेली : २४८

परिणाम



पिछली बार की अपेक्षा इस बार सर्वशुद्ध हल कम आए। सर्वशुद्ध हल भेजने वाले प्रतियोगियों में पुरस्कार की राशि बराबर-बराबर बांटी जा रही है।

सर्वशुद्ध हल : तेरह : प्रत्येक को सतहत्तर रुपए।

१. संतोषकुमार बिल्लोरे, भोपाल; २. वसीम हसन, अमरोहा; ३. जयभगवान शर्मा, गोहाना (हरि.); ४. प्रभाकर तिवारी, जबलपुर; ५. नरेशकुमार राखेचा, पाली, मारवाड़; ६. शालीन भारद्वाज, हरिद्वार; ७. रमित राज, मेरठ; ८. प्रसन्न राय, रायपुर; ९. कु. अंजु मिश्रा रायपुर; १०. सुनीलकुमार साहू, नरसिंहपुर (म. प्र.); ११. रेशमा खान, उज्जैन; १२. स्वतंत्रकुमार मखनवाल, ऋषिकेश; १३. संजयकुमार सिंगार, झाबुआ, (म. प्र.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं

(उत्तर)

१. टेबिल पर रखे टोप के बीच की पट्टी काली है।

२ उसके पास खड़े आदमी के हाथ में छड़ी है।

३. उसके कोट के कफ पर सिर्फ एक बटन है।

४. छत पर लटके लैम्प से बल्ब गायब है।

५. जमीन पर बैठे आदमी के टोप का सिरा अधिक नुकीला है।

६. उसके पीछे खड़े आदमी के मूंछें हैं।

७. टाइयों के ऊपर बने शेल्फ में एक और बक्स रखा है।

८. वहां खड़े आदमी का चेहरा दूसरी ओर है।

९. उसके पास वाली टाई पर बिंदुओं की जगह लकीरें हैं।

१०. शीशा बड़ा है।

शीर्षक बताइए : परिणाम

बहुत मजेदार शीर्षक भेजे इस बार भी पाठकों ने। अगस्त अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

देखो मेरी शाही सवारी,
इस पर घूमो दुनिया सारी।

—गौरव नागर, डी-१३८ सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३।

नन्हे-नन्हे मेरे पांव,
कैसे पहुंचूं अपने गांव।

—रंजीता, द्वारा वी.पी. सिंह, कार्यालय मुख्य डाक महाध्यक्ष (विलगन विभाग), लखनऊ।

हटना भाई,
गाड़ी आई।

—रेवा माहेश्वरी, वार्ड नं. ११, मकान नं. ४१, पारली वंड, कठुआ (जम्मू व काश्मीर)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए— भारती कालड़ा, अटेली मंडी (हरि.); जिवेंद्र गौतम, कोटा; संजय पुरोहित, बम्बई; ऊषा सिंह, कलकत्ता; श्वेता अग्रवाल, गुवाहाटी; रत्नेशपति त्रिपाठी, जमशेदपुर; स्वास्तिक डे, छैलबासा (बि.); पुष्पा वर्मा, महिदपुर (म.प्र.); रंजनाकुमारी, चंडीगढ़।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner

नंदन · रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

